रांची
बुधवार
14.09.2022
आश्विन कृष्ण पक्ष 04
विक्रम संवत 2079

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

रश्मि प्रवाह

जो गुजर गया उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए, ना ही भविष्य के बारे में चिंतित होना चाहिए। समझदार लोग केवल वर्तमान में ही जीते हैं।

www.rastriyanaveenmail.com

रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित

वर्ष-23 अंक-222 पृष्ठ-12, मूल्य ₹ 1.50

न्यूज गैलरी

किडनी का इलाज कराने सिंगापुर जायेंगे लालू यादव, कोर्ट से मांगा पासपोर्ट

रांची। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने सीबीआई कोर्ट से पासपोर्ट रिलीज करने की अनुमति मांगी है। अधिवक्ता प्रभात कुमार ने बताया कि पासपोर्ट रिलीज करने के लिए सीबीआई के विशेष न्यायाधीश दिनेश राय की अदालत में याचिका दाखिल की गयी है। उन्होंने बताया कि मंगलवार को सीबीआई के विशेष अदालत में सुनवाई के बाद लालू की याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए समय देने का आग्रह किया गया। सीबीआई के आग्रह को स्वीकार करते हुए अदालत ने अगली सुनवाई के लिए 16 सितंबर की तारीख निर्धारित की है। अधिवक्ता ने बताया कि लालू को किडनी का इलाज के लिए सिंगापुर जाना है। 24 सितंबर को सिंगापुर के एक अस्पताल में उन्होंने अपॉइंटमेंट लिया है लेकिन कानूनी अड़चनों के कारण वह बिना अदालत की इजाजत के विदेश नहीं जा सकते। उल्लेखनीय है कि इससे पहले 31 अगस्त को चारा घोटाला के अलग-अलग मामलों में सजायाफ्ता लालू की ओर से उनका पासपोर्ट सीबीआई कोर्ट में रिनुअल कराकर जमा कर दिया गया था। लालू चारा घोटाला के पांच मामलों में सजायाफ्ता हैं और वर्तमान में सभी में जमानत पर है।

रिश्वत लेते राजस्व कर्मचारी और सहयोगी को किया गया गिरफ्तार

डालटनगंज। एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने मंगलवार को पलामू जिले के चैनपुर प्रखंड के राजस्व कर्मचारी और उसके सहयोगी को 10 हजार रिश्वत लेते गिरफ्तार कर लिया। ब्यूरो सूत्रों ने मंगलवार को यहां बताया कि कर्मचारी और उसके सहयोगी को गिरफ्तार कर मेदिनीनगर कार्यालय लाया गया, जहां से दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। राजस्व कर्मचारी की पहचान कन्हाई राम और उसके सहयोगी की पहचान शशि भूषण चौरसिया के रूप में हुई है। दोनों सोकरा निवासी निरंजन सिंह से रिश्वत ले रहे थे।

झारखंड खेल नीति 2022 का लोकार्पण, सीएम ने कहा-

सीमित संसाधन में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हमारे खिलाड़ी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मंगलवार को झारखंड खेल नीति-2022 का लोकार्पण किया। नई खेल नीति 5 वर्ष के लिए लागू होगी। इस मौके पर सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि आने वाले समय में स्कूलों में खेल शिक्षकों की बहाली होगी, इसमें खिलाड़ियों को प्राथमिकता दी जाएगी।

सीमित संसाधनों में तैयारी कर नंबर-1 बनते हैं हमारे खिलाड़ी : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि आप सभी ने देखा है कि पिछले दिनों देश के दूसरे राज्यों के खिलाड़ियों ने झारखंड में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है तथा यहां के प्रशिक्षकों द्वारा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण भी लेने का काम किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड के बच्चों ने कई खेलों में राज्य ही नहीं बल्कि देश का प्रतिनिधित्व किया है तथा पदक जीतकर विश्व में राज्य एवं देश का नाम रोशन किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड के खिलाड़ी जो पूरी दुनिया में खेल के क्षेत्र में अपना जौहर दिखा रहे हैं, हमारे वे बच्चे बहुत ही सीमित संसाधनों में अपनी तैयारी करते हैं। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि हमारे बच्चे सीमित संसाधनों से निकलकर देश में अपना स्थान पहले पायदान पर रखते हैं और देश में नंबर वन खिलाड़ी के रूप में उभरते हैं। यहां के खिलाड़ियों की इसी जज्बा को और आगे ले जाने के लिए हमारी सरकार ने राज्य में नई खेल नीति लाने का काम किया है।

सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में मिलेगा आरक्षण : सीएम ने कहा कि नई खेल नीति में खिलाड़ियों ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

13 खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

इस अवसर पर सीएम हेमन्त सोरेन और खेल मंत्री हफिजुल हसन द्वारा राज्य के 13 खिलाड़ियों को सहायता राशि देकर सम्मानित किया गया। सहायता राशि प्राप्त करने वाले हॉकी खिलाड़ियों में पंकज कुमार रजक, संगीता कुमारी, सलीमा टेटे, निक्की प्रधान, आशा किरण बारला एवं ब्यूटी डुंगडुंग तथा एथलेटिक्स खिलाड़ी सुप्रिती कच्छप, फ्लोरेंस बारला, विशाखा सिंह, रिया कुमारी, विधि रावल, आकाश यादव एवं हेमन्त कुमार नाम शामिल थे। हॉकी खिलाड़ी पंकज कुमार रजक, संगीता कुमारी, सलीमा टेटे, निक्की प्रधान, आशा किरण बारला, ब्यूटी डुंगडुंग एवं एथलेटिक्स खिलाड़ी सुप्रिती कच्छप अपरिहार्य कारण से उपस्थित नहीं हो सके, इन सभी की अनुपस्थिति में इनके परिजनों को सहायता राशि देकर सम्मानित किया गया।

ठेकेदारों व कारोबारियों से रंगदारी वसूलने के लिए बम जमा कर रहे पांच अपराधी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची पुलिस ने एक बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए राजधानी से पांच शातिर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधी कोलकाता, धनबाद बोकारो और रांची के ठेकेदार और बड़े कारोबारियों से रंगदारी वसूलते थे। गिरफ्तार सभी अपराधी कुख्यात सनी सिंह, बिट्टू नेपाली और बिट्टू सिंह के कहने पर आपराधिक वारदातों को अंजाम देते थे। इस गिरोह के द्वारा देसी बम बना कर रेलवे साइडिंग और कंस्ट्रक्शन कंपनियों के साइट पर रंगदारी मांगने के लिए हमला किया जाता था।

बम बरमाद होने के बाद हुआ गिरोह का खुलासा

पुलिस की गिरफ्त से फरार चल रहे कुख्यात अपराधी सनी सिंह बिट्टू नेपाली और बिट्टू सिंह का गिरोह झारखंड से लेकर पश्चिम बंगाल तक ठेकेदारों और कंस्ट्रक्शन कंपनियों के मालिकों से रंगदारी वसूल रहा है। रंगदारी नहीं देने पर यह गिरोह कंस्ट्रक्शन कंपनियों के साइट पर बमों से हमला करता है। दरअसल सोमवार को रांची के सुखदेव नगर थाना क्षेत्र से अपराधी पिंटू वर्मा के घर से एक जिंदा बम बरामद किया गया था। मौके से पिंटू वर्मा को भी पुलिस ने दबोच लिया था। पूछताछ में पुलिस को चौंकाने वाली जानकारियां मिली। पिंटू वर्मा ने पूछताछ में पुलिस के सामने या खुलासा किया कि वे लोग कंस्ट्रक्शन साइट और रेलवे साइडिंग पर हमला करने के लिए बम जमा कर रहे थे। कुख्यात अपराधी सनी सिंह बिट्टू नेपाली और बिट्टू सिंह के कहने पर वे लोग कंस्ट्रक्शन साइट पर हमला करते थे।

पिंटू के निशानदेही पर अन्य हुए गिरफ्तार

पूछताछ करने पर रांची में सक्रिय पिंटू वर्मा ने गिरोह के दूसरे सदस्यों के बारे में जानकारी दी जिसके बाद पुलिस ने छापेमारी कर बम बनाने वाले तबारक अंसारी, और गिरोह के प्रमुख सदस्य लाल देव महतो, रोहित वर्मा और अमन सिंह को छापेमारी कर गिरफ्तार किया। लालदेव महतो के पास से पुलिस ने एक देसी कट्टा भी बरामद किया है।

बोकारो में किया था बम हमला

गिरफ्तार अपराधियों ने यह भी खुलासा किया है कि इसी साल 29 अगस्त को सनी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

लातेहार के बूढ़ा पहाड़ पर पुलिस व नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़

▸▸पुलिस को भारी पड़ता देख जंगल की ओर निकल गये नक्सली

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। बूढ़ा पहाड़ पर ऑक्टोपस अभियान के दौरान नावाटोली जंगल में मंगलवार को पुलिस व नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ सुबह दस से ग्यारह बजे के बीच हुई है। बूढ़ा पहाड़ पर हुए मुठभेड़ की गोली की आवाज निकटवर्ती गांव तिसिया व कुजरूम तक सुनाई पड़ी। पुलिस को भारी पड़ता देख नक्सली जंगल की ओर निकल गए। मुठभेड़ के बाद पुलिस ने सर्च अभियान चलाया। पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए बताया कि बूढ़ा पहाड़ को खाली कराने के लिए माओवादियों के खिलाफ ऑक्टोपस अभियान चलाया जा रहा है। माओवादियों के खिलाफ अभियान जारी रहेगा। झारखंड-छत्तीसगढ़ सीमा पर स्थित बूढ़ा पहाड़ का क्षेत्र 55 वर्ग किमी में फैला हुआ है। बूढ़ा पहाड़ झारखंड के लातेहार व गढ़वा, छत्तीसगढ़ के बलरामपुर से सटा है। जो माओवादियों का सुरक्षित ठिकाना रहा है। पुलिस अधीक्षक ने आगे बतायाकि बूढ़ा पहाड़ को माओवादियों से मुक्त कराना सुरक्षा बलों के लिए बड़ी चुनौती है। वर्ष 2018 के बाद पुलिस ने माओवादियों के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा अभियान प्रारंभ किया है। इस अभियान के दौरान पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से तिसिया गांव के समीप बूढ़ा नदी पर पुल का निर्माण भी किया गया है। पुल के बनने से पुलिस को बूढ़ा पहाड तक आवागमन में काफी सहुलियत होगी।

फर्जी पैन कार्ड और आधार कार्ड बनाने वाले गिरोह के दो सदस्य गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में आम लोगों के डाटा को चुराकर फर्जी पैन कार्ड और आधार कार्ड बनाने का धंधा करने वाले गिरोह के दो सदस्यों को रांची पुलिस ने गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार अपराधियों के पास से पुलिस ने कई बैंकों के पासबुक ,दर्जन भर आधार कार्ड और पैन कार्ड बरामद किया है। **क्या है पूरा मामला :** अगर आप सोच रहे है आपके पर्स या फिर आपके लॉकर में रखा हुआ आपका आधार - पैन कार्ड सुरक्षित है तो आप गलत सोच रहे। आपके आधार और पैन कार्ड का डेटा चोरी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

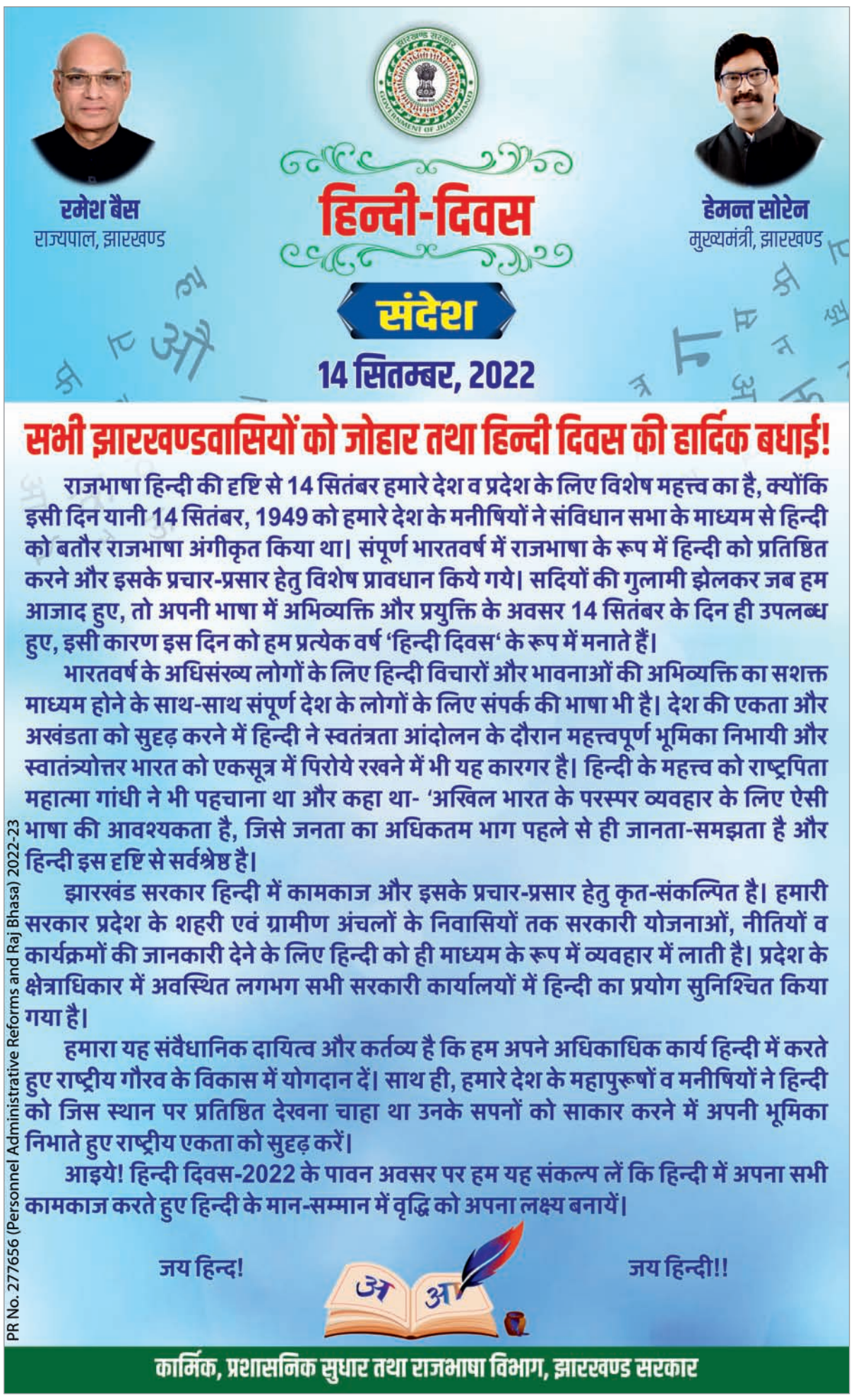

ज्यादा तनाव, मानसिक विचलन और आलोचना के शिकार होते हैं नेताओं के बच्चे

-आरएनएम

नयी दिल्ली। ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ लिसेस्टर में एक शोध हुआ राज नेताओं के निजी जीवन पर। जिसमें पता चला कि नेताओं के बच्चे स्कूल में दूसरे बच्चों की तुलना में ज्यादा आलोचना के शिकार होते हैं। यदि उन बच्चों के राजनेता मां या पिता किसी कारण से सुर्खियों में हों या उनका नाम किसी घोटाले या अन्य विवाद से जुड़ा हो तब तो बच्चों को बहुत ज्यादा आलोचना व टिप्पणी का सामना करना पड़ता है। यही नहीं, ऐसे बच्चों को किशोरावस्था को अपने साथियों से ज्यादा विरासत में मिली प्रसिद्धि का दबाव होता है। ऐसे में वे वही चीज अपनी मर्जी या स्वतंत्रता से नहीं कर सकते, जो दूसरे बच्चे या लोग अपने मन से कर सकते हैं। उनकी गलतियों पर उनकी आलोचना भी अपने साथियों से कहीं ज्यादा होती है, क्योंकि ज्यादातर लोगों की नजर उन पर होती है। इस कारण राजनेताओं के बच्चों में मानसिक विकार होने लगता है।

इस बारे में शोधकर्ता प्रोफेसर एलिजाबेथ हुरेन का कहना है कि ब्रिटेन की प्रधानमंत्री लिज ट्रस ने तो अपने बच्चों को लोगों की नजरों से दूर रखने के लिए अपनी दो बेटियों, 16 साल की फ्रांसिस और 13 साल की लिबर्टी को 10 डाउनिंग स्ट्रीट के सामने फोटो खिंचवाने से मना कर दिया है। क्योंकि बच्चों के सुर्खियों में आने से उनमें मानसिक परेशानी शुरू हो सकती है। सबसे बड़ी परेशानी यह है कि राजनेताओं के बच्चों को ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

किशोरों को वयस्क कैदियों के साथ जेलों में बंद करना व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन

नयी दिल्ली (एजेंसी)। उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि किशोरों को वयस्क कैदियों के साथ जेलों में बंद करना उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित करना है। न्यायमूर्ति दिनेश माहेश्वरी और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला की पीठ ने उत्तर प्रदेश के विनोद कटारा की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि एक बार जब कोई बच्चा वयस्क आपराधिक न्याय प्रणाली के जाल में फंस जाता है तो उसके लिए इससे बाहर निकलना मुश्किल होता है। पीठ ने बच्चों के अधिकारों और संबंधित कर्तव्यों के बारे में जागरूकता की कमी का उल्लेख करते हुए कहा कि कड़वी सच्चाई यह है कि कानूनी सहायता कार्यक्रम भी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

टेलिफोन कंपनियों को 28 के बजाय 30 दिन का प्रीपेड प्लान लाना होगा : ट्राई

अभी 28 दिन से एक साल में एक माह ज्यादा, कुल 13 माह का चार्ज कर रही हैं

-आरएनएम

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार से सेलफोन उपभोक्ता कई वर्ष से टेलिफोन कंपनियों की मनमानी, ग्राहकों को तरह - तरह से लूटने के तरीके ईजाद करने पर रोक लगाने की गुहार कर रहे हैं। पर अंबानी, वोडाफोन व अन्य कंपनियों को शह दे रही सरकार ग्राहकों व जनता की गुहार पर ध्यान ही नहीं दे रही। आजिज आकर कुछ उपभोक्ता संगठनों ने टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) व उसके आका सरकार के विरुद्ध न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। ऐसे में फंसता देख ट्राई ने सभी टेलीकॉम कंपनियों को मोबाइल रिचार्ज की वैलिडिटी 28 दिन के बजाय 30 दिन देने का निर्देश दिया है।

यह भी निर्देश दिया गया है कि इसके साथ ही टेलीकॉम कंपनी को अपने प्लान में अब एक स्पेशल वाउचर, एक कॉम्बो वाउचर पूरे महीने की वैलिडिटी के साथ लाना ही होगा। वैसे तो ट्राई ने सात माह पहले भी यह निर्देश जारी किए थे, लेकिन टेलीकॉम कंपनियों ने साहब मेहरबान तो हम पहलवान की तर्ज पर इसका पालन नहीं किया था। इसलिए ट्राई ने दोबारा सभी टेलीकॉम कंपनियों को यह निर्देश दिए हैं। अब देखिए केन्द्रीय हुक्मरान के खास सेठ अंबानी की कंपनी व अन्य कंपनियां ट्राई के इस आदेश का भी पालन करती हैं या नहीं। यदि इसका भी पालन नहीं करती हैं, तो ट्राई कुछ करता है या नहीं? या फिर एक और निर्देश देकर अपने होने की खाना पूर्ति करता रहेगा। मालूम हो कि टेलीकॉम कंपनियों के मौजूदा प्लान में 28 दिन की वैलिडिटी होती है, जिसकी ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

ट्राई ने निर्देश का पालन करने के लिए 60 दिन का दिया समय

ट्राई ने टेलीकॉम कंपनियों के लिए एक नोटिफिकेशन जारी किया है। इस नोटिफिकेशन के मुताबिक, सभी टेलिकॉम सर्विस प्रोवाइडर को 30 दिनों की वैलिडिटी वाले कम से कम एक प्लान वाउचर, एक स्पेशल टैरिफ वाउचर और एक कॉम्बो वाउचर लाना ही होगा। इसके अलावा कंपनियों को नोटिफिकेशन की तारीख से 60 दिनों के अंदर नियमों के आदेश का पालन करने को कहा गया है। ट्राई ने अप्रैल के महीने में इस संबंध में कंपनियों को निर्देश जारी किया था कि उन्हें प्लान वाउचर और प्लान वाउचर रिन्यूअल कैटेगरी में कम से कम एक ऐसा टैरिफ लाना होगा, जिसकी अवधि 30 दिन की होगी। टेलीकॉम कंपनियों के मौजूदा प्लान को लेकर ट्राई को लगातार उपभोक्ताओं की शिकायत मिल रही थीं। उपभोक्ताओं का आरोप था कि मौजूदा टेलीकॉम कंपनियों की टैरिफ की कीमत लगातार बढ़ रही है, लेकिन वैलिडिटी घट रही है। ऐसे में हर साल उन्हें एक्स्ट्रा रिचार्ज करवाना पड़ता है। यदि वैलिडिटी 2 दिन बढ़ा दी जाएगी तो उन्हें राहत मिलेगी।

न्यूज गैलरी

पोषण माह का आयोजन, कई कर्यक्रम आयोजित

सिल्ली। सिल्ली प्रखंड कार्यालय स्थित बाल विकास परियोजना परिसर में मंगलवार को पोषण माह का आयोजन किया गया। पोषण माह कार्यक्रम की शुरूआत पोषाहार प्रदर्शनी से की गई। मौके पर सेविकाओं एवं सहायिकाओं द्वारा लगायी पोषाहार प्रदर्शनी की सराहना की गयी। इसके अलावा सेविकाओं व सहायिकाओं ने पोषण रंगोली, पोषण मेहदी का भी आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान प्रखंड प्रमुख जितेंद बड़ाईक, उप प्रमुख आरती देवी, बीडीओ पावन आशीष लकडा एवं सीडीपीओ आभा चौधरी ने चार बच्चों को खीर खिलाकर अन्नप्रशन कराया। 11 गर्भवती महिलाओं की गोदभराई करायी गयी। सात दिव्यांगों के बीच दिव्यांग उपकरणों का वितरण किया गया। इस मौके पर महिला पर्यवेक्षिका किरण झा, कौशल्या कुमारी एवं नैना कुमारी, सभी पंचायतों के पंचायत समिति सदस्त एवं प्रखण्ड के अन्य विभागीय पदाधिकारी मौजूद थे।

अवैध बालू कारोबारीयों द्वारा सिल्ली नदी के समीप बालु का किया भंडारण

सिल्ली। प्रखंड क्षेत्र के लवादाग गांव के रास्ते सिल्ली नदी पुल के समीप सिल्ली नदी से बालू माफियाओं के द्वारा अवैध रूप से बालू का उठाव कर डंपिंग किया जा रहा है। प्रशासन के लाख कोशिश के बावजूद भी अवैध बालू का उठाव जारी है। सिल्ली के बालू माफियाओं के द्वारा हर एक दिन बालु डम्प किया जा रहा है। एवं रात के अंधेरे में इसे अन्यत्र भेजा जा रहा है। सरकार द्वारा बालू उठाव पर रोक लगाया गया है फिर भी बालू माफियाओं के द्वारा बालु उठाव का अवैध कारोबार जारी है। जिससे सरकार को हर रोज लाखों की राजस्व की क्षति हो रही है।

बिजली चोरी के खिलाफ विद्युत विभाग ने की छापेमारी

रातू। झारखंड ऊर्जा विकास निगम लिमिटेड, बिजली चोरी के खिलाफ निगम के आदेश पर विभाग की ओर से गठित टीम ने मंगलवार को इलाके के काठीटांड में बिजली चोरी के खिलाफ छापामारी अभियान चलाया गया । सहायक विद्युत अभियंता विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल प्रशांत कुमार के नेतृत्व में की गई छापेमारी में 3 लोग बिजली चोरी करते पकड़े गये। इन पर 1 लाख 98 हजार रुपये का जुमार्ना लगाया गया है। आरोपियों में आकाश कुमार गुप्ता, सुरेंद्र साहू व लवकुश कुमार सिंह शामिल है। सभी लोग काठीटांड के रहने वाले है। मामले को लेकर कनीय विधुत अभियंता विवेक ने रातू थाने में सभी आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।

रातू से दो एटीएम में चोरी की घटना को अंजाम देने में प्रयुक्त 407 ट्रक बरामद

रातू। रातू थाना क्षेत्र के काठीटांड स्थित दो एटीएम में चोरी की वारदात को अंजाम देने में प्रयुक्त 407 ट्रक जेएच01डब्लू-6307 को रातू पुलिस ने बरामद कर लिया है। ट्रक में एटीएम को काटने में प्रयुक्त गैस कटर, टूटे हुए कैश बॉक्स, गैस सिलेंडर के अलावा अन्य चीज लोड थी जिसे जब्त कर रातू पुलिस थाना ले आयी है। जानकारी के मुताबिक एटीएम में चोरी की घटना को अंजाम देने के लिए अपराधियो ने ओरमांझी थाना क्षेत्र से एक 407 ट्रक की चोरी की थी। इसके उपरांत गैस कटर, व गैस सिलेंडर लोड सोमवार की रात काठी टांड के दो एटीएम को गैस कटर से काटकर चोरी की घटना को अंजाम देकर फरार हो गये। सोमवार को पुलिस ने आईटीबीपी के पास से वाहन को लावारिश अवस्था मे बरामद किया है। वाहन मालिक ने ट्रक चोरी होने की प्राथमिकी ओरमांझी थाना में की थी।दोनो एटीएम में लगभग 33 लाख की चोरी हुई है। अपराधियो को पकड़ने के लिए गठित टीम छापेमारी कर रही है।

त्योहारों में गरीबों को राशन में दी जाएगी चीनी, की जा रही है तैयारी : रामेश्वर उरांव

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखंड सरकार आने वाले दुर्गा पूजा सहित अन्य पर्व-त्योहार को ध्यान में रखते हुए एक बार फिर जन वितरण प्रणाली के माध्यम से कार्डधारियों को चीनी उपलब्ध कराएगी। सरकार अगले माह राशन में चीनी उपलब्ध कराने की तैयारी कर रही है। इसके लिए खाद्य एवं आपूर्ति विभाग की ओर से तैयारी की जा रही है। खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि अभी तक कई महीनों से चीनी उपलब्ध नहीं हो पाने की वजह टेंडर प्रक्रिया पूरी नहीं हो पा रही थी। जिसके कारण अंत्योदय परिवार को चीनी उपलब्ध नहीं हो पाता था। विभाग ने इस दौरान कई बार प्रयास भी किया कि बाजार दर पर चीनी खरीद कर गरीबों को उपलब्ध कराई जाए। मगर अभी तक सफलता नहीं मिली है। इन सबके बीच विभाग के द्वारा एक बार

फिर यह प्रयास किया जा रहा है कि निविदा आमंत्रित कर अंत्योदय परिवार को चीनी उपलब्ध करायी जाए। मंत्री डॉ. रामेश्वर उरांव ने बताया कि झारखंड में अंत्योदय के तहत 9 लाख राशन कार्डधारी हैं। जिन्हें लगभग 10 महीने से चीनी नहीं मिल रहा है। इन लोगों को एक रुपया में एक किलो चीनी सरकार मुहैया कराती रही है। लेकिन विभागीय उदासीनता और टेंडर की जटिल प्रक्रिया की वजह से अब तक इसमें सफलता नहीं मिली है। विभागीय सूत्रों के अनुसार इससे पहले निकाली गई टेंडर में तय दर से अधिक रेट आने की वजह से चीनी आवंटन का काम नहीं दिया गया था। इन 10 महीनों में चीनी की आपूर्ति नहीं होने से लाखों परिवार बाजार दर पर चीनी खरीदने को मजबूर हैं। जो चीनी अंत्योदय परिवार के राशन कार्डधारियों को एक रुपये में मिलता था। उसके लिए उन्हें 40 से 45 रुपया खर्च करना पड़ता है। खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अनुसार राशन कार्डधारियों को एक रुपए किलो चीनी प्रतिमाह उपलब्ध कराने का प्रावधान है। अंत्योदय परिवार के लोगों को रियायती दर पर चीनी और नमक वितरित की जाती है ताकि उनका जीवन स्तर सुधर सके. सरकार ने एक बार फिर टेंडर प्रक्रिया शुरू की है और संभावना जताई जा रही है कि जल्द ही औपचारिकताएं पूरी कर गरीबों को दशहरा और दीपावली में चीनी उपलब्ध करा दिया जा सकता है।

टाटीसिलवे के होरहाप में 11 पशुओं के साथ दो गौ तस्कर धराएं, दो भागने में रहें सफल

नवीन मेल संवाददाता

नामकुम। टाटीसिल्वे थाना क्षेत्र के अंतर्गत होरहाप में मंगलवार को अवैध रूप से गौ तस्कर पिकअप वैन जेएच 01ईडी 6478 में लदे 11 पशु के साथ दो लोगों पकड़े गये और दो लोग मौके से फरार होने में सफल रहें। पकड़े गये लोगों में टाटीसिलवे निवासी राजू कच्छप (47), अनगड़ा निवासी यासीन(46) शामिल है। पुलिस की पुछताछ में गौ तस्कर ने बताया कि सभी पशुओं को कांटाटोली के हीरा टोली व धानामंजी ले रहें थे। घटना के संबंध में अंसारी थाना प्रभारी इंस्पेक्टर महेन्द्र करमाली ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी ग्रीमण क्षेत्रों से अवैध रूप से गौ तस्कर कारोबारी शहर व अन्य जगहों पर अवैध तरीके से कारोबार कर रहें हैं। जिसेक बाद थाना प्रभारी स्वंय ही होरहाप की ओर एक टीम मौजूद थी, इसी क्रम में एक टेम्पू में मालवाह में चार लोग के साथ 11 गाय एवं बछड़ा से लदे हुए थे। पुलिस को देख सभी भागने का प्रयास किया, लेकिन दो लोग भागने में सफल रहें।

शिबू सोरेन परिवार ने 250 करोड़ रुपये की 108 परिसंपत्ति का साम्राज्य खड़ा किया : बाबूलाल

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) प्रमुख शिबू सोरेन परिवार ने 250 करोड़ रुपये की 108 अचल परिसंपत्तियों का साम्राज्य खड़ा किया है। बाबूलाल मरांडी ने मंगलवार को रांची स्थित पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में बताया कि जेएमएम प्रमुख शिबू सोरेन और उनके परिवार ने यह सारी संपत्ति वर्ष 2004-05 के बाद एकत्रित किया है। शिबू सोरेन केंद्र में कोयला मंत्री रहे, बाद में झारखंड के मुख्यमंत्री बने। इसके बाद उनके पुत्र हेमंत सोरेन उपमुख्यमंत्री और मुख्यमंत्री बने। वहीं उनके दूसरे पुत्र बसंत सोरेन और पुत्रवधु सीता सोरेन भी विधायक है। ये सभी संपत्ति सीबीआई और आयकर विभाग ने एकत्रित किये हैं या सोरेन परिवार के सदस्यों द्वारा चुनाव लड़ने के दौरान भारत निर्वाचन आयोग को शपथपत्र के माध्यम से दी गयी है। इन परिसंपत्तियों में रांची से लेकर दिल्ली , उत्तर प्रदेश समेत अन्य स्थानों पर एकत्रित की गयी अचल संपत्ति शामिल है। बीजेपी विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि झारखंड में शिबू सोरेन ही एक मात्र ऐसा परिवार है, जिसने कुछ ही वर्षों में इतनी अधिक संपत्ति एकत्रित की है, उन्हें तो संपत्ति अर्जित करने के मामले में ग्रिनिज वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन संपत्तियों का मूल्य 250 करोड़ रुपये है, जबकि शिबू सोरेन ने चुनाव लड़ने के वक्त सिर्फ 2 करोड़ रुपये अपनी संपत्तियों का जिक्र किया है।

मांडर प्रखंड के कृषक मित्रों ने झारखंड सरकार द्वारा मानदेय को लेकर रोष प्रदर्शन

मांडर। मांडर प्रखंड के कृषक मित्रों ने झारखंड सरकार द्वारा मानदेय को लेकर किए गए वादाखिलाफी पर रोष प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री तथा कृषि मंत्री का मांडर चौक पर पुतला दहन किया।झारखंड प्रदेश कृषक मित्र महासंघ के निर्देश पर किये गए इस पुतला दहन कार्यक्रम पर प्रखंड अध्यक्ष सुरजीत सिंह ने बताया कि पिछले दो महीने से अधिक समय से कृषक मित्र अपनी मानदेय को लेकर विभिन्न चरणों में आंदोलनरत रहे थे किन्तु 12 सितम्बर को कृषक मित्रों के प्रतिनिधि बुलाकर मात्र पांच सौ रुपये की प्रोत्साहन राशि की बढ़ोतरी पर कृषक मित्र महासंघ काफी आक्रोशित है,और आज से सभी अनिश्चित कालीन हड़ताल का संकल्प ले चुके हैं।पुतला दहन में मांडर प्रखंड के कृषक मित्र संघ के अध्यक्ष सुरजीत सिंह, राजकुमार सिंह, साबिर अंसारी, खुदी उरांव सहित अन्य कृषक मित्र मौजूद थे।

पिछले कई दिनों से हो रही रुक-रुककर हो रही बारिश ने कई घरों को किया ध्वस्त

नवीन मेल संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड में पिछले कई दिनों से हो रही रुक रुक कर बारिश से प्रखंड के बारीडीह गांव निवासी बासुदेव उरांव, एतवा उरांव व बंदे भगत समेत जामटोली पंचायत के भसनन्दा गांव में विनोद गोप का घर गिर गया। बारिश के बीच घर के गिरने से घर में रखे घरेलू सामान दबकर बर्बाद हो गया। वहीं बारिश में गिरी घर के बाद पीड़ित परिवार वालों ने बताया कि बरसात के बीच गिरी घर से वे किसी तरह जान बचाकर घर से बाहर निकले। लेकिन घर के गिरने से इस बरसात के मौसम में वे परिवार समेत बेघर हो गए।

वही घर में रखी सामान दबकर व भींग कर बर्बाद हो गए। इधर घटना की जानकारी मिलने पर भाजपा नेता जगरनाथ भगत ने पीड़िता के घर का मुआयना किया। साथ ही आपदा प्रबंधन के तहत उचित मुआवजा दिलाये जाने का आश्वासन दिया।

ओरमांझी घटना बर्दाश्त नहीं : बजरंग दल

रांची। बजरंग दल झारखंड प्रान्त के प्रान्त संयोजक श्री दीपक ठाकुर ने एक प्रेस बयान जारी कर ओरमांझी के प्रोजेक्ट बालिका प्लस टू उच्च विद्यालय की आदिवासी व अन्य हिंदू छात्राओं को कट्टरपंथी मुस्लिम जिहादी युवकों द्वारा सरेआम विद्यालय में जाकर अवैध हथियार दिखाकर उनसे दोस्ती नहीं करने पर जान से मार देने की धमकी देने, मारपीट करने तथा उठा लेने की धमकी देने को बजरंग दल झारखंड प्रदेश ने गंभीरता से लिया है। और कहा है कि हिंदू युवकों की धैर्य की परीक्षा न ली जाए। अन्यथा जिहाद का जवाब हिन्दू यवकों ने भी धर्मयुद्ध से अगर देना शुरू कर दिया तो कोई शासन-प्रशासन उन्हें बचा नहीं पाएगा।

तीन महिलाओं की हत्या की पूरी प्लानिंग गांव के ओझा सुकरा सिंह मुंडा ने ही रची थी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। सोनाहातू के राणाडीह गांव में तीन महिलाओं की हत्या की पूरी प्लानिंग गांव के ओझा सुकरा सिंह मुंडा ने ही रची थी। उसने ग्रामीणों को यह धमकी दी थी कि अगर महिलाओं की हत्या करने और उनके शव को ठिकाना लगाने में वे साथ नहीं दिए तो उनका भी हश्र बुरा होगा। उनकी भी हत्या कर दी जाएगी। इस बात का खुलासा रांची पुलिस की जांच में हुआ है। पुलिस की जांच में यह बात सामने आयी है कि ओझा ने ही ग्रामीणों को तीनों महिला की हत्या करने के लिए उकसाया था। ओझा ने तीनो महिलाओं को गांव में पहले डायन घोषित करवा दिया। ग्रामीणों को यह बताया कि इन तीनों महिलाओं की वजह से मौत हो रही है। सांप बनकर तीनों महिलाएं गांव के लोगों को डस रही है। आने वाले दिनों में गांव के लोगों को कई तरह की परेशानिया भी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए तीनों को मार डालना ही एक मात्र रास्ता है। ओझा ने ग्रामीणों से यह भी कहा कि कोई भी व्यक्ति पुलिस को इसकी सूचना नहीं दे। उसी के कहने पर ग्रामीणों ने तीनो महिला राउलो देवी, आलोमनी देवी और ढोली देवी की पीटकर हत्या कर दी थी। हत्या करने के बाद शव को पहाड़ी पर फेंक दिया था।

पांच सितंबर को हुई थी घटना : इस मामले में मृतक राउलो देवी का भतीजा सुरेंद्र सिंह मुंडा ने सोनाहातू थाने में प्राथमिकी दर्ज करायी थी। सुरेंद्र ने बताया कि उन्हें बीते दो सितंबर की शाम सात बजे फुफेरी बहन आरती ने फोन कर ललित को सांप काटने की बात कहकर बुलाया। रात करीब नौ बजे जब वह अपनी फूआ के घर पहुंचा तो देखा कि उनके पति, बेटा ललित समेत गांव के 25 से 30 लोग राउली समेत तीन महिलाओं को घेर हुआ है। सभी लोग तीनों राउली समेत तीनों महिलाओं को लाठी और लात घूंसों से बेरहमी से पीट रहे हैं। इसी बीच ललित ने उन्हें भी डंडा दिया और राउली समेत तीनों महिलाओं को पीटने का दबाव दिया। लेकिन इससे इंकार कर गया। लाठी की मार से तीनों महिलाओं के सिर और शरीर के अन्य हिस्सों से खून बह रहा था। मौजूद ग्रामीण तीनों महिलाओं पर डायन बिसाही का आरोप लगा रहे थे। इस दौरान एक भी व्यक्ति उन महिलाओं को बचाने के लिए आगे नहीं आ रहा था।

इन्हें पुलिस ने भेजा जेल

अभिमन्यु सिंह मुंडा, ललित सिंह मुंडा, सहदेव सिंह मुंडा, जन्मेनत्रय लोहरा, बबलू सिंह मुंडा, सुकरा मुंडा उर्फ सुखराम मुंडा, पुईता सिंह मुंडा, मुचिराम सिंह मुंडा, नमी सिंह मुंडा, नंद किशोर सिंह मुंडा, बिरहर सिंह मुंडा उर्फ सुकरा सिंह मुंडा, मंगल सिंह मुंडा, दिनेश सिंह मुंडा, संजय सिंह मुंडा।

उपायुक्त का कार्यालय, कोडरमा
(समाज कल्याण शाखा)

अतिअल्पकालीन निविदा सूचना

कोडरमा जिला अन्तर्गत आंगनबाड़ी केन्द्रों को मॉडल स्वरूप देने हेतु आंगनबाडी केन्द्रों का सौन्दर्यीकरण किया जाना है। जिसके लिए आंगनबाडी केन्द्रों में विभिन्न सामग्रियों की आपूर्ति की जानी है। सामग्रियों की आपूर्ति हेतु इच्छुक आपूर्तिकर्त्ता/एजेन्सी से मुहरबंद लिफाफा में सामाग्रियों का दर निर्धारण हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है। निर्धारित दर 1(एक) वर्ष के लिए वैध होगा।

अतः इच्छूक आपूर्तिकर्त्ता/एजेन्सी अपनी निविदा का आवेदन मुहर बन्द लिफाफे में उपायुक्त, कोडरमा को संबोधित करते हुए स्थान– जिला समाज कल्याण कार्यालय, कोडरमा में दिनांक–20/09/2022 को अपराह्न 02 बजे तक हाथों–हाथ जमा कर सकते हैं। उक्त निविदा उपायुक्त, कोडरमा के सभा कक्ष में दिनांक–20/09/2022 को 04 बजे पूर्वाह्न/अपराह्न में खोला जायेगा।

नोटः– उक्त के संबंध में विस्तृत जानकारी जिले के बेवसाईट www.koderma.nic.in पर देखा जा सकता है।

ह0/–
उपायुक्त, कोडरमा।

PR 277629 (Social Welfare,Women and Child Development) 22-23 (D)

वेटनरी कॉलेज में खुरपका-मुंहपका रोग (एफएमडी) नियंत्रण जागरूकता सप्ताह का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

रांची। नेशनल एनिमल डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम (एनएडीसीपी), डायरेक्टरेट ऑफ फूट एंड माउथ डिजीज (एफएमडी), अरुगल, भुवनेश्वर एवं रांची पशु चिकित्सा कॉलेज, बीएयू, रांची के पशु रोग विज्ञान विभाग में कार्यरत एफएमडी नेटवर्क केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 17 सितम्बर तक एफएमडी जागरूकता सप्ताह मनाया जायेगा।

अध्यक्ष (पशु रोग विज्ञान) एवं परियोजना अन्वेंषक (एफएमडी केंद्र) डॉ. एमके गुप्ता ने बताया कि इस अभियान में मुख्य जोर खुरपका-मुंहपका रोग (फूट एंड माउथ डिजीज) के प्रकोप के बारे में किसानों में जागरूकता पैदा करना और रोकथाम की जानकारी पर होगी। साथ ही बीमारी का प्रकोप दिखने पर सावधानी, तुरंत कार्यवाही, बीमारी का निदान और निगरानी कार्य हेतु पशु चिकित्सकों और वैज्ञानिकों के साथ समन्यवय स्थापित करने के महत्त्व पर चर्चा होगी।

जागरूकता सप्ताह के तहत बुधवार को मैत्री प्रशिक्षण से जुड़े बोकारो, चतरा, देवघर, धनबाद एवं गिरिडीह जिले के कुल 57 युवा किसानों के साथ सीधा संवाद, गुरुवार को झारखंड के विभिन्न जिलों में कार्यरत सभी राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनएडीसीपी) के नोडल अधिकारियों, राज्य नोडल अधिकारी और निदेशक पशुपालन के साथ एफएमडी बीमारी पर वर्चुअल बैठक तथा शुक्रवार को माडर, चान्हो व नगड़ी प्रखंड के किसानों से साथ सीधा संवाद कार्यक्रम का आयोजन होगा।

जंगली भालु के हमले घायल गोपाल कच्छप,रिम्स में इलाजरत

नामकुम। नामकुम के लाली कुदागढा जंगल में भालू के हमले में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल व्यक्ति का नाम गोपाल कच्छप बताया जा रहा है, जो कि लाली गढाटोली का रहने वाला बताया जा रहा है।

गोपाल कच्छप को मंगलवार सुबह भालू के हमले से सबसे अधिक सर पर घायल किया है। गोपाल का इलाज रिम्स भेजा गया, जहां उसका ईलाज कराया जा रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार सोमवार को शाम गोपाल बारिष के बाद लगभग पाचं बजे जंगल स्थित अपने धान के खेतों का आर ठीक कर वापास लौट रहा था। लौटने के क्रम में एक जंगली भालु ने उसपर हमला कर दिया जिसमें उसके सिर और दोनो हाथों को भालु ने लहुलुहान कर दिया। गोपाल ने बताया कि भालु के जाने के बाद वह किसी तरह से अपने घर पहुंचा तो परिजनों ने रात हो जाने के कारण गांव के कंपाउंडर से उसका ईलाज कराया।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, सिमडेगा

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं० – 09/2022–23
प्रथम आमत्रण

1. विभाग का नाम :– पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड।
2. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, सिमडेगा।
3. परिमाण विपत्र बिक्री की अंतिम तिथि एवं समय :– 21.09.2022 के अपराहन 3.00 बजे तक
4. निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय :– 22.09.2022 को 3.30 बजे अपराह्न तक।
5. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– 22.09.2022 के 4.00 बजे अपराह्न।
6. निविदा परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, सिमडेगा।
7. निविदा प्राप्ति का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, सिमडेगा।

क्र०	कार्य का नाम	योजनाओं की संख्या	कुल प्रा० राशि (रू० में)	अग्रधन की राशि (रू० में)	परिमाण वि० का मूल्य (रू० में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	प्राथमिक विद्यालय महुवाडीह, कुरडेग में सोलर जलमीनार का निर्माण कार्य।	1	5,86,000.00	12,000.00	1250.00	45 दिन

नोट :–
1. संवेदक का पेयजल एवं स्वच्छता विभाग अंतर्गत निबंधन एवं UCAN तथा GST में Registration अनिवार्य है।
2. परिमाण विपत्र का मूल्य राष्ट्रीयकृत बैंक (जिसका शाखा सिमडेगा जिला में हो) से निर्गत ड्राफ्ट/बैंकर्स चेक द्वारा ही स्वीकार किये जायेंगे। ड्राफ्ट कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, सिमडेगा के पदनाम से प्रतिज्ञिप्त होना चाहिए एवं सिमडेगा शाखा में भुगतेय होना अनिवार्य है।
3. निविदा की नियम एवं शर्तें आदि कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।
4. निविदा की प्राक्कलित राशि घट–बढ़ सकती है।
5. किये जाने वाले कार्य के समान (similar) कार्य का अर्थात सौर उर्जा आधारित जलापूर्ति कार्य का अनुभव प्रमाण पत्र (पिछले पाँच वर्षों में 2017–18 से) जो कार्यपालक अभियंता से अन्यून पदाधिकारी द्वारा निर्गत हो उपलब्ध कराना अनिवार्य है।

कार्यपालक अभियंता
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल, सिमडेगा।

PR.NO.277667 Drinking Water and Sanitation(22-23):D

न्यूज गैलरी

रिंग रोड, दलादली चौक में दुर्गापूजा पंडाल का किया गया भूमि पूजन

रांची। रिंग रोड, दलादली चौक दुर्गा पूजा समिति के द्वारा दुर्गा मंदिर व हनुमान मंदिर स्थित पंडाल निर्माण कार्य को लेकर मंगलवार को यजमान के रूप में अभिषेक मिश्रा द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कर भूमि पूजन किया गया। तथा प्रसाद के रूप में नारियल, लड्डू व इलाइंची दाना वितरण किया गया। पूजा उपरांत दुर्गा पूजा पंडाल का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इस अवसर पर दुर्गा पूजा कमिटी के अध्यक्ष जनार्दन ओझा व सचिव अभिषेक मिश्रा ने बताया कि हर साल कमिटी के सक्रिय सदस्य व आस पास के क्षेत्रवासियों के सहयोग से दुर्गा पूजा बहुत ही धूमधाम से मनाते आ रहे हैं। इस बार दो साल के कोरोणा काल के बाद पूजा बड़े हीं धूमधाम से मनाए जाने की तैयारी हो रही है। इस बार बहुत ही भव्य आकर्षक पंडाल बनाया जाएगा। जिसमें कुशल कारीगरों के द्वारा दुर्गा मां की प्रतिमा का निर्माण कार्य किया जा रहा है। तथा विद्युत सज्जा भी काफी भव्य आकर्षक होगी। दुर्गा पूजा में सप्तमी से लेकर दशमी तक बुंदिया, खीर, हलवा व खिचड़ी भोग का वितरण होगा। इस अवसर पर मुख्य रूप से अध्यक्ष जनार्दन ओझा, सचिव अभिषेक मिश्रा, कोषाध्यक्ष सत्येंद्र शर्मा, उपसचिव वीरेंद्र सिंह, रामाशिष शर्मा, सुनील कुमार सिंह, बबन सिंह, विनय कुमार, उदय सिंह, रितेश सिंह,वैभव कुमार, मंतोष कुमार आदि शामिल थे।

नाबालिग के अपहरण का मामला परिजनों ने आशीष टोप्पो पर लगाया

रांची। सुखदेवनगर थाना क्षेत्र की रहने वाले 13 साल की एक नाबालिग लड़की का अपहरण कर लिया गया है। नाबालिग के अपहरण का आरोप आशीष टोप्पो नामक युवक पर लगा है। इस संबंध ने नाबालिग के पिता ने आरोपी आशीष टोप्पो के खिलाफ सुखदेवनगर थाने में प्राथमिकी दर्ज करायी है। परिजनों ने नाबालिग के साथ अनहोनी होने की भी आशंका व्यक्त की है। नाबालिग के पिता ने पुलिस को दिए गए आवेदन में कहा है कि बीते दस सितंबर की शाम पांच बजे से उनकी पुत्री घर से गायब थी। खोजबीन में पता चला कि उसी इलाके के रहने वाले आरोपी आशीष उसे लेकर कहीं चला गया है। पिता ने यह भी बताया कि आरोपी अक्सर उसे बहला-फुसला कर ले जाता था। इसकी जानकारी मिलने के बाद वह आरोपी के परिजनों को समझाया और कहा कि उनकी पुत्री से दूर रहे। लेकिन आरोपी की मां ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। इसके बाद आरोपी दस सितंबर को उनकी पुत्री को बहला-फुसला कर ले गया। हालांकि काफी खोजबीन भी की। लेकिन उनकी पुत्री का कुछ पता नहीं चला। परिजनों का आरोप है कि पुलिस मामले को गंभीरता से नहीं ले रही है।

दुष्कर्म मामले के आरोपी की जमानत अर्जी खारिज

रांची। विद्यालय जा रही नाबालिग का अपहरण कर तीन दिन तक दुष्कर्म करने के मामले में आरोपी नकुल बेदिया की जमानत अर्जी पोक्सो कोर्ट ने खारिज कर दी। वह 29 मार्च से जेल में है। बताया गया कि अनगड़ा प्रखंड में पांच मार्च को छात्रा विद्यालय के लिए निकली थी। तभी रास्ते से ही आरोपी ने अपहरण कर तीन दिन तक उसके साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद बुंडू निवासी संजय सिंह मुंडा के हवाले कर दिया। उसने 10 दिन तक शारीरिक शोषण किया था। इसके बाद 19 मार्च को वह घर लौटी। आठ दिन बाद अनगड़ा थाना में 27 मार्च को प्राथमिकी दर्ज कराई थी। दो दिन बाद आरोपी को गिरफ्तार किया गया था।

रसोईया संयोजिका का मानदेय प्रतिदिन 66 रूपए से बढ़ाकर 390 करने की मांग

रांची। झारखंड प्रदेश विद्यालय रसोईया संयोजिका अध्यक्ष संघ के तत्वावधान में न्यूनतम मजदूरी की मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष जारी है। संघ ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार को हमारी मांगों से कोई लेना देना नहीं है। शायद इसलिए ही आज 47 वें दिन भी धरना का कार्यक्रम जारी है। जबत तक सरकार हमारी मांगों को नहीं मानती है तब तक हमलोगों को धरना जारी रहेगा। आज धरना कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सिमडेगा के जलडेगा प्रखंड एवं गुमला जिला के सिसई प्रखंड रसोईया, संयोजिका और सहायिका ने भाग लिया। रसोईया संयोजिका की मांगों का समर्थन करते हुए झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के नेताओं ने आज धरना स्थल पहुंच कर उनके साथ बैठे। धरना को संबोधित करते हुए मोर्चा के प्रवक्ता पुष्कर महतो ने कहा कि राज्य सरकार को रसोईया, संयोजिका और सहायिकाओं की मांगों पर विचार करना चाहिए। अपनी जायज मांगों को लेकर ये पिछले 47 दिनों से आंदोलनरत है। लेकिन सरकार की ओर से न तो कोई नेता और न ही कोई अधिकारी आया।

मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन कार्यक्रम के सम्बन्ध में कार्यशाला का हुआ आयोजन

सभी को फाइलेरिया रोधी दवाएं खिलायें और राज्य को मुक्त बनायें : अपर मुख्य सचिव

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखण्ड सरकार, लिम्फेटिक फाइलेरिया (हाथीपांव) के उन्मूलन हेतु पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इसी के फलस्वरूप राज्य सरकार द्वारा आगामी 16 सितम्बर से 30 सितम्बर तक झारखण्ड के 8 फाइलेरिया प्रभावित जिलों (लोहरदगा, हजारीबाग, गिरिडीह, गढवा, पू० सिंहभूम, प० सिंहभूम, खूंटी और रांची) में कोरोना के दिशा- निदेर्शों के अनुसार शारीरिक दूरी, मास्क और हाथों की साफ-सफाई का अनुपालन करते हुए फाइलेरिया रोग के उन्मूलन के लिए मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एम.डी.ए) कार्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के सफल किर्यन्वयन के लिए मीडिया सहयोगियों की प्रमुख भूमिका को देखते हुए आज अपर मुख्य सचिव, स्वास्थ्य,

चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखंड, अरुण कुमार सिंह की अध्यक्षता में मीडिया संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित संयुक्त निदेशक, एनसीवीबीडीसी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. छवि पन्त जोशी ने कहा कि राज्य सरकार फाइलेरिया और कालाजार जैसी वेक्टर जनित बीमारियों के उन्मूलन के लिए चरणबद्ध तरीके से कालाजार रोग से प्रभावित जिलों में कीटनाशी दवा का छिड़काव यानि आई.आर.एस. कार्यक्रम संपन्न करवा रही है और फाइलेरिया रोग से मुक्ति के लिए फाइलेरिया से प्रभावित जिलों में एमडीए कार्यक्रम आयोजित करवा रही है।

सरकार फाइलेरिया जैसी बीमारियों को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है

अपर मुख्य सचिव ने बताया कि राज्य सरकार फाइलेरिया जैसी वेक्टर जनित बीमारियों को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य के उपरोक्त 8 फाइलेरिया प्रभावित जिलों में कोविड-19 दिशानिर्देशों के अनुरूप पात्र लक्षित 5237859 लोगों को फाइलेरिया रोधी दवायें, डीईसी और एल्बेंडाजोल की निर्धारित निःशुल्क खुराक का सेवन 20951 प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा अपने सामने कराये जाने का लक्ष्य है। एमडीए के पहले दिन नामित बूथों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उप स्वास्थ्य केंद्रों, सभी आंगनबाडी केंद्रों, वार्ड कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों में किया जाएगा, बाकी दिनों में बचे गए लोगों को घर-घर जाकर दवाइयां खिलाई जाएंगी। ये दवायें पूरी तरह से सुरक्षित है। हालांकि ये दवाएं 2 साल से कम उम्र के बच्चों, गर्भवती महिलाओं और गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों को नहीं दी जाएंगी। रैपिड रिस्पांस टीम दवा के सेवन के दौरान किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक दवाओं के साथ मौके पर सक्रिय रहेगी। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित मीडिया सहयोगियों को बताया कि फाइलेरिया एक ऐसी चुनौती है जो अर्थव्यवस्था को प्रभावित करके वैश्विक कल्याण में बाधा डालती है।

छात्राओं ने पोषण पर जागरुकता रैली निकाली

रांची। रांची वीमेंस कॉलेज, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से पोषण माह के तहत मंगलवार को नुक्कड़ नाटक के आयोजन के साथ जागरुकता रैली निकाली गई। नेतृत्व कॉलेज की एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ कुमारी उर्वशी ने किया। नुक्कड़ नाटक का विषय कुपोषण मुक्त भारत के सपने था। वहीं, रैली के माध्यम से लोगों को पोषण माह के बारे में जागरूक किया गया। पोषण रैली में कुपोषण मुक्त भारत के नारे लगाए गए और पोषण गीत गाकर कुपोषण के प्रति लोगों को जागरूक किया गया। बताया गया कि पोषण अभियान के तहत बच्चों में कम पोषण, कम वजन और किशोरावस्था में एनीमिया, स्तनपान करानेवाली माताओं में एनीमिया रोग रोकथाम और उन्हें स्वास्थ्य लाभ देने के लिए लोगों को जागरूक किया जा रहा है। अभियान के तहत नवजात शिशुओं को पौष्टिक भोजन देने पर भी जागरूक किया जाएगा।

नये पीजी व पीएचडी छात्रों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम 19 सितम्बर को

सत्र 2021-22 में कुल 118 छात्र-छात्राओं का नामांकन हुआ

नवीन मेल संवाददाता

रांची । बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि, पशु चिकित्सा व पशुपालन तथा वानिकी संकायों में सत्र 2021-22 के तहत पीजी व पीएचडी छात्रों का नामांकन कार्य पूरा कर लिया गया है। डीन आवासीय शिक्षा एवं स्नातकोत्तर संकाय डॉ एमके गुप्ता ने बताया कि सत्र के अधीन तीनों संकायों के विभिन्न पीएचडी- पीजी प्रोग्राम में कुल 118 छात्र-छात्राओं ने नामांकन कराया है। इनमें 27 पीएचडी एवं 91 पीजी प्रोग्राम के छात्र है। कृषि संकाय में सर्वाधिक 24 छात्रों ने पीएचडी तथा 61 छात्रों ने पीजी प्रोग्राम में नामांकन लिया है। वहीं वानिकी संकाय में कुल 18 तथा पशु चिकित्सा व पशुपालन में कुल 15 छात्रों ने पीएचडी- पीजी प्रोग्राम में नामांकन कराया है। सभी नये नामांकित छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय की आवासीय शिक्षा प्रणाली के नियमों से रूबरू कराने के उद्देश्य से 19 सितम्बर को ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कुलपति डॉ ओएन सिंह के निर्देश पर कार्यक्रम के दौरान छात्रों को पुरे पीएचडी-पीजी पाठ्यक्रम एवं नियम व परिनियम की जानकारी से अवगत कराया जायेगा।

आरयू: तीन विभागों में निदेशक की नियुक्ति का साक्षात्कार संपन्न

रांची। रांची विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज (आईएलएस), इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (आईएमएस) और स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन में अनुबंध पर निदेशक की नियुक्ति के लिए वॉक इन इंटरव्यू का आयोजन मंगलवार को आईएलएस में सुबह 11 बजे से किया गया। ये सभी नियुक्तियां 11 माह के अनुबंध पर होंगी, जिसमें अवधि विस्तार दिया जा सकता है। इसमें निदेशक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के लिए 6 अभ्यर्थी, स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन के लिए 4 अभ्यर्थी और इंस्टीट्यूट ऑफ लीगल स्टडीज के निदेशक पद के लिए 3 अभ्यर्थी साक्षात्कार में शामिल हुए। इंटरव्यू बोर्ड में कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा, प्रति कुलपति डॉ कामिनी कुमार, रजिस्ट्रार डॉ मुकुंद चंद्र मेहता, उपनिदेशक सीवीएस डॉ स्मृति सिंह व वित्त समन्वयक डॉ विनय कुमार देवघरिया शामिल थे।

गोमिया विधायक ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कराया ध्यान आकृष्ट

राशि के अभाव में बेहाल हैं गंभीर बीमारियों के रोगी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह गोमिया के विधायक डॉ लंबोदर महतो ने कहा है कि मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का लाभ आम जनों को नहीं मिल पा रहा है। सैकड़ों आवेदन मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना से इलाज कराने के लिए पड़े हुए हैं। इन आवेदनों की स्वीकृति नहीं दी जा रही है। कारण बताया जा रहा है कि पिछले तीन माह से मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का आवंटन नहीं है। उन्होंने इसको लेकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र भी लिखा है और उनसे तत्काल जरूरी कदम उठाने का आग्रह भी किया है। उन्होंने मुख्यमंत्री को इस बात से अवगत कराया है कि बोकारो जिला अंतर्गत उनके विधानसभा क्षेत्र गोमिया के सैकड़ों लोगों ने इलाज को लेकर संबंधित कार्यालय को आवेदन दिया है। जिले के संबंधित पदाधिकारी आवंटन नहीं होने का रोना रो रहे हैं। कई लोग काल के गाल में समा गये हैं। कई लोग इलाज कराने की लेकर इधर उधर की दौड़ लगा रहे हैं। यह स्थिति कमोबेश पूरे झारखंड की है। कैंसर, हार्ड,

किडनी, लीवर ट्रांसप्लांट आदि बीमारी से संबंधित आवेदन लंबित है। उन्होंने कहा कि आवेदन की स्वीकृति नहीं होने से लोगों में राज्य सरकार के खिलाफ आक्रोश है। लोगों में सरकार की कार्यशैली की आलोचना हो रही है। राज्य सरकार का संबंधित विभाग भी इस मामले में उदासीन बना हुआ है। मुख्यमंत्री गंभीर बीमारी योजना का हाल बेहाल है।

जेएससीए स्टेडियम के रेसिडेंशियल कांप्लेक्स से छलांग लगाने वाला घायल बादल की हुई मौत

रांची। धुर्वा थाना क्षेत्र के जेएससीए स्टेडियम के रेसिडेंशियल कांप्लेक्स के चौथे माले से छलांग लगाने से घायल हुए लाइफगार्ड बादल कुमार का इलाज के दौरान पारस अस्पताल में मंगलवार भोर को मौत हो गयी। उन्हें बीते सोमवार की सुबह पारस अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मंगलवार को भोर में उनकी तबियत बिगड़ी और करीब तीन बजे सुबह चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मामले की जानकारी मिलने के बाद धुर्वा थाने की पुलिस मौके पर पहुंची। शव को अपने कब्जे में लेकर रिम्स में पोस्टमार्टम कराया। इसके बाद परिजन शव को लेकर पटना के लिए रवाना हो गए। मामले में परिजनो के बयान पर धुर्वा थाने में यूडी केस दर्ज किया गया है। इधर, पुलिस का कहना है कि बादल ने प्रेमिका से विवाद होने के बाद छलांग लगायी है। गौरतलब हो कि लाइफ गार्ड बादल कुमार सोमवार की सुबह वह काफी परेशान थे। स्टेडियम की एक महिला कर्मी से फोन मांगा और किसी युवती को फोन किया। बताया जा रहा है कि दोनों के बीच फोन पर बकझक भी हुई। सुबह आठ बजे वह स्टेडियम परिसर में बने रेसिडेंशियल कांप्लेक्स के चौथे माले पर गए और वहां से छलांग लगा दी। घटना की जानकारी मिलने के बाद आसपास में मौजूद लोग मौके पर पहुंचे। आनन-फानन में स्थानीय लोग उन्हें नजदीक के एक अस्पताल ले गए, जहां उन्हें भर्ती किया गया है। मामले की जानकारी मिलने के बाद स्टेडियम के कई लोग अस्पताल पहुंचे थे। पुलिस मामले की जांच में जुट गयी है।

मांग के अनुरूप राशि न बढ़ने पर कृषक मित्रों की राज्यव्यापी हड़ताल शुरू

रांची। कृषक मित्रों को लेकर सोमवार को हुई सरकार की उच्च स्तरीय बैठक के बाद कृषि मंत्री ने प्रोत्साहन राशि बढ़ोतरी की घोषणा की। लेकिन मांग के अनुरूप घोषणा न होने पर राज्यभर के कृषक मित्र मंगलवार से हड़ताल पर चले गए। पूरे राज्य में कृषक मित्रों ने सरकार का पुतला फूंककर नाराजगी जताई। बता दें कि कृषक मित्र 10 साल से मानदेय लागू करने की मांग कर रहे हैं। प्रदेश अध्यक्ष शशि कुमार भगत ने कहा कि सरकार कृषक मित्रों की हमेशा अनदेखी कर रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने विधानसभा में विधायकों व मंत्री की उपस्थिति में कृषक मित्रों को ?4000 रुपये देने की बात कही थी, लेकिन उन्होंने प्रति वर्ष मात्र 2000 रुपये प्रोत्साहन राशि बढ़ाने की घोषणा की। प्रदेश अध्यक्ष ने दावा किया है कि कृषक मित्रों के मंगलवार को हड़ताल में चले जाने से किसान फसल राहत योजना, ईकेवाईसी, पीएम किसान डोर टू डोर निरीक्षण, किसान क्रेडिट कार्ड आदि कार्य ठप हो गया है।

श्याम मंदिर में 17 श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ का हुआ आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

रांची। श्री श्याम मित्र मंडल के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर मंगलवार को हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में 17 श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन धूमधाम तथा भक्तिमय वातावरण में संपूर्ण आस्था व श्रद्धा से आयोजित हुआ। पूरा मंदिर परिसर भक्तिमय डूबा हुआ था। सामाजिक कार्यकर्ता राजेश जयसवाल, रमा जयसवाल ने परिवार संग वीर बजरंग बली की अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित कर केसरिया पेड़ा, चना, गुड़, केला व सेवफल का भोग अर्पित किया। जयसवाल परिवार ने संपूर्ण समाज की सुख समृद्धि की कामना की। प्रसिद्ध पाठ वाचक मनीष सारस्वत, ओम शर्मा व सहयोगियों ने मंदिर परिसर में उपस्थित सैकड़ों भक्तों से श्री सुंदरकांड व श्री हनुमान चालीसा

का संगीतमय पाठ करवाया । पाठ के बीच में कई बार सुमधुर भजनों का गायन भी किया गया। मंडल के उपाध्यक्ष श्री श्रवण ढानढनिया ने हनुमान जी के दरबार में चना गुड़ प्रसाद की सेवा निवेदित की। बरसात के मौसम के बावजूद बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आयोजन में भाग लेकर अपनी भक्ति निवेदित की। मंडल के उप मंत्री अनिल नारनोली ने पूजा अखंड ज्योति प्रज्ज्वलित अनुष्ठान संपन्न करवाया। रात्रि 7:00 बजे महाआरती के बाद भक्तजनों को आयोजन का महा प्रसाद वितरित किया गया। श्री श्याम मित्र मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी, महामंत्री

पाठ के बीच में कई बार सुमधुर भजनों का गायन भी किया गया। मंडल के उपाध्यक्ष श्री श्रवण ढानढनिया ने हनुमान जी के दरबार में चना गुड़ प्रसाद की सेवा निवेदित की।

विश्वनाथ नारसरीय, उपाध्यक्ष श्रवण ढानढनिया, उप मंत्री अनिल नारनोली, रतन शर्मा, स्नेह पोद्दार, प्रदीप मोदी, संजय सराफ, रौनक पोद्दार, व्यवस्था व प्रसाद वितरण में सहयोग किया। शनिवार को श्री श्याम भंडारा मंडल के मंत्री श्री गौरव अग्रवाल मोनू ने बताया कि शनिवार को 28 व श्री श्याम भंडारा हरमू रोड स्थित श्याम मंदिर में संध्या 5:00 बजे से आयोजित होगा। उल्लेखनीय है कि पिछले 27 सप्ताह से प्रत्येक शनिवार को श्री श्याम मंदिर में श्री श्याम भंडारा का आयोजन होता आ रहा है।

जातीय जनगणना से ओबीसी आरक्षण तय हो, नियोजन नीति की भी घोषणा करें

सरकार भ्रम न फैलाये, खतियान आधारित स्थानीय नीति को लागू करें सरकार: सुदेश

नवीन मेल संवाददाता

रांची। आजसू के केंद्रीय अध्यक्ष और राज्य के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो ने कहा है कि अगर जनभावना के अनुरूप स्थानीय नीति लागू करने पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन गंभीर हैं, तो सदन में कहेनुसार उसे लागू करें। राज्य को भ्रम में रखने से उन्हें बचना चाहिए। इसलिए कि एक बार वे विधानसभा में ही कह चुके हैं कि 1932 के खतियान के आधार पर स्थानीय नीति लागू नहीं किया जा सकता। जबकि पांच सितंबर को विधानसभा के विशेष सत्र में उन्होंने कहा है कि स्थानीय नीति लागू करेंगे और ओबीसी को आरक्षण भी देंगे। पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में एक प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए आजसू प्रमुख ने कहा कि चुनाव में भी झामुमो ने वादा किया था कि नए सिरे से स्थानीय नीति लागू करेंगे। लेकिन सरकार के तीन साल होने को हैं, इस मुद्दे पर उनका रुख और रवैया स्पष्ट नहीं है।

नियोजन नीति की भी घोषणा करें : श्री महतो ने कहा कि मुख्यमंत्री अगर सदन में कोई बात कहें, तो उसकी गंभीरता भी दिखनी चाहिए। स्थानीय नीति के साथ सरकार नियोजन नीति भी लागू करे। लेकिन स्थानीय नीति और नियोजन नीति को लेकर सत्ता की अगुवाई करने वाले झामुमो पर लोगों का विश्वास नहीं ठहरता। तब झामुमो के अतीत पर भी सवाल खड़े हो जाते हैं। अगर झामुमो चाहता, तो 1993 में झारखंड अलग राज्य बन जाता, लेकिन उसने सौदे की राजनीति चुनी।

23 सितंबर से शुरू करेंगे अभियान : उन्होंने कहा कि स्थानीय नीति लागू करने में 1932 का खतियान केंद्र में रहना चाहिए। जबकि अंतिम सर्वे को इसका आधार बनाना होगा। आजसू पार्टी इस मुद्दे पर लगातार आवाज उठाती रही है और मौजूदा परिस्थितियों में सरकार पर दबाव बनाये रखने के लिए हम तत्पर हैं।

सरना कोड को लेकर राष्ट्रपति से मिलेंगे

उन्होंने कहा कि जनगणना कॉलम में आदिवासियों के लिए जगह सुनिश्चित करने के लिए सरना कोड लागू करने की मांग भी आजसू की तरफ से लंबे समय से की जाती रही है। सदन से लेकर सड़क तक पार्टी के दिवंगत विधायक कमलकिशोर भगत इसे उठाते रहे। पार्टी ने निर्णय लिया है कि एक प्रतिनिधिमंडल इस मुद्दे पर देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मिलकर उनका ध्यान दिलायेंगे।

खेल नीति लागू करने से पहले नीयत स्पष्ट होनी चाहिए : सुदेश महतो ने आज लागू होनेवाली खेल नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि नीति लागू करने से पहले नीयत स्पष्ट होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार का मुख्य केंद्र बिंदु इन्फ्रास्ट्रक्चर को विकसित करना होना चाहिए। राज्य में खेल को लेकर बहुत संभावनाएं हैं। सरकार को खेल को अतिरिक्त विषय के रूप में नहीं, बल्कि मूल विषय के रूप में देखना होगा।

एमपीडब्ल्यू स्वास्थ्य कर्मी मुख्यमंत्री को करेंगे सम्मानित

रांची। झारखण्ड एमपीडब्ल्यू कर्मचारी संघ के बैनर तले बुधवार को दिन के 11 बजे मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन से उनके आवास कांके रोड पर संघ के राज्य कार्यकारणी सदस्य के साथ-साथ और सभी जिलों से आये एमपीडब्ल्यू स्वास्थ्य कर्मियों की उपस्थिति में मिलकर मोमेंटो एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर उनको सम्मानित करेंग, जिसकी सूचना कार्यालय को 1 सप्ताह पूर्व ही दिया जा चुका है , साथ ही साथ 14 वर्षों से कार्य कर रहे सभी संविदाएमपीडब्ल्यू स्वास्थ्य कर्मी और राज्य संघ माननीय के द्वारा किये गए पूर्व में 'रिच' स्वास्थ्य कर्मियों' के तर्ज पर 'वन टाइम नियमावली' का गठन करवाते हुए हम सभी राज्य संविदा स्त्रद्द स्वास्थ्य कर्मियों को भी माननीय स्थाई समायोजन पूर्व के तर्ज पर करवाने का आग्रह भी करेंगे ताकि हम सभी का जीवन संवर सके ।

राजभवन के समक्ष राष्ट्रीय तेली साहू महासंगठन का महाधरना सम्पन्न

हत्यारोपियों के खिलाफ अविलम्ब कठोर कानूनी कार्रवाई हो

नवीन मेल संवाददाता

रांची। लगभग सभी जिला में धरना प्रदर्शन करने के बाद 12 सितम्बर को राजभवन के समझ महाधरना दिया गया। इसकी अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष सुनील साहू तथा संचालन कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष हरिनाथ साहू ने किया। उक्त मौके पर बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चंद्रीका प्रसाद साहू इलाहाबादी ने कहा कि झारखण्ड की धरती पर सिर्फ साढ़े चार माह के भीतर तेली समाज के 6 लोगों की हत्याएं हो चुकी है। इन हत्याओं को लेकर पूरे झारखण्ड प्रदेश का तेली साहू समाज काफी मर्माहत और आक्रोशित हैं। 13 अप्रैल 2022 को कोडरमा जिला के डोमचांच थाना अन्तर्गत अर्जुन साव की हत्या, 29 अप्रैल 2022 को धनबाद जिला के झरिया थाना अन्तर्गत रंजित साव की हत्या, 16 जून 2022 को

धनबाद जिला के ही टुण्डी थाना अन्तर्गत नारायण महतो की हत्या, 14 जुलाई 2022 को गिरिडीह जिला के गिरिडीह (मु.) थाना अन्तर्गत वासुदेव साव की हत्या , 14 अगस्त 2022 को खूँटी जिला के खूँटी थाना अन्तर्गत कलावती देवी की हत्या एवं 25 अगस्त को देवघर जिला के जसीडीह थाना अन्तर्गत शिबू मंडल की हत्या हो चुकी है। राजभवन के समक्ष महाधरना देकर महामहिम राज्यपाल महोदय से मांग किया गया कि सभी हत्यारोपियों के खिलाफ अविलम्ब कठोर कानूनी कार्रवाई हो, सभी मृतक परिवार को सरकारी प्रावधान के तहत उचित मुआवजा राशि मिले तथा सभी मृतक के आश्रितों को भुखमरी का सामना नहीं करना पड़े इसीलिए सभी मृतक परिवार को एक एक सरकारी नौकरी के साथ न्योचित कार्रवाई के तहत केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं का लाभ मिले।

न्यूज गैलरी

छत से फिसल कर गिरने से 24 वर्षीय युवक गंभीर रूप से घायल

सिमडेगा। सिमडेगा शहरी क्षेत्र के सामटोली निवासी 24 वर्षीय अनूप मिंज नामक युवक मंगलवार को छत से फिसल कर गिरने से गंभीर रूप से घायल हो गया। परिवार वाले तत्काल उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल सिमडेगा लाए जहां पर डॉक्टरों की निगरानी में उसकी इलाज चल रही है। घटना के संबंध में उसके भाई ने बताया कि छत पर किसी काम को लेकर चढ़ा था और बारिश के कारण क्षेत्र में फिसलन हो गई थी और पैर फिसल कर वह जमीन पर गिरा जिसके बाद माथे में उसकी गंभीर चोट आई और वहीं पर बेहोश हो गया। इधर सदर अस्पताल से इलाज चल रही है फिलहाल खतरे से बाहर है।

पुस्तकालय से बच्चों की रुचि बढ़ेगी : बीडीओ रंजीत कुमार

भंडरा / लोहरदगा । प्रखंड के विटपी प्लस टू और ब्राह्मणडीहा प्लस टू हाई स्कूल में बीडीओ रंजीत कुमार सिन्हा ने 13 सितंबर को बुक क्लब का उद्घाटन किया। मौके पर उन्होंने कहा कि पुस्तकालय सिर्फ पुस्तकों का संग्रह ही नहीं बल्कि बौद्धिक प्रयोगशाला है। इससे छात्रों की रुचि साहित्य पर बढ़ेगी। इसमें बच्चों की रुचि और उपस्थिति दोनों जरूरी है। इसका नियमित उपयोग जरूरी है। कार्यक्रम में बीईईओ जयनाथ महतो, बीपीओ रामविजय खलखो के अलावे शिक्षक नेहा कुजूर, रामप्रवेश गुप्ता, अजय तिर्की, आनंद ठाकुर, अमानुल्ला, मतीउलला परवेज, पितरुस मिंज आदि मुख्य रुप से उपस्थित थे। जबकि ब्राह्मणडीहा में प्रधानाध्यापक दीप्ति किंडो व अन्य शिक्षक मौजूद थे।

हत्या के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

सिमडेगा। मुफस्सिल पुलिस ने मंगलवार को थाना क्षेत्र के तामड़ा कामतारा डीपाटोली गांव में सोमवार को जमीन विवाद में 65 वर्षीय वृद्ध महिला की कुदाल से काट हत्या मामले में आरोपी सलेस्टिन किंडो को गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया जानकारी देते हुए थाना प्रभारी अरविंद कुमार ने बताया कि मृतिका की बेटी के लिखित आवेदन के आधार पर मुफ्फसिल थाना कांड सख्या 14/22 धारा 302 के तहत मामला दर्ज किया गया था ।एवं कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इधर शव का भी पोस्टमार्टम कराने के पश्चात परिजनों को सौंपा दिया।

हिंदुस्तान युनिलीवर के डुप्लीकेट उत्पाद बेचने वाले तीन दुकानों में छापामारी, तीन व्यक्ति गिरफ्तार

गढ़वा। पुलिस ने हिंदुस्तान युनिलीवर के डुप्लीकेट उत्पाद सामान बेचने वाले तीन दुकान में छापामारी कर 3 लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार लोगों में गढ़वा थाना क्षेत्र के सोनपुरवा मोहल्ला निवासी स्वर्गीय राम लखन प्रसाद का पुत्र रमेश कुमार पाठक, मोहल्ला निवासी राजेंद्र प्रसाद का पुत्र रोहित राज उर्फ रोहित कुमार एवं राहुल कुमार केसरी के नाम शामिल हैं। इस संबंध में थाना प्रभारी लक्ष्मीकांत ने बताया कि शहर के इंदिरा गांधी रोड स्थित उन्नति सिंगार बली शाह लाइन तथा सुप्रिया सिंगार में हिंदुस्तान युनिलीवर के डुप्लीकेट उत्पाद सामान बेचने का प्राथमिकी गढ़वा थाने में दर्ज कराया गया था। इसके बाद थाना प्रभारी के नेतृत्व में एक टीम गठित कर छापामारी किया गया। छापामारी के दौरान तीनों दुकान से हिंदुस्तान युनिलीवर के डुप्लीकेट सामान बरामद किया गया। इसके बाद पुलिस ने तीनों के विरुद्ध गढ़वा थाने में कांड संख्या 505 /22 के तहत 12 सितंबर को धारा 420 के तहत प्राथमिकी दर्ज कर तीनों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

बीस सूत्री अध्यक्ष ने किया विद्यालय का औचक निरीक्षण, दिये दिशा-निर्देश

श्री बंशीधर नगर। बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्यवन समिति के प्रखण्ड अध्यक्ष शैलेश कुमार चौबे ने मंगलवार को चितविश्राम ग्राम स्थित राजकीय कृत उच्च विद्यालय व मध्य विद्यालय का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में बच्चों की कम उपास्थिति देख उन्होंने नाराजगी व्यक्त किया। उन्होंने प्रधानाध्यापक को बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने के लिये अभिभावकों की बैठक बुलाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों से आवेदन लेकर ही उन्हें छुट्टी दें। उन्होंने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने पर बल दिया .उन्होंने कहा कि शिक्षकों द्वारा कोर्स पूरा करा देना महत्वपूर्ण नही है,कोशिश होना चाहिए कि बच्चे कोर्स पूरा कर लें। उन्होंने कहा कि कक्षा 10 के बच्चे भी अंग्रेजी नही पढ़ पा रहे हैं, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। उच्च विद्यालय में कक्षा संचालित होने के बाद भी दो शिक्षकों के वर्ग में नही जाने पर उन्होंने कहा कि कक्षा का खाली रहना शिक्षकों के किस मानसिकता को दशार्ता है। एमडीएम के सम्बंध में उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा जो मानक निर्धारित है,उसमें कोताही बर्दास्त नही किया जायेगा। उन्होंने कहा कि बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना शिक्षकों का कर्तव्य है।

शहीद जॉन ब्रिटो कीड़ो की पुण्यतिथि पर विधायक सहित जिलेवासियों ने दी श्रद्धांजलि, कहा-

ऐसे वीर शहीदों व उनके परिवार पर देश को नाज है

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। शहीद जॉन ब्रिटो कीड़ो की पुण्यतिथि पर मंगलवार को कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। हलवाई नदी कि समीप स्थित वेटरन्स ऑफ इंडिया जिला कमेटी के बैनर तले शहीद के प्रतिमा स्थल में मंगलवार को श्रद्धांजलि सभा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड सरकार के मुख्य उपसचेतक सह विधायक भूषण बाड़ा उपस्थित थे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में जिप सदस्य जोसिमा खाखा, नप अध्यक्ष पुष्पा कुल्लू उपस्थित थी। विधायक भूषण बाड़ा सहित अन्य अतिथियों ने शहीद की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि जबांज वीर शहीद जॉन ब्रिटो कीड़ो देश के लिए कुर्बान हो गए। ऐसे वीर शहीदों पर एवं उनके परिवारों पर देश को नाज है। शहीद जॉन ब्रिटो कीड़ो के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। देश के युवा पीढ़ी को शहीद जॉन ब्रिटो जैसे क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेनी चाहिए। विधायक ने आगे कहा कि जिले शहीदों को एवं उनके

परिवारों को उनका पूरा हक और अधिकार मिलेगा। जिले के सभी शहीद जवानों के गांव को आदर्श गांव बनाएंगे। ऐसे वीरों का गांवों की पहुंच पथ को दुरुस्त किया जाएगा। बिजली, पानी, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं दुरुस्त की जाएंगी। जिले के ऐसे वीर शहीदों की सूची एंव उनके गांवों की सूची हमे उपलब्ध कराएं। ताकि जल्द से जल्द इन गांवों का विकास किया जा सके। उन्होंने कहा कि शहीद के एक परिजन को सरकारी दिलाने के लिए भी वे प्रयास करेंगे। विधायक श्री बाड़ा ने कहा कि वीरता हमारे जिले लोगों के रग-रग में बसती है। देश के लिए शहादत देने में भी वीरों की हमारी यह माटी आगे रही है। पवन शांति युद्ध से लेकर कारगिल युद्ध तक हमारे दर्जनों जांबाज सैनिक अब तक देश के लिए कुर्बान हो चुके हैं। सिमडेगा हमेशा से वीरों और शहीदों की भूमि रही है। यहां के अनगिनत वीरों ने राज्य और देश की खातिर अपनी शहादत दी है। इतिहास के पन्नों में ऐसे कई शहीदों के नाम दर्ज हैं, तो कई आज भी गुमनाम हैं। जिले के शहीदों की पहचान कर उनके आश्रितों को झारखंड सरकार सम्मान और अधिकार देने का प्रयास कर रही है। विधायक भूषण बाड़ा ने कहा कि सिमडेगा में भी गुमनामी की जिंदगी जी रहे शहीद जवानों को चिन्हित कर हमें जानकारी दें। ताकि ऐसे वीर सपूतों और उनके आश्रितों को सम्मान और अधिकार दिया जा सके। ताकि पीढ़ी दर पीढ़ी इन शहीदों की वीर गाथा से अवगत रहे। मौके पर जिप सदस्य शांति बाला, वेटरन्स इंडिया के प्रदेश अध्यक्ष मुकेश, वार्ड पार्षद शीला टोप्पो, वेटरन्स इंडिया के जिलाध्यक्ष विष्णु महतो, शहीद के पिता करलुस कीड़ो, सोनल लकड़ा, शहीद के भाई बिपिन कीड़ो, बन्नू, सुषमा कुजुर, लीला नाग, जुली, बिपिन कीड़ो सहित वेटरन्स इंडिया के सभी सदस्य व काफी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

सड़क पर भवन की सामग्री गिराने वालों पर लगेगा जुर्माना

जमशेदपुर। जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति के विशेष पदाधिकारी संजय कुमार के निर्देश पर आगामी दुर्गा पूजा के मद्देनजर सड़क पर भवन सामग्री, यथा ईट , गिट्टी, बालू, बजरी या कचरा रखने वाले लोगो को चिन्हित करते हुए जुमार्ना राशि वसूल किया गया । पूजा के दौरान किसी भी प्रकार से श्रद्धालुओं का परेशानी नहीं हो रास्ते पर पड़े भवन सामग्री या अन्य से दुघर्टना की संभावना बनी रहती है । अरुण कुमार , संजीत सिंह विद्यापति नगर , मोहन पटेल न्यू ले आउट सीताराम डेरा से कुल रुपए 9000 जुमार्ना वसूल किया गया एवं चेतावनी दी गई 24 घंटे के भीतर सामग्री को स्वतरू नहीं हटाने पर प्रतिदिन जुमार्ना राशि बढ़ाते हुए सामग्री को जब्त कर लिया जाएगा । उक्त कार्यवाई प्रभारी कर दारोगा के नेतृत्व में उड़नदस्ता दल के द्वारा किया गया ।

ससमय विसर्जन करने वाले दस पूजा पंडाल समिति को प्रशासन करेगा पुरस्कृत

नवीन मेल संवाददाता

जमशेदपुर। दुगार्पूजा- 2022 की तैयारी को लेकर जिला दण्डाधिकारी-सह-उपायुक्त विजया जाधव द्वारा जमशेदपुर दुगार्पूजा केंद्रीय समिति के सदस्यों के साथ बैठक की गई । बैठक में सौहार्दपूर्ण वातावरण में पूजा के आयोजन हेतु विचार-विमर्श किया गया तथा विधि व्यवस्था के बेहतर संधारण हेतु उनसे राय भी ली गई तथा उनकी समस्याओं को भी सुना गया । बैठक में जिला उपायुक्त ने प्रशासन की भावनाओं से अवगत कराते हुए कहा कि दुर्गा पूजा सुरक्षित एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में जिला में मने इस दिशा में जनसाधारण से भी सहयोग अपेक्षित है। इस संबंध में कमेटी के सदस्यों द्वारा दुर्गा पूजा को लेकर कुछ समस्याओं को उपायुक्त के सामने रखा गया जिसमें पेड़ के टहनियों की छंटाई, यातायात व्यवस्था, पार्किंग व्यवस्था से संबंधित समस्या, सड़क एवं हाई मास्ट लाईट की मरम्मती, नशा मुक्त /ड्राई डे घोषित करने को लेकर जिला प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराया गया। इस संबंध में उन्हें आश्वस्त किया गया कि जिला प्रशासन संबंधित समस्याओं का समुचित समाधान करेगा, तथा राज्य सरकार के दिशा-निदेर्शानुसार जिले में ड्राई डे घोषित होगा। जिला प्रशासन द्वारा भी समिति सदस्यों से आग्रह किया गया कि सभी पंडालों में सीसीटीवी का अधिष्ठापन, पर्याप्त संख्या में वॉलिंटियर की प्रतिनियुक्ति करें, अग्निशमन यंत्रों का पंडाल परिसर में सुरक्षा के दृष्टिकोण से रखना सुनिश्चित करें। जिला उपायुक्त ने कहा कि वैसे 10 पंडाल जो जिला प्रशासन द्वारा जारी गाइडलाइन का अनुपालन करते हुए ससमय विसर्जन सुनिश्चित करेंगें, उन्हें प्रशासन द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा । बैठक में उप विकास आयुक्त प्रदीप प्रसाद, एसडीएम धालभूम संदीप कुमार मीणा, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर नंदकिशोर लाल, अपर उपायुक्त सौरभ सिन्हा सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

लोहरदगा में जादूगर शंकर सम्राट शो का एसडीओ ने किया उद्घाटन, कहा

लोहरदगा में जादू का खेल होना बड़ी मनोरंजक की बात

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। लोहरदगा में जादूगर शंकर सम्राट का शो नगर भवन में 13 सितंबर से शुरू हो गया। मंगलवार को शो का उद्घाटन जिले के अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार लाल, प्रो शशि गुप्ता, प्रो स्नेह कुमार, हनुमान रजगड़िया समेत अन्य ने दीप जलाकर किया। मौके पर एसडीओ अरविंद कुमार लाल ने कहा कि कोरोना के बाद कोई बड़ा कार्यक्रम नहीं हो सका था। लोहरदगा में जादू का खेल होना बड़ी मनोरंजक की बात है। यहाँ के लोग जादू का खेल देखर इंद्रजाल की दुनिया से रूबरू होकर मनोरंजन का मजा ले सकेंगे। जादू एक कला है इसके माध्यम से लोगों हंसने-हंसाने का काम किया जाता है। उन्होंने कहा कि जादू

का खेल सिर्फ मनोरंजन की दृष्टि से देखना चाहिए। यह विज्ञान और योग आधारित कला है जिसके लिए जादूगर करने वाले लोग लगातार प्रयास से सीखे हैं। वही जादूगर शंकर सम्राट ने बताया कि प्रतिदिन दो शो का प्रसारण होगा जबकि रविवार को तीन शो दिखाया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन नए नए जादू का खेल दिखाया जाएगा। सबसे आकर्षक होगा करोड़ो साल पहले लुप्त हो चुके डायनोसोर जानवर का लाइव शो। वही पलक झपकते स्टैचू ऑफ लिबर्टी गायब, एक चलती पंखे से इंसार आर-पार, एक आरा मशीन से लड़के को दो टुकड़ा, मिश्र देश की प्रेम कहानी, जापान के भूत और भूतो का डांस , इन्छाधारी नागीन मार्डन आर्ट, हवा में तैरता हुआ बक्सा जिससे लड़की का प्रकट होना, जलते हुए आग के बीच से लड़की का प्रकट होना, चाईना वाल-स्केप, ट्यू जैक एण्ड टूसूटिंग लेडी और ऐसे अनेक छत्तीस बड़े आईटम समेत सैकड़ों तरह के जादू का रोमांच शो दिखलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि समाज में आज भी अंधविश्वास व्याप्त है और जादू के माध्यम से तरह-तरह के कलाओं को प्रदर्शित कर अंधविश्वास को समाज से दूर करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

अवैध पैथोलॉजी के जाल में फंसकर आर्थिक शोषण का शिकार हो रहे हैं सैंकड़ो मरीज

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। जिले में इन दिनों प्रतिदिन सैंकड़ों मरीज अवैध पैथोलॉजी के जाल में फंसकर आर्थिक शोषण का शिकार हो रहे हैं। इस अवैध पैथोलॉजी के कारोबार में समाज के नामी-गिरामी लोग भी शामिल हैं। लिहाजा इनके खिलाफ प्रशासन कार्रवाई करने से कतराती है। जिले के मरीजों की जिंदगी पूरी तरह भगवान के रहमो-करम पर निर्भर है। एक तरफ जहां जिले के सबसे बड़े अस्पताल सदर अस्पताल का हाल-बेहाल है। वहीं तो दूसरी तरफ झोला छाप डॉक्टरों की वजह से मरीजों की जान सांसत में है। ना केवल डॉक्टर बल्कि पैथोलॉजी और अल्ट्रासाउंड तक के मामले में भी पूरे जिले में फजीर्वाड़े का खेल चल रहा है। जिला मुख्यालय ही नहीं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी क्लिनिक और पैथोलॉजी की भरमार है। सूत्र बताते हैं कि जितने भी डॉक्टर प्रैक्टिस कर रहे हैं, उसमें लगभग 50 फीसदी चिकित्सकों के पास ही वैध डिग्री प्राप्त है। इसके अलावा अजब-गजब डिग्री भी बोर्ड पर लिखे होते हैं और विश्व विद्यालय या संस्था के भी नाम भी अजीबो-गरीब होते हैं। खास बात यह है कि इस फजीर्वाड़े के इस खेल से विभागीय अधिकारी ही नहीं जिला प्रशासन भी बखूबी वाकिफ है। बावजूद इसके ऐसे पैथोलॉजी के विरुद्ध ना तो कभी जांच की गयी है और ना ही इन पर नकेल कसने के लिये कोई कार्रवाई ही की गयी है। लिहाजा ये कहना वाजिब ही होगा कि सबों ने एक दूसरे को मौन समर्थन दे रखा है।

कर्मचारियों के लिए भी आवश्यक योग्यता अनिवार्य

जानकारी के मुताबिक केवल एमडी पैथोलॉजिस्ट या डीसीपी डिप्लोमा इन क्लिनिक पैथोलॉजी डिग्री धारक ही कोई पैथ लैब खोल सकते हैं। साथ ही पैथ लैब के कर्मचारियों के लिए भी आवश्यक योग्यता अनिवार्य है। सूत्रों की मानें तो अधिकतर पैथोलॉजी इंटर, बीए पास द्वारा चलाई जा रही है। जो वर्षों बाद डीएमएसटी में डिप्लोमा कर लेते हैं। जबकि इतनी योग्यता रखने वाला व्यक्ति का पैथलैब में सिर्फ सहयोगी का ही काम कर सकता है। कई पैथलैब में एमडी पैथोलाजिस्ट की जगह एमबीबीएस रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करते हैं। इतना ही नहीं उनका सहयोग करने के लिए साधारण टेकनीशियन होते हैं तो कभी-कभी साक्षर भी रहते हैं। गौरतलब है कि किसी भी पैथोलॉजिस्ट के लिए एक दिन में 20 से अधिक स्लाइड देख पाना संभव नहीं है लेकिन जिले में साधारण पैथोलॉजी के कर्मचारियों द्वारा सैकड़ों स्लाईड देखा जाता है।

जलजमाव होने से आवागमन में लोगों को हो रही परेशानी

भवनाथपुर। प्रखंड कार्यालय गेट पर जल जमाव से लोंगो को आवागमन में कीचड़ होने के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है सोमवार को प्रखंड कार्यालय में विधायक भानु प्रताप साही के द्वारा एक कार्यक्रम आयोजन में प्रखंड कर्मियों ने चंदा इकठा कर गढ़ा भरने के लिए मिटी डलवाया था जिससे कीचड़ व गढ़ा भरने के बजाय बारिश होने से और नारकीय स्थिति हो गई । कीचड़ के कारण दो पहिया वाहन चालक व पैदल आने जाने वालों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही अनाज गोदाम में बड़ी बड़ी गाड़ी से अनाज लाने व लेजाने से और भी काफी कीचड़ हो जा रहा है। बताते चलें कि प्रखण्ड परिसर के अंदर ही सामुदायिक स्वास्थ केन्द्र, कौशल विकास केंद्र, पशु स्साल, अनाज गोदाम, व प्रखंड अंचल भवन है। जिसमे सैकड़ो महिला पुरूषो को प्रतिदिन कार्य से आना जाना होता है।

अपराध पर अंकुश लगाने को लेकर ग्रामीण एसपी ने की बैठक

नवीन मेल संवाददाता

रांची। ग्रामीण इलाकों में बढ़ रहे अपराध पर अंकुश लगाने को लेकर मंगलवार को ग्रामीण एसपी नौशाद आलम ने क्राइम मीटिंग की। समाहरणालय स्थित कार्यालय में में हुई बैठक में ग्रामीण इलाकों में बढ़ रहे अपराध पर अंकुश और अपराधियों को सलाखों के पीछे भेजने का निर्देश दिया गया। बैठक में डीएसपी और थाना प्रभारियों से कहा गया कि दुर्गा पूजा को लेकर वे विशेष सतर्कता बरतें। जेल से छूट अपराधियों का सत्यापन करें। लंबित कांडों की समीक्षा करते हुए ग्रामीण एसपी ने अविलंब निष्पादित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि शराब व जुआ के अड्डे पर लगातार छापेमारी की जाए। अवैध रूप से शराब बेचने वालों पर कार्रवाई करें। बैठक में बेहतर कार्य करने वाले वैसे पुलिसकर्मियों को

सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपराधियों को जेल भेजकर उन्हें सजा भी दिलायी है।

इन्हें किया गया सम्मानित : मुख्यालय वन डीएसपी नीरज कुमार पुलिस, हिंदपीढ़ी थाना प्रभारी विनय कुमार सिंह, टाटीसिलवे थाना प्रभारी महेंद्र कुमार करमाली, पुलिस निरीक्षक राजेश कुमार सिन्हा, एसआई रंजीत कुमार मुंडा, तमाड़ थाने के एसआई मनिंद्र शर्मा, दशमफॉल थाना के अनूप कुमार, आरक्षी संतोष कुमार, संतोष रजक, रंजीत कुमार तिवारी, जितेंद्र कुमार।

पान-मसाला व गुटखा को लेकर सिमडेगा शहर में चला छापेमारी अभियान

पांच दुकानों से तंबाकू उत्पाद बरामद, वसूला गया जुर्माना

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। अनुमंडल पदाधिकारी महेन्द्र कुमार के निदेर्शानुसार खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी, सिमडेगा के द्वारा सिमडेगा जिला अन्तर्गत खाद्य प्रतिष्ठानों, दुकानों में छापामारी अभियान चलाया गया। इस दौरान तम्बाकू निकोटिन एवं मैग्नेशियम काबोर्नेट की अधिक्ता के दुष्प्रभावों के कारण प्रतिबंधित पान मसालों एवं तम्बाकू उम्पादक के प्रयोग एवं बिक्री पर रोक लगाने के लिए शहर के खाद्य कारोबारीयों के दुकान एवं गोदामों पर छापेमारी की गई। जिसमें साहिद अंसारी के, भटीटोली, मो इरफान, घोचोटोली, शम्भु कुमार साहु , आनंद नगर एवं अन्य दुकानों में खाद्य पदार्थ बेचने वाले भी सम्मिलित थे। छापेमारी के क्रम में खाद्य कारोबारी को दुकान से प्रतिबंधित पान मसाला एवं 5 दुकानों में तम्बाकू उत्पाद बरामद हुआ। जिसे कोटपा एक्ट के

तहत प्रत्येक उल्लंघनकर्ता के उपर 200 के हिसाब से कुल 1000 रुपए का जुमार्ना लगाया। अनुमंडल पदाधिकारी, सिमडेगा के द्वारा बताया गया कि आय दिन आम सूचना, समाचार पत्रों के माध्यम से समय-समय पर खाद्य कारोबारियों को लाईसेंस लेने की अनिवार्यता से वंचित कराया जाता रहा है किन्तु कुच्छेक कारोबारियों के द्वारा मनमाने ढंग से खाद्य कारोबार धडले से किया जा रहा है। अनुमंडल पदाधिकारी , सिमडेगा के द्वारा कहा गया कि आगामी त्योहारो के मदेनजर छापामारी अभियान निरंतर जारी रहेगा । त्योहारों के समय खाद्य कारोबारियों के द्वारा भोले - भाले लोगों को एक्सपायर खाद्य सामग्री बेच दिया करते है तथा खाद्य सामग्रीयों के मात्रा को बढ़ाने के लिए पुरानी सामग्रीयों में इसकी मिलावट उच्च स्तर पर की जाती है। इस पर अंकुश लगाने हेतु जिला प्रशासन लगातार कटिबद्ध है अनुमंडल पदाधिकारी, सिमडेगा ने लोगो से भी अपील किया है कि मानक के अनुरूप खाद्य पदार्थों का सेवन करे एवं आस-पास में यदि कोई भी खाद्य कारोबारी अवैध रूप से खाद्य कारोबार करें तो इसकी सूचना खाद्य सुरक्षा विभाग को दें। मौके पर खाद सुरक्षा पदाधिकारी सुश्री अपूर्वा मिंज सिमडेगा थाना के एएसआई प्रमोद कुमार एवं खाद्य सुरक्षा विभाग के कर्मी उपस्थित रहे।

जनता दरबार में 90 वर्षीय बुजुर्ग ने लगाई यूको बैंक से पूरा पेंशन दिलाने की गुहार

नवीन मेल संवाददाता

धनबाद। जिला दंडाधिकारी सह उपायुक्त संदीप सिंह ने अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता दरबार में जिले के विभिन्न क्षेत्र से आए लोगों की समस्याओं को सुना। समस्या के समाधान के लिए संबंधित पदाधिकारी को निर्देशित किया। जनता दरबार में एक 90 वर्षीय बुजुर्ग ने उपायुक्त को बताया कि उन्हें यूको बैंक की लुबी सर्कुलर रोड शाखा से नियमित रूप से पेंशन मिल रहा था। 17 जुलाई 2022 को वे 90 वर्ष के हुए। इसके बाद यूको बैंक उन्हें पूरा पेंशन नहीं दे रहा है। उन्होंने उपायुक्त से पूरा पेंशन दिलाने की गुहार लगाई। इसी प्रकार निरसा से आए एक व्यक्ति ने बताया कि उनकी रैयती जमीन को निरसा अंचल कार्यालय द्वारा गैर आबाद सूची में डाल दिया है। सुधार के लिए उन्होंने कई बार अंचल कार्यालय का चक्कर लगाया। परंतु समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

लाल बंगला से आए व्यक्ति ने बताया कि माडा से नक्शा स्वीकृत कर अपना मकान बनाया है। जिसका 90ः निर्माण पूरा हो चुका है। उसी क्षेत्र के एक साधु ने सरकारी पीसीसी रोड पर दीवार खड़ी करके उनके आवागमन का रास्ता बंद कर दिया है। भूदा से आए एक व्यक्ति ने बताया कि वे अपनी जमीन में स्कूल खोलना चाह रहे हैं। लेकिन उन्हें ऐसा करने से रोका जा रहा है। जबकि एक अन्य व्यक्ति उसकी जमीन पर खुलेआम काम कर रहा है। अंचल कार्यालय और थाना में कई बार दौड़ लगाने के बाद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है। जनता दरबार में पुटकी से आए एक व्यक्ति ने बताया कि विगत 18 महीने से उनका ऑनलाइन पंजी टू में नाम दर्ज नहीं हुआ है।

न्यूज गैलरी

फुटपाथ पथ विक्रेताओं को स्वनिधि पहचान बोर्ड एवं स्वनिधि पत्र का वितरण

कोडरमा। नगर पंचायत कोडरमा क्षेत्र अंतर्गत 129 फुटपाथ पथ विक्रेताओं को मंगलवार को स्वनिधि पहचान बोर्ड एवं स्वनिधि पत्र का वितरण नगर पंचायत कोडरमा के प्रशासक जितेंद्र कुमार जैसल ने किया। उन्होंने बताया कि सरकार ने फुटपाथ पथ विक्रेताओं के लिए पीएम स्वनिधि योजना की शुरूआत किया है, जिसने पथ विक्रेताओं को कोरोना संकट के समय संबल देने का काम किया है। स्वनिधि योजना न केवल बैंक से काफी कम ब्याज दर पर 10 हजार रुपए तक का ऋण दिला रही है, बल्कि समय से ऋण वापसी करने पर ब्याज दर में 7 प्रतिशत की छूट भी दे रही है। इसके अलावे डिजिटल लेनदेन करने पर 100 रुपए प्रति माह का कैशबैक भी मिलता है। पहले ऋण के भुगतान के बाद 20 हजार का दूसरा ऋण बैंक से आसानी से मिल जाता है एवं दूसरा ऋण 20 हजार के भुगतान के पश्चात 50 हजार का ऋण प्रदान किया जाता है।
नगर पंचायत कोडरमा के 195 पथ विक्रेताओं को 10 हजार रुपए, 32 पथ विक्रेताओं को 20 हजार तथा एक पथ विक्रेता को 50 हजार का ऋण बैंक के द्वारा दिया गया है। उक्त अवसर में नगर पंचायत कोडरमा के नगर मिशन प्रबंधक संजीत कुमार साहु, सामुदायिक संगठनकर्ता रश्मि कुमारी सिन्हा एवं पथ विक्रेता उपस्थित थे।

राजद मजबूत कर रहा संगठन जिलाध्यक्ष का चुनाव 18 को

कोडरमा। राष्ट्रीय जनता दल कोडरमा में सांगठनिक गतिविधि को सक्रिय कर संगठन को धारदार बनाने में जुट गई है। कोडरमा जिले के विभिन्न प्रखंडों और नगर पंचायत, नगर परिषद में प्रखण्ड व नगर अध्यक्ष का चुनाव संपन्न कराया जा रहा है। प्रखण्ड और नगर पंचायत, नगर परिषद में चुनाव कराने को लेकर पार्टी ने पर्यवेक्षक नियुक्त किया था। जिनकी देखरेख में निष्पक्ष व पार्टी संविधान का पालन करते हुए चुनाव कराए गए। नगर पंचायत, डोमचांच, नगर पंचायत, कोडरमा को छोड़कर अन्य जगहों पर चुनाव संपन्न हो चुके है। चुनाव पर्यवेक्षकों की अगुवाई में हुए चुनाव में पार्टी के जुझारू कार्यकत्ताओं को प्रखण्ड अध्यक्ष, नगर अध्यक्ष की कमान सौंपी गई है। सतगावां- बिनोद यादव, डोमचांच- पप्पू यादव, मरकच्चो- विजय सिंह, झुमरीतिलैया नगर- मो नसीम, कोडरमा- रामबचन यादव, जयनगर- मुमताज आलम। वहीं डोमचांच नगर पंचायत और कोडरमा नगर पंचायत का चुनाव 14 सितंबर को होगा। राजद जिलाध्यक्ष रामधन यादव ने निर्वाचित प्रखण्ड व नगर परिषद क्षेत्र अध्यक्ष को बधाई दी है। साथ ही चुनाव संपन्न कराने वाले पर्यवेक्षको के प्रति भी आभार जताया है। उन्होंने बताया कि कोडरमा नगर पंचायत, डोमचांच नगर पंचायत का भी चुनाव 14 सितंबर को संपन्न करा लिया जाएगा। वहीं जिलाध्यक्ष का चुनाव 18 सितंबर को किया जाएगा। श्री यादव ने कहा कि राजद विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी के जनाधार को विशाल रूप देने के लिए काम कर रही है। पार्टी समर्थकों और जुझारू कार्यकर्ताओ के बल पर पार्टी हर बूथ पर मजबूत होगी।

उपायुक्त ने लोगों की सुनी समस्याएं

कोडरमा। मंगलवार को उपायुक्त आदित्य रंजन ने अपने कार्यालय कक्ष में जिले के सुदूरवर्ती व शहरी क्षेत्रों से अपनी समस्याओं को लेकर मिलने आए लोगों से मुलाकात की एवं सभी के समस्याओं से अवगत हुए। जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये फरियादियों ने भूमि, शिक्षा, प्रमाण पत्र, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), राजस्व, मुआवजा राशि, आवास योजना का लाभ दिलाने, राशन कार्ड से संबंधित विभिन्न शिकायतों सहित अन्य समस्याओं से उपायुक्त को अवगत कराया। जिसके उपरांत उपायुक्त ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को जल्द से जल्द समस्याओं का निराकरण करते हुए प्रतिवेदन उपायुक्त कार्यालय में समर्पित करने का निदेश दिया।

चक्रवाती तूफान से हुई बारिश ने कई परिवारों का उजाड़ा आशियाना।

बरकट्ठा। प्रखंड में चक्रवाती तूफान के कारण हुई बारिश ने भारी तबाही मचाई है। प्रखंड के बेड़ोकला पंचायत अंतर्गत ग्राम चाँदगढ़ निवासी ताहिर अंसारी,अकबर अंसारी,फिरोज अंसारी,हसमत अंसारी,कयामत अंसारी का कच्चा मकान बारिश के कारण ध्वस्त हो गया। इसी क्रम में शिलाडीह निवासी मंजू देवी पति गोविंद भुईयाँ का मिट्टी का घर रात्रि में अचानक ऊपर से ढह गया जिससे अंदर में सोए हुए लोग बाल-बाल बचे तथा परिवार व बच्चों को किसी प्रकार से बाहर निकाल कर दूसरे के घर में रात बिताई।विदित हो कि क्षेत्र भर में पिछले 48 घंटों से लगातार बारिश के कारण जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। लोगों को घर से निकलना मुश्किल हो रहा है ।भारी बारिश के कारण बिजली व्यवस्था भी चरमरा गई है।लोग ना ही टीवी में समाचार देख पा रहे हैं और ना मोबाइल चार्ज कर पा रहे हैं।मौके पर स्थानीय मुखिया प्रतिनिधि देवेंद्र पांडेय,भाजपा मंडल महामंत्री रवीन्द्र शर्मा ,इंद्रजीत यादव,रामजी पांडेय, मुस्तकीम अंसारी,मुख्तार अंसारी उपस्थित थे।वहीं मुखिया प्रतिनिधि देवेंद्र पांडेय ने पीड़ित परिवारों से मिलकर हर सम्भव मदद का भरोसा दिया।

जांच में 4 वाहनों पर हुई कार्रवाई

कोडरमा। जिला परिवहन पदाधिकारी भागीरथ प्रसाद के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा दल द्वारा तिलैया बाईपास सर्विस रोड और चन्दवारा थाना में सघन वाहन जांच अभियान चलाया गया। जांच के क्रम में कुल 4 गाड़ियों को (बिना ड्राइविंग लाइसेंस, बिना परमिट, डैंजरस ड्राइविंग, प्रेशर हॉर्न व बिना फिटनेस इत्यादि) के तहत कार्रवाई की गयी। बाईपास सर्विस रोड में अनधिकृत खड़े वाहनों पर भी कार्रवाई की गयी। जिला परिवहन पदाधिकारी ने बताया कि वाहन जांच अभियान निरंतर जारी रहेगा।

कोडरमा में जिला परिषद बोर्ड की हुई बैठक

सड़क मरम्मती कार्य में अनियमितता की होगी जांच

- अमृत सरोबर योजना के तहत तालाब निर्माण करने का निर्णय
- जीएम लैंड की जमीन पर जिला परिषद द्वारा दुकान का निर्माण कराने का प्रस्ताव

नवीन मेल संवाददाता

कोडरमा। जिला परिषद बोर्ड की बैठक मंगलवार को सभागार बोर्ड अध्यक्ष रामधन यादव की अध्यक्षता में हुई। बैठक में बोर्ड उपाध्यक्ष निर्मला देवी, डीडीसी आलोक मिश्रा, पंचायती राज पदाधिकारी पारसनाथ यादव, जिला अभियंता चंद्रशेखर प्रसाद और बोर्ड के सभी जिप सदस्य मौजूद थे। बोर्ड की बैठक में राजस्व बढ़ाने समेत बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं का निरीक्षण संबधित चर्चा के बाद प्रस्ताव पारित किया गया। सतगावां राजावर डाक बंगला का किराया निर्धारण 25 हजार रुपया प्रतिवर्ष करने, डीडीसी आवास के समीप नव निर्मित पार्क का बंदोबस्ती का अनुमानित राशि 2 लाख सालाना करने, सेवानिवृत कर्मी महावीर राम की सेवा एमटीएस के तौर पर जारी रखने, टाइड फंड के पेयजल हेड में शेष राशि से योजनाओं को अमृत सरोबर योजना के तहत तालाब निर्माण करने, झुमरीतिलैया थाना के सामने जिला परिषद डाक बंगला को पीपीपी मोड से कॉमर्शियल काम्प्लेक्स बनाने, झुमरी मौजा के जीएम लैंड पर मार्केटिंग काम्प्लेक्स का निर्माण कराने, सीएच स्कूल के पास जीएम लैंड की जमीन पर जिला परिषद द्वारा दुकान का निर्माण कराने का प्रस्ताव लिया गया। वहीं अनुमंडल कार्यालय के समीप जिला परिषद कार्यालय की जमीनपर बने सरकारी भवन का मूल्यांकन कर भवन को ध्वस्त कर नए स्तर से जिप कार्यालय का निर्माण कराया जाएगा। सतगावां और मरकच्चो में बस स्टैंट निर्माण को लेकर जमीन उपलब्धता को लेकर अंचल से प्रस्ताव मांगी जाएगी। पाण्डेयडीह जाने वाली मोड़ के समीप मंदिर के बगल में सामुदायिक भवन में दुकान बनाकर रेंट पर लगाने का प्रस्ताव लिया गया। बैठक में जिप सदस्य महादेव राम, नीतू कुमारी, महेंद्र यादव, शांति प्रिया, लक्ष्मण यादव, नीतू यादव, केदार यादव, रीता देवी, गुड़िया देवी समेत सभी प्रखंडों के प्रमुख, सांसद विधायक प्रतिनिधि और विभिन्न विभागों के पदाधिकारी मौजूद थे। इसके अलावे जिप सदस्यों ने अपने अपने क्षेत्र के समस्याओं को बैठक में रखा। इसमें महतो आहरा से बेंदी तक सड़क मरम्मती के कार्य मे संवेदक की ओर से बरती जा रही अनियमितता को लेकर जांच टीम का गठन कर सड़क का निरीक्षण करने का निर्णय बोर्ड में पारित किया गया।

राईस मिलर व बकायेदार पैक्स अध्यक्षों के साथ प्रबंध निदेशक ने की बैठक

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। मंगलवार को यतींद्र प्रसाद,प्रबन्ध निदेशक, झारखण्ड राज्य खाद्य आपूर्ति निगम लिमिटेड,रॉची के द्वारा हजारीबाग,चतरा,कोडरमा राईस मिलरों एवं बकायेदार पैक्स अध्यक्षों के साथ परिसदन, हजारीबाग में मंगलवार को धान सुपुर्दगी एवं सी0एम0आर0 सुपुर्दगी से संबंधित समीक्षात्मक बैठक की गई।
बैठक में विभिन्न पैक्सों के द्वारा ससमय राइस मिलों को धान नहीं भेजे जाने के संबंध में नाराजगी जाहिर करते हुए कारणों की जानकारी मांगी। उन्होनें सख्त चेतावनी देते हुए तीन दिनों के अंदर पैक्स अध्यक्ष को शेष बचे धान को राईस मिलरों को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने इस पर अमल नही करने पर पैक्स अध्यक्षों के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज करते हुए वसूली हेतु अग्रेत्तर कार्रवाई करने की बात कही। मौके पर राईस मिलरों को ससमय सीएमआर भारतीय खाद्य निगम को उपलब्ध कराने हेतु निर्देश दिया गया।
ह्लहजारीबाग के निम्न पैक्स द्वारा शेष बची धान का आंकड़ाह्व
दरिया पैक्स 3718.87 क्विंटल, रतनपुर पैक्स 1528.78 क्विंटल, मनैया पैक्स 1804.86 क्विंटल, रामदेव खरिका पैक्स 3096.47 क्विंटल, गर्रीकला पैक्स 883.12 क्विंटल, आंगो चुरचू 620.92 क्विंटल, हजारीबाग व्यापार मंडल 3264.49 क्विंटल, झापा पैक्स 1515.56 क्विंटल इचाक ग्रीन पैक्स 1847.96 क्विंटल एवम लोहंडी पैक्स 6259.32 क्विंटल धान को अबतक राइस मिलों में नहीं भेजा है।
बैठक में हजारीबाग, चतरा, रामगढ़ एवं कोडरमा जिला के जिला आपूर्ति पदाधिकारी एवं मंडल प्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम, धनबाद उपस्थित थे।

भाजपा युवा नेता ने उपायुक्त और जिला शिक्षा पदाधिकारी से की मुलाकात

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। उत्क्रमित उच्च विद्यालय सिकनी एवं अन्य विद्यालयों के प्रतिनिधिमंडल ने भाजपा रामगढ़ विधानसभा के युवा नेता राजीव जायसवाल के नेतृत्व में मंगलवार को उपायुक्त माधवी मिश्रा, जिला शिक्षा पदाधिकारी नीलम कुमारी एवं जिला शिक्षा अधीक्षक संजीत कुमार से मुलाकात किया। मौके पर उनके द्वारा विद्यालय में नए कमरा निर्माण करवाये जाने की मांग की गई । उन्होंने बताया कि उत्क्रमित उच्च विद्यालय सिकनी सहित अन्य विद्यालयों में कमरों की कमी के कारण बच्चों को पठन पाठन में कठिनाई का सामना करना पड़ता रहा है। । बताया कि उक्त विद्यालयों में बच्चों की संख्या काफी कम है, विद्यालय में भवन बच्चों के अनुपात में नहीं है। जिससे बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में दिक्कत हो रही है। भाजपा के युवा नेता ने बताया कि इस संबंध में उपायुक्त एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी ने कारवाई करने का अश्वासन दिया है। मौके पर विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष बलदेव हज्जाम, बैजंती देवी, राजेश महतो, पूनम देवी, संजती देवी, पवन कुमार पटेल आदि मौजूद थे।

डीसी के जनता दरबार में फरियादियों ने गिनायी अपनी-अपनी समस्याएं

सभी आवेदनों को संबंधित अधिकारियों को किया गया अग्रसारित

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। उपायुक्त नैंसी सहाय ने मंगलवार को जनता दरबार का आयोजन कर आमजनो से मिली एवं उनकी समस्याओं को जाना। साप्ताहिक आयोजित होने वाले जनता दरबार में जिले वासियों की समस्याओं के निवारण के लिए उपायुक्त के समक्ष लगभग 02 दर्जन से अधिक आवेदन आए। जिले के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों के समस्याओं से निष्पादन की आस लिए आए नागरिकों के फरियाद को सुन उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को जांचोपरांत न्याय संगत कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उपायुक्त वेश्म में आयोजित जनता दरबार में बीपीएल, धान का समर्थन मूल्य, एएनएम नियुक्ति, जमीन, पीएम आवास, अधिग्रहण, रोजगार, मनरेगा, भूमि, म्यूटेशन, रजिस्ट्री,राष्ट्रीय राजमार्ग के मुआवजा, पेंशन,भूमि अधिग्रहण, आवास, राशन आदि समस्याओं से संबंधित आवेदन आए तथा उन आवेदनों को मार्क कर संबंधित अधिकारियों को हस्तांतरित करते हुए निष्पादन के आदेश दिए।

पीएम इंटरनेशनल स्कूल एंड कॉलेज में नियमित डांस कक्षा का शुभारंभ

बरकट्ठा। प्रखंड के कपका स्थित सीबीएसई पैटर्न पर आधारित विद्यालय पीएम इंटरनेशनल स्कूल एंड कॉलेज में नियमित डांस कक्षा का प्रारंभ किया गया। संस्था के निदेशक सत्येंद्र प्रसाद ने बताया कि राज्य स्तरीय एवं राष्ट्र स्तरीय डांस प्रतियोगिता जैसे डांस इंडिया डांस, झलक दिखला जा आदि प्रतियोगिता में तैयारी करवाने हेतु विद्यालय में यह कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को भी अपना प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। डांस शिक्षक मुकेश कुमार ने बच्चों को तारीफ करते हुए बताया कि यहां के बच्चे अति प्रतिभाशाली है ।बहुत जल्द इन बच्चों को राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ऐसे प्रतियोगिताओं में शामिल कराने का प्रयास किया जाएगा। संस्था के प्रबंध निदेशक वीरेंद्र प्रसाद ने कहा, आज हमारे क्षेत्र में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है बस उन्हें थोड़ा प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

सोनपुरा दुर्गा पूजा कमेटी का गठन, सुरेंद्र बने अध्यक्ष

बड़कागांव। प्रखंड के कांडतरी पंचायत अंतर्गत सोनपुरा में दुर्गा पूजा धूमधाम से मनाने को लेकर कमेटी का गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार दांगी, उपाध्यक्ष गुलेश्वर कुमार, सचिव धर्मेंद्र कुमार, उप सचिव मुकेश कुमार, कोषाध्यक्ष जुगल किशोर राणा, संगठन मंत्री मुकेश कुमार ठाकुर, उप संगठन मंत्री गुड्डू राज, मनोरंजन मंत्री सुदामा कुमार, कार्यकारिणी सदस्य गणेश कुमार, रंजीत कुमार, कुलदीप कुमार, रोशन ठाकुर, सोनू ठाकुर, प्रकाश कुमार, अजीत कुमार, चंद्रिका कुमार, कारू राम, मेवा राम, नरेश राम, उदय राम, लालो महतो एवं रणधीर ठाकुर आदि चुने गए।

हजारीबाग के चार युवाओं को बॉडी बिल्डिंग, डेड लिफ्ट और बेंच प्रेस में मेडल

हजारीबाग। रामगढ़ और गिरिडीह में हुए बॉडीबिल्डिंग एंड मेंस फिजिक चैंपियनशिप में चार युवाओं ने गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल लाकर हजारीबाग का नाम रोशन किया है। बता दें की इस चैंपियनशिप में बेंच प्रेस, डेड लिफ्ट और मैंस फिजिक्स यानी बॉडीबिल्डिंग करवाई गई जिसमें अल्टीमेट फिटनेस के चार युवा दानिश इकबाल, दिवाकर यादव, अभिषेक वर्मा और प्रमोद कुमार ने मेडल प्राप्त किया है। बताया जाता है कि रामगढ़ में हुए चैंपियनशिप में प्रमोद कुमार ने डेड लिफ्ट और बेंच प्रेस में गोल्ड और ब्रॉन्ज मेडल प्राप्त किया है। वहीं अभिषेक कुमार ने बेंच प्रेस में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। यह आयोजन पीआई फेडरेशन रामगढ़ के द्वारा करवाई गई थी। वहीं गिरिडीह के सरिया में आयोजित चैंपियनशिप में दिवाकर यादव ने बॉडीबिल्डिंग में 55 से 60 वर्ग बॉडी वेट में सिल्वर मेडल प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे हैं। वहीं दानिश इकबाल ने बॉडी वेट 65 से 70 वर्ग में सिल्वर मेडल प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे हैं। इन सभी युवाओं ने बताया कि हमें आगे नेशनल खेलना है इसके लिए हम भरपूर तैयारी कर रहे हैं और आने वाले फरवरी माह में रांची में होने वाले चैंपियनशिप में हम हिस्सा लेंगे। उन्होंने अन्य युवाओं से अपील की है कि आप सभी जी-तोड़ मेहनत करें जिससे की आपको लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। वहीं इनके ट्रेनर चंद्रेश्वर कुमार ने बताया कि यह सब कुछ प्रॉपर डाइट और एक्सरसाइज से ही संभव हो पाया है। हम इन्हें नेशनल के लिए तैयार कर रहे हैं। आने वाले दिन में हजारीबाग के युवा नेशनल में जाएंगे और हजारीबाग का नाम रौशन करेंगे।

जीटी रोड में निकले कील ट्रक के टायर में घुसी, आवाज से दहशत में लोग

बरकट्ठा। बरकट्ठा जीटी रोड स्थित मेवालाल दुकान के समीप मंगलवार सुबह एक ट्रक संख्या एच आर 46 ि7182 के टायर में कील घुसने से एक साथ चार टायर बम की तरह फटे जिससे आसपास के लोग कुछ देर के लिए स्तब्ध रह गए। टायर फटने से बम ब्लास्टिंग की तरह आवाज निकली तथा पूरा धूल उड़ने लगा। वातावरण साफ होने पर लोगों ने देखा कि ट्रक का टायर फटा है। मालूम हो कि बरकट्ठा में फ्लाईओवर निर्माण कार्य के दौरान सड़क में सेफ्टी के लिए लोहे का रॉड और पाइप गाड़ा गया था। निर्माण एजेंसी ने रॉड व पाइप को काट लिया और उसका कील लगभग दो-तीन इंच की वहीं छोड़ दिया। स्थानीय निवासी मिथिलेश भारती ने बताया की एक सप्ताह पूर्व भी एक टेलर वाहन का टायर कील घुसने से फट चुका है। कहा कि इन कीलों के कारण अनगिनत गाड़ियों के टायर फट चुके हैं। विदित हो कि बरकट्ठा में करीब डेढ़ किलोमीटर तक सड़क किनारे कील निकल हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि सड़क निर्माण एजेंसी के लापरवाही से ऐसी घटना हो रही है। कील के वजह से कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकती है ।कहा कि फ्लाईओवर निर्माण कार्य महीनों से बंद है। इसके शीघ्र निर्माण नहीं होने से वाहन समेत लोंगो को भारी परेशानी हो रही है। लोंगो ने एनएचएआइ से ठेकेदार बदलकर फ्लाईओवर का निर्माण शीघ्र कराने की मांग की है।

लोन के प्रति जागरूकता शिविर का आयोजन

पीएम रोजगार सृजन लोन संबंधित दी गयी जानकारी

- वेज होटल, वुडक्राफट, अगरबत्ती निर्माण संबंधी लोन की दी जानकारी
- कम से कम चार पीएमईजीपी लोन देने का दिया गया निर्देश

नवीन मेल संवाददाता

बरकट्ठा। प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में जिला उद्योग केंद्र के तत्वावधान में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम को लेकर जागरूकता शिविर और प्रखंड स्तरीय बैंकर्स समिति की बैठक हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ एलडीएम सुधाकर पांडेय,बीडीओ कृतिबाला लकड़ा, जिला उद्यमी पदाधिकारी श्रीश त्रिपाठी, प्रमुख रेणु देवी, उपप्रमुख सुरजी देवी, प्रखंड समन्वयक छोटीलाल प्रसाद, कुटीर उद्योग बोर्ड एंव विभिन्न बैंक से शाखा प्रबंधक मौजूद थे। सभी शाखा प्रबंधकों को अग्रणी जिला प्रबंधक द्वारा कम से कम चार पीएमईजीपी लोन करने को कहा गया है। शिविर मे प्रधानमंत्री रोजगार सृजन लोन संबंधित विस्तृत जानकरी लोगों को दी गई। शिविर में बताया गया कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम लोन में मैन्युफैक्करिंग,सेवा क्षेत्र से संबंधित उद्योग शुरू करने के लिए लोन दी जाती है। बरकट्ठा में पेपर प्लेट निर्माण, साईबर कैफे, वेज होटल, वुडक्राफट, अगरबत्ती निर्माण इत्यादी संबंधित लोन ग्रामीण को दी जा रही है। जिला उद्योग केंद्र के निर्देश पर मुख्यमंत्री लघु कुटीर बोर्ड के प्रखंड समन्वयक हर प्रखंड में प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम लोन संबंधित कार्य कर रहे हैं। अग्रणी जिला प्रबंधक ने लोगों को पीएमईजीपी लोन संबंधित बिचौलिए से सावधान रहने को कहा।

पपाहरा में युवक की संदेहास्पद मौत, पुलिस जांच में जुटी

मरकच्चो। थाना क्षेत्र के ग्राम पपाहरा में एक युवक की मृत्यु संदेहस्पद में सोमवार रात को घर पर हो गई। मृतक की पहचान पपहरा निवासी प्रयाग महतो के पुत्र लक्ष्मण यादव उर्फ प्यारे लाल यादव (उम्र 35 वर्ष) के रूप में की गई। घटना के बाद स्वजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। बताया जाता है कि लक्ष्मण यादव उर्फ प्यारे लाल यादव कई महीनों से घरेलू विवाद के कारण काफी तनाव में रहा करता था। शराब का भी सेवन किया करता था। घर मे विवाद को लेकर 2 दिन पूर्व थाना में आवेदन भी दिया गया था। जानकारी अनुसार सोमवार शाम को प्यारे लाल यादव शराब पीकर घर गया घर में घरवालों के साथ कहा-सुनी व झड़प हो गयी। इस दौरान उनके आंख के समीप चोट भी लगी। घरवालो ने उसका इलाज भी निजी क्लिनिक में करवाया उसके बाद घर आकर उसकी मौत हो गयी।

झुमरीतिलैया के रोहित भाटिया का असाधारण प्रतिभा

'द बुक ऑफ डेड : कैन ए बुक ब्रिंग डिस्ट्रक्शन' के नाम से लिखा उपान्यास, पिता को किया समर्पित

नवीन मेल संवाददाता

कोडरमा। कहते हैं कि आज की गई मेहनत आपके आने वाले कल को बेहतर बनाती है। ठीक ऐसा ही हुआ है झुमरीतिलैया के अशोक भाटिया जी के साथ, जिनकी असाधारण परिश्रम ने आज उनके पुत्र रोहित भाटिया को ऐसी प्रगाढ़ सफलता प्रदान की हैं। झुमरीतिलैया के निवासी अशोक भाटिया के पुत्र रोहित भाटिया ने अमेजॅन पर अपनी पहली पुस्तक लॉन्च की, नाम दिया द बुक ऑफ डेड : कैन ए बुक ब्रिंग डिस्ट्रक्शन? अशोक भाटिया की डायरी लिखने की आदत को भले ही सब ने इतनी तवज्जो न दी हो कभी, पर उनकी इस आदत ने रोहित को पठन पाठन में रुचि जागृत की और फिर कुछ ऐसा हुआ साल 2011 में की फेसबुक पर राइटिंग चैलेंज के बैनर ने उनके जीवन में हलचल मचा दी। रोहित ने अपने पिता की तरह लिखने का प्रयास किया और कहते है न हर चीज के दो पहलू होते है वैसे ही रोहित ने सोशल मीडिया को बेहतरीन रूप से इस्तेमाल किया और अपनी पहचान बनाई। आज उनके सफलता के पर्चम बुलंदियों पर लहरा रहे हैं। वर्तमान में 260 से भी अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों की कहानियों को पहचान दे चुके है हमारे झुमरीतिलैया के रोहित भाटिया। उनके अपने प्रकाशन से कुछ अप्रतिम किताबों के भी अभिवेचना हुई है जैसेः ₹टाइड्स ऑफ लाइफ₹, श्रुताकृतिः सीता की बहन, गॉडेस ऑफ फ्यूरी₹ जैसे किताबें बेस्ट सेलर के रूप में अपनी नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रही हैं। अपने नए हॉरर बुक के बारे में रोहित ने बताया की बीते 2 साल से वो इस विषय पर अनुसंधान कर रहे थे, और अंतः उन्हें सफलता प्रप्त हुई। यह किताब हॉरर जॉनर में है, और अमेजन पर उपलब्ध है। पेशे से रोहित भाटिया एक बिजनेस मैन है, और कोलकाता में अपनी खुद की प्रकाशन 'द लिटिल बुकटिक हब' चलते हैं। लॉक डाउन में खोली गई कंपनी ने अभी तक 1300 से भी अधिक राइटर्स की पुस्?तक को प्रकाशित किया है। अब वो अपनी आशावादी नजरों से आगे की सफलता की प्रतीक्षा कर रहे हैं और सब की हिस्सेदारी की उम्मीद करते हैं।

न्यूज गैलरी

जिला परिषद बोर्ड की मासिक बैठक 20 सितम्बर को

सिमडेगा। जिला परिषद बोर्ड की मासिक बैठक आगामी 20 सितम्बर को जिला परिषद कार्यालय सभागार में दिन के 11:30 आहूत की गई है जानकारी देते हुए जिला परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी डीडीसी अरुण वालटर सांगा ने बताया है कि जिला परिषद अंतर्गत संचालित कार्य एवं विभिन्न प्रकार के बिंदुओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा की जाएगी उन्होंने उक्त बैठक के लिए सभी जनप्रतिनिधि जिला परिषद सदस्य एवं विभागीय अधिकारियों को उपस्थित रहने की अपील की है।

अच्छी बारिश की कामना को लेकर बरगद एवं शिवालय में ग्रामीणों ने किया जलाभिषेक

कुरडेग। कूटमाकच्छार के ग्रामीणों ने मंगलवार को शिवालय एवं बरगद के पेड़ में सामूहिक जलाभिषेक कर अच्छी बारिश की कामना की। मौके पर गांव के सभी महिलाओं और पुरुषों ने सुबह एकजूट हुए इसके बाद पांच किलोमीटर दूर दरीडीह जंगल में स्थित देवस्थान सरोवर पहुंचे। जहां एक साथ स?नान करने के बाद कलश में जल लेकर बाजे गाजे के साथ कूटमाकच्छार शिव मंदिर पहुंचे जहाँ शिवलिंग पर सभी ने जलाभिषेक किया जिसके बाद जगन्नाथ मंदिर परिसर में स्थित बरगद पेड़ के पास पहुंचे जहां गांव के पाहन द्वारा विधि विधान से पूजा अर्चना की गई। इसके बाद सभी ने एक एक कर बरगद के पेड़ में जलाभिषेक किया। साथ ही क्षेत्र में अच्छी बारिश की कामना की। ग्रामीणों ने बताया कि क्षेत्र में पर्याप्त बारिश नहीं होने से की गई खेती खतरे में है ' इसको लेकर उन?होंने सामूहिक बैठक कर बारिश की कामना से जलाभिषेक करने का निर्णय लिया था।

यूथ कांग्रेस के पदधारियों को विधायक भूषण बाड़ा ने किया सम्मानित

सिमडेगा। विधायक भूषण बाड़ा ने मंगलवार को सिमडेगा पहुंचे युवा कांग्रेस के प्रदेश सह प्रभारी दिनबंधु शर्मा एवं युवा प्रदेश अध्यश अभिजीत राज को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। इसके अलावे उनके साथ मौजूद अन्य यूथ कांग्रेसियों को भी उन्होंने सम्मानित किया। विधायक ने कहा कि अधिक से अधिक युवाओं को संगठन से जोड़ें। किसी भी राजनीतिक दल को शिखर पर पहुंचाने में युवाओं का अहम योगदान होता है। क्योंकि आप जैसे नौजवान ही हैं जो किसी भी देश की राजनीतिक में, देश के विकास में अहम योगदान डालते हैं। विधायक ने भाजपा सरकार के राज में देश मे फैली नशाखोरी और बेरोजगारी से तंग हुआ युवाओं को एकजुट होकर आगामी चुनाव में भाजपा का सफाया करके देश मे कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए कार्य करने का आह्वान किया।कहा कि पार्टी में युवाओं की संख्या अधिक हो इसके लिए अभी से ही जुट जाएं। ताकि पार्टी एवं संगठन को मजबूती मिले। मौके पर जिप सदस्य जोसिमा खाखा भी उपस्थित थी।

लर्निंग लाइसेंस को लेकर कुरडेग प्रखण्ड कार्यालय में विशेष शिविर का हुआ आयोजन

कुरडेग। परिवहन विभाग के आदेशानुसार जिला परिवहन पदाधिकारी ओम प्रकाश यादव के निर्देश पर मंगलवार को प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय के सभागार में लर्निंग लाइसेंस बनाने हेतू विशेष शिविर का आयोजन किया गया। लर्निंग लाइसेंस बनाने को लेकर लगाए गए इस विशेष शिविर में आवेदकों को ऑन स्पॉट लर्निंग लाईसेंस दिया गया। इसके पुर्व सभी आवेदनों का वेरिफिकेशन किया गया जिसके पश्चात सभी का डिजिटल फोटो और हस्ताक्षर कराया गया। प्ररवण्ड कार्यालय कुरडेग में लगाये गए विशेष शिविर के संबंध में प्रधान लिपिक राम निवास मिश्रा ने बताया कि परिवहन विभाग के आदेश पर जिले वासियों को उनके घर के समीप ही ड्राइविंग लाइसेंस की सुविधा देने के उद्देश्य से इस तरह के शिविर का आयोजन जिले के सभी प्रखण्डों में किया जा रहा है।

लोहरदगा के संजीवनी और मां यशोदा हॉस्पिटल सील, निजी अस्पताल संचालको में सनसनी

आयुष्मान भारत के तहत चार करोड़ रुपये घोटाले का है आरोप

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। आयुष्मान भारत योजना के संचालन में लगभग चार करोड़ की कथित वित्तीय गड़बड़ी करने के आरोप में लोहरदगा शहर के बाबा मठ कोर्ट रोड स्थित चर्चित संजीवनी हॉस्पिटल और पावर गंज संजय गांधी पथ स्थित मां यशोदा हॉस्पिटल को मंगलवार की शाम स्थानीय पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों की टीम ने सील कर दिया है। एसडीओ अरविंद कुमार लाल के निर्देश पर सिविल सर्जन ने सदर थाना में संजीवनी हॉस्पिटल और मां यशोदा हॉस्पिटल के संचालक संजीव कुमार रेड्डी उर्फ संदीप कुमार के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराया है। दर्ज प्राथमिकी में डॉक्टर के नाम का गलत दस्तावेज प्रस्तुत करने, फर्जी दस्तावेज तैयार करने, चिकित्सक नियम शर्तों के विरुद्ध मरीजों का इलाज करने समेत अन्य बिंदुओं पर आरोप लगाया गया है। संजीवनी हॉस्पिटल और मां यशोदा हॉस्पिटल का संचालन संजीव रेड्डी उर्फ संदीप कुमार नामक व्यक्ति

करता था। निजी अस्पतालों के विरुद्ध कार्रवाई से शहरी क्षेत्र में संचालित लगभग एक दर्जन से अधिक निजी अस्पतालों में सनसनी है। विभागीय नियम शर्तों को हाशिए पर रखते हुए मनमर्जी मरीजों का इलाज कर आयुष्मान भारत योजना मद से लगभग 4 करोड की राशि की हेराफेरी की शिकायत के बाद उच्चस्तरीय जांच के बाद संजीवनी अस्पताल और मां यशोदा हॉस्पिटल को सील किया गया है। प्रारंभिक जांच के दौरान ही इस अस्पताल के सील होकर बंद होने की कयास लगाए जा रहे थे। इस संदर्भ में बताया गया कि संजीवनी हॉस्पिटल में एनेस्थेटिक ,स्त्री रोग विशेषज्ञ मौजूद नहीं है बावजूद डिलीवरी समेत विभिन्न सर्जरी कथित तौर पर किया जाता था। बताया गया कि हड्डी रोग विशेषज्ञ चिकित्सक भी मौजूद नहीं है। कथित तौर पर हड्डी संबंधी इलाज कतिपय चिकित्सकों द्वारा किए जाने की शिकायत लगातार हो रही थी। संजीवनी अस्पताल के विरुद्ध कार्रवाई के लिए अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार

◆प्रारंभिक जांच के दौरान ही इस अस्पताल के सील होकर बंद होने की कयास लगाए जा रहे थे । इस संदर्भ में बताया गया कि संजीवनी हॉस्पिटल में एनेस्थेटिक ,स्त्री रोग विशेषज्ञ मौजूद नहीं है बावजूद डिलीवरी समेत विभिन्न सर्जरी कथित तौर पर किया जाता था।

लाल का पत्रांक 939 दिनांक 12.09.22 में कार्यपालक दंडाधिकारी सनी कुमार दास, फूड सेफ्टी ऑफिसर राजा कुमार, सदर अस्पताल के डॉ संजय प्रसाद, सदर थानेदार अनिल उरांव ,सब इंस्पेक्टर शैलेंद्र कुमार, रमेश कुमार तिवारी, एएसआई गोवर्धन तुरी समेत सुरक्षा बल के जवान को टीम में शामिल किया गया था। उपरोक्त दोनों अस्पताल सील करने के दौरान वहां मौजूद मरीजों को सदर अस्पताल में शिफ्ट कराने का निर्देश सिविल सर्जन को दिया गया। फिलहाल उपरोक्त दोनों निजी अस्पताल के विरुद्ध कार्रवाई से निजी अस्पताल संचालकों में सनसनी फैली है।

सेवा पखवाड़ा सप्ताह को लेकर भाजपा की हुई बैठक

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर कार्यकर्ताओं में देखा जा रहा है उत्साह : लक्ष्मण बड़ाईक

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। भारतीय जनता पार्टी सिमडेगा की एक बैठक जिला कार्यालय में मंगलवार को हुई जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर चलने वाले 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा सप्ताह के सफल कार्यक्रम करने को लेकर चर्चा हुई। कार्यकर्ताओं के बीच क्रमवार प्रभारियों का मनोनयन किया गया मौके पर जिला अध्यक्ष लक्ष्मण बड़ाईक ने कहा कि प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर कार्यकताओं में उत्साह चरम पर है इसी निमित्त भाजपा द्वारा अनेक रचनात्मक कार्य किए जाएंगे।पूर्व मंत्री विमला प्रधान ने कार्यकर्ताओं को कहा प्रधानमंत्री के मन की बात बूथ स्तर तक जाकर सुने और लोगों को भी सुना है ताकि देश दुनिया में क्या हो रहा है वह बूथ के लोग भी जाने साथ ही पन्ना प्रमुख भी साथ में बनाएं। वहीं केंद्रीय मंत्री

के सांसद प्रतिनिधि सुशील श्रीवास्तव ने कार्यकताओं को कहा की बूथ स्तर तक सेवा पखवाड़ा सप्ताह सफलतापूर्वक चले कार्यकर्ता सुनिश्चित करें, क्रमवार सेवा पखवाड़ा सप्ताह में होने वाले सभी कार्यक्रम को विस्तार पूर्वक कार्यक्रम जिला प्रभारी दिपक पूरी ने बताया और मंडल प्रभारियों के 3-3 नाम घोषणा किये।सोशल मीडिया प्रभारी रवि गुप्ता ने सभी कार्यक्रम का प्रचार प्रसार मंडल स्तर तक किस तरह से हो इस पर प्रकाश डाला।मौके पर जिला कार्यक्रम प्रभारी संजय ठाकुर ,अनूप प्रसाद नवीन सिंह, हीरा राम ,जिप सदस्य कृष्णा बड़ाईक सहित कई अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

लगातार हो रही बारिश से गिरा कच्चा खपरैल मकान, कोई हताहत नहीं

नवीन मेल संवाददाता

सेन्हा/लोहरदगा। प्रखंड क्षेत्र लगतार हो रही बारिश से कच्चा खपरैल मकान क्षतिग्रस्त हो गया जबकि घरेलू सामग्री नष्ट हो गई। इस घटना में किसी का हताहत होने की सूचना नही है। सेन्हा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत मुर्की तोड़ार पंचायत के तोड़ार ग्राम में बारिश से कच्चा मकान गिर गया जिससे गरीब का उजड़ा आशियाना । फिलहाल परिवार के बीच रहने की समस्या बना हुआ है। जानकारी के अनुसार बता दें कि सेन्हा प्रखंड क्षेत्र में रविवार से रुक रुक बारिश होने से क्षेत्र में मकान ध्वस्त हो रहा है। वहीं किसान वर्ग का साग सब्जी की खेती भी नष्ट हो रहा है। तोड़ार निवासी तजमुल अन्सारी का कच्चा खपड़ैल मकान सोमवार देर शाम गिर गया। जिससे तजमुल अन्सारी के घर मे रखा दैनिक उपयोग सामान थाली, कटोरा, बक्सा, बिछावन सहित अन्य जरूरत का समान दब गया। मकान ध्वस्त होने से पीड़ित को काफी नुकशान की सामना करना पड़ रहा है। तजमुल अन्सारी ने बताया कि छोटा व्यवसाय हूँ गांव बाजार में फेरी कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। घर गिरने व्यवसाय का सामान भी वही दब गया। साथ ही बताया कि घटना के समय घर में कोई सदस्य नही थे। जिसके कारण अप्रिय हादसा होने से टल गया।

बोलबा में समावेशी शिक्षा पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

बोलबा। बोलबा प्रखंड कार्यालय सभागार में समावेशी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय शिक्षको, अभिभावकों और आंगनबाड़ी सेविका, सहायिका का उन्मुखीकरण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।जिसमें दिव्यांग बच्चों से संबंधित नामांकन, पहचान, गृह आधारित शिक्षण, व्यवसाईक प्रशिक्षण, सकॉट और ट्रांसपोर्ट, दिव्यांगता प्रमाणपत्र, दिव्यांग बच्चों को मुख्य धारा से जोड़ने विषय पर विस्तृत रूप से रोहित रिसोर्स शिक्षक द्वारा जानकारी दी गई। प्रशिक्षण का उदघाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी विकास बोलबा उषा मिंज ने किया । इस मौके पर सुपरवाइजर सुनीता बरला, अंचल अधिकारी बलिराम मांझी, प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी नवल किशोर सिंह, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मनमोहन कुमार गोस्वामी, प्रखंड साधन सेवी सोनी कुमारी,संकुल साधन सेवी विश्वा सिंह, विलसन बड़ा, शिक्षक रंजीत कुमार, तपेश्वर सिंह, सुरेश प्रसाद,बलराम मेहता, एकिर सीरम बडिंग,जितेंद्र मिंज आदि उपस्थित थे।

डीएवी लोहरदगा के छात्र अंगद भगत ने नीट (यूजी) की परीक्षा में परचम लहराया

लोहरदगा। एमबी डीएवी विद्यालय के छात्र अंगद भगत पिता कुबेर भगत माता आशा देवी लोहरदगा भंडरा प्रखंड मसमानो गांव का निवासी है। जिसने नीट (यूजी)की परीक्षा में 677/720 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया में 964वां रैंक तथा ओबीसी में 245वां रैंक अर्जित कर अपने माता पिता के साथ-साथ अपने गांव, राज्य तथा शिक्षण संस्थानों का भी नाम रोशन किया। अंगद भगत ने अपनी दसवीं तक की शिक्षा एमबी डीएवी विद्यालय लोहरदगा से पूर्ण की तथा यहां के शिक्षक शिक्षिकाओं को अपनी मजबूत आधारभूत शिक्षा व नींव का श्रेय दिया। दसवीं की परीक्षा में 95% अंक प्राप्त कर अंगद ने विद्यालय को प्रथम बार तथा नीट (यूजी) की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर द्वितीय बार गौरवान्वित किया है। अंगद भगत ने पूर्ण लगन व सतत अध्ययन को सफलता का मूल मंत्र बताया। अपनी सफलता के पीछे अंगद भगत अपने शिक्षकों,मित्रों व परिवार जनों विशेषकर बड़े भाई आनंद भगत का सकारात्मक सहयोग बताया। डीएवी विद्यालय के माननीय प्राचार्य श्री जी पी झा ने विद्यार्थी अंगद भगत को विद्यालय आमंत्रित कर उसे उत्कृष्टता का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया तथा डीएवी परिवार की ओर से आगे की सफलता हेतु प्रोत्साहित कर शुभाशीर्वाद दिया।

अग्रोहा धाम से निकली रथ यात्रा का झारखंड भ्रमण कार्यक्रम की सिमडेगा से हई शुरूआत

सिमडेगा। अग्रोहा धाम, हिसार से निकली जन आशीर्वाद रथ यात्रा का झारखंड भ्रमण कार्यक्रम मंगलवार से शुरू हुआ जिला मुख्यालय के श्री राम जानकी मंदिर से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया जहां झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष बसंत मित्तल, अग्रवाल सभा के अध्यक्ष मोतीलाल अग्रवाल आदि के द्वारा रथ यात्रा को रवाना किया इस मौके पर विशेष आरती का आयोजन किया गया और जिसके बाद प्रसाद वितरण हो गई। मौके पर जानकारी देते हुए मारवाड़ी प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष और उक्त कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक बसंत मित्तल ने बताया सिमडेगा में रात का स्वागत करने के बाद गुमला से आगे बढ़ेगी इसके बाद रथ झारखंड राज्य के अलग-अलग इलाकों में भ्रमण भ्रमण करेगी। यात्रा का उद्देश्य वैश्य समाज को कुल देवी महालक्ष्मी मंदिर, अग्रोहा धाम के प्रति जागरूक करना है। अग्रोहा धाम में भव्य महालक्ष्मी मंदिर का निर्माण कराया जा रहा है। इस मंदिर का इतिहास 5 हजार वर्ष से अधिक पुराना है। इसे भारत के धर्म केन्द्र के रूप में स्थापित किया जा रहा है। अग्रोहा धाम से इस प्रकार के 21 रथ पूरे देश में यात्रा के लिए निकले हैं, जिनमें एक रथ झारखंड आ रहा है। कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिर के वास्तुकार राम मंदिर बनाने वाले सीबी सोमपुरा हैं। महालक्ष्मी मंदिर 108 फुट ऊंचा, 108 फुट चौड़ा व 108 फुट लम्बा होगा।

खेत तक पानी नहीं पहुंचने पर श्रमदान कर जीर्णोद्धार कार्य में जुटा किसान

फुलझर नाला में रेत भर जाने पर खेत तक नहीं पहुंच रहा था पानी

नवीन मेल संवाददाता

सेन्हा-लोहरदगा। किसानों के बीच सिंचाई व्यवस्था मुहैया को लेकर फुलझर नहर नाला का निर्माण कार्य सिंचाई विभाग के द्वारा कराया गया था। जिससे किसान को समय समय पर फसल सिंचाई के लिए पानी व्यवस्था हो सके लेकिन वह खुशी किसानों के बीच छनिक सुख के लिए देखा गया। यह नजारा तोड़ार मैना टोली के समीप फुलझर नहर नाला का है। जिसमें रेत भर जाने से किसान के खेत तक चेकडैम का पानी नही पहुंच रहा है। जिसे ग्रामीणों ने श्रमदान कर फुलझर नहर नाला का किया जीणोद्धार बताया जाता है कि सेन्हा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत मुर्की तोड़ार पंचायत के तोड़ार मैना टोली से कल्हेपाट

तक 11 करोड़ 16 लाख 53 हजार के लागत से वर्ष 2017- 18 में जल संसाधन विभाग के तत्वधान में संवेदक द्वारा निर्माण कराया गया था। जो 3 वर्ष बाद जर्जर अवस्था में देखने को मिला। वहीं मैना टोली एवं नीम टोली के ग्रामीण किसानों के खेत तक बरसात के मौसम में पानी नही पहुंचने पर किसान वर्ग के लोग श्रमदान कर जीणोद्धार कार्य में जुटे इतना ही नही बल्कि डेम में लगा गेट भी टूट चुका था जिसे मरमती कराया गया। किसान अमानत अंसारी, सुरेश भगत बताते हैं कि संवेदक द्वारा लापरवाही से निर्माण कार्य किया गया है जिसके कारण हम सभी किसानों को झेलना पड़ रहा है। कार्य गुणवत्ता पूर्ण नही होने के कारण जगह जगह पर टूटना आरम्भ हो गया है। इस प्रकार के कार्य विभाग के उदासीनता को दर्शाता है।

तीन विद्युत ट्रांसफरमर की चोरी, विभाग ने थाने में की शिकायत

कैरो / लोहरदगा । कैरो थाना क्षेत्र में इन दिनों चोरी करने का नया चलन चला है। बीते कुछ दिनों में तीन अलग अलग गावों पर लगी ट्रांसफर्मर के सामान चोरी कर ली गई।ग्रामीणों ने बताया कि इन दिनों चोर इतने सक्रिय हो गए है कि विद्युत लाइन में लगे ट्रांसफार्मर को चालू लाइन में ही निशाना बनाकर चोरी कर रहे है।इसकी शिकायत ग्रामीणों ने विद्युत विभाग से की। जिसके बाद विद्युत विभाग ने इसकी शिकायत थाने में की है। लिखित आवेदन में कहा है कि नरौली में लगे 10 केवीए का ट्रांसफरमर दिनांक 31.08.2022 को, ग्राम-गाराडीह में लगे 16 केवीए का ट्रांसफरमर दिनांक 04.09.2022 को व ग्राम- बिराजपूर में लगे 10 केवीए का ट्रांसफरमर दिनांक 08.09.2022 को रात्रि में अज्ञात चोरों द्वारा चोरी कर लिया गया है।

कार्डधारियों की शिकायत पर बीडीओ ने पीडीएस दुकान का किया निरीक्षण

अगस्त माह का राशन वितरण नहीं करने का ग्रामीणों ने पीडीएस दुकानदार पर लगाया आरोप

नवीन मेल संवाददाता

सेन्हा-लोहरदगा। कार्डधारियों के शिकायत पर उपायुक्त के निर्देश पर बीडीओ ने पीडीएस दुकान का औचक निरीक्षण कर लिया जायजा। सेन्हा प्रखंड क्षेत्र के मुर्की तोड़ार पंचायत अन्तर्गत बंसरी गुरिया टोली में संचालित सरना महिला मंडल पीडीएस दुकान संचालक द्वारा कार्डधारियों को 2022 में माह अप्रैल, जुलाई और अगस्त का प्रधानमंत्री गरीब किसान अन्न योजना का राशन वितरण नहीं करने का आरोप लगाते हुए उपायुक्त डॉक्टर वाघमारे प्रसाद कृष्ण को अवगत कराते हुए जांच कर पीडीएस दुकान संचालक का बदलाव का मांग किया गया था। जिसके आलोक में उपायुक्त के निर्देश पर प्रखंड विकास पदाधिकारी अशोक

कुमार चोपड़ा ने बंसरी गुरिया टोली में संचालित पीडीएस दुकान का निरीक्षण कर लाभुकों से जायजा लिया। राशन वितरण नहीं करने के आरोप पर कार्डधारी लाभुकों ने प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी एवं बीस सूत्री अध्यक्ष को आवेदन देकर पूर्व में अवगत कराया था। वहीं पीडीएस धारक के शिकायत को ध्यान में रखते हुए सरना महिला मंडल द्वारा संचालित पीडीएस दुकान का निरीक्षण करते हुए दुकान का वितरण पंजी व स्टॉक पंजी का जाँच किया और साथ ही ग्रामीणों का लिखित बयान लिया गया। मौके पर उप प्रमुख पॉल पन्ना, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी अमूल तिर्की, सत्यकाम श्रीवास्तव सहित कार्डधारी ग्रामीण मौजूद थे।

बोलबा प्रखण्ड के पीडियापोंछ में पुलिस-पब्लिक हॉकी टूर्नामेंट का फाईनल मैच 15 सितम्बर को

बोलबा। प्रखण्ड के पीड़ियापोंछ पेरिस मैदान में चल रहे पुलिस-पब्लिक महिला पुरुष हॉकी टूर्नामेंट का फाईनल मैच आगामी 15 सितम्बर को होगी आयोजन समिति ने बताया कि यहाँ प्रत्येक वर्ष राधाकृष्ण स्मृति पुलिस पब्लिक हॉकी टूर्नामेंट का आयोजन किया जाता है इस भी वृहत खेल का आयोजन किया गया है। झरखण्ड, उड़ीसा एवं छतीसगढ़ राज्य के हॉकी टीम शामिल हुए है । समिति के लोगों ने बताया कि फाईनल मैच में मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस अधीक्षक सिमडेगा सौरभ कुमार, वन प्रमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार, विधायक विक्सल कोंगाडी, विधायक भूषण बाड़ा, प्रखण्ड विकास पदाधिकारी उषा मिंज, थाना प्रभारी मनीष कुमार सहित कई अधिकारी जनप्रतिनिधि एवं समाज सेवियों को आमंत्रित किया गया है।

उचित राशि की मांग को लेकर किस्को सीओ से मिले ग्रामीण, रखी मांग

बाइपास सड़क निर्माण पर जमीन के बदले उचित राशि दे सरकार : ग्रामीण

■ जमीन मालिक सरकार से उचित मुआवजा दिये जाने की मांग को लेकर सरकारी कार्यालयों का चक्कर काटते हुए नजर आ रहे हैं।

नवीन मेल संवाददाता

किस्को/लोहरदगा। जिले में बाइपास सड़क निर्माण कार्य कराए जाने को लेकर लंबे अर्से से मांग रही है। उल्लेखनीय है कि यदि बाइपास सड़क का निर्माण कार्य हो जाता है तो शहरी क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले जाम से लोगों को निजात मिलेगी। इसे लेकर केन्द्र व राज्य सरकार बाइपास सड़क निर्माण कार्य कराये जाने हेतु पूरी तरह से तैयारी कर चुकी है। परंतु बाइपास सड़क निर्माण कार्य में लगने वाली जमीन को लेकर जमीन मालिक सरकार से उचित मुआवजा दिये जाने की मांग को लेकर सरकारी कार्यालयों का चक्कर काटते हुए नजर आ रहे हैं। इधर मंगलवार को किस्को प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत अरेया और बेटहट पंचायत के सैकड़ों जमीन मालिक किस्को अंचलाधिकारी बुड़ाये सारू से लिखित आवेदन देकर सरकार से बाइपास सड़क निर्माण कार्य में लगाई जा रही जमीन के बदले उचित मुआवजा राशि दिलाने की मांग रखी। जिसपर सीओ बुड़ाये सारू ने कहा कि आपके मांग को वरीय पदाधिकारी को अवगत कराया जाएगा। सीओ ने कहा कि सरकार के निर्देशों के अनुसार सभी जमीन मालिक को उन्हें उनका उचित मुआवजा निश्चित रूप से दी जायेगी।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मानव तस्करी को लेकर चलाया जागरूकता

ठेठईटांगर। ठेठईटांगर पुलिस के द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से कस्तूरबा हाई स्कूल ठेठईटांगर, उसुर्लाइन कॉन्वेंट जामपानी, एवं सप्ताहिक बाजार में 'मानव तस्करी' विषय पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मानव तस्करी जैसे संगीन अपराध को रोकना तथा छात्रों को जागरूक करना था। इस मौके पर थाना प्रभारी ने कहा कि मानव तस्करी कानूनन एक संगीन अपराध है। इस प्रकार के अपराध को रोकने के लिए हम सभी को जागरूक होने की जरूरत है। मानव तस्करी भारत ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक गंभीर व संवेदनशील समस्या बनकर उभर रही है। मानव तस्करी से पीड़ित व्यक्ति से देह व्यापार, घरेलू काम तथा गुलामी इत्यादि कार्य उसकी इच्छा के विरुद्ध करवाए जाते हैं। यदि इस समस्या को जड़ से खत्म करना है तो पूरे समाज को जागरूक करना होगा।

न्यूज गैलरी

आम आदमी पार्टी करेगी गरीबों का विकासः परमेश्वर

लातेहार। आम आदमी पार्टी ही गरीबों का विकास करेगी उनकी मूलभूत सुविधाओं का ख्याल आम आदमी पार्टी ही रखेगी। सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले ग्रामीणों की मूलभूत समस्याओं के समाधान करने की दिशा में पार्टी लगातार प्रयत्नशील है। दूसरी ओर ग्रामीणों की और से मिलने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर पार्टी के कार्यकर्ता तत्पर भी हैं। उक्त बातें आम आदमी पार्टी के जिला संयोजक परमेश्वर गंझू ने लातेहार जिले के उत्सव होटल के सभागार में आयोजित बैठक में कहीं। उक्त बैठक में जिला संयोजक के नेतृत्व में कई दूसरे दल के नेताओं को आम आदमी पार्टी में शामिल किया गया सदस्यता जोड़ो अभियान के तहत झामुमो के प्रखंड उपाध्यक्ष विकास भगत बाबूलाल उरांव व लातेहार के फूलचंद्र भगत को माला पहनाकर आम आदमी पार्टी में स्वागत किया गया । मौके पर उपेंद्र नाथ, राजेश उरांव मंनीर अंसारी, रिंकू अंसारी नंदकिशोर सिंह, सुमित भगत सुमेंज भगत, कुलदीप उरांव दिनेश प्रसाद समेत कई नेता व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

चंदवा पुलिस ने खलारी से ऑटो लूटकांड के अभियुक्त को दबोचा, भेजा जेल

लातेहार। एसपी अंजनी अंजन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर चंदवा पुलिस विशेष छापामारी अभियान चलाकर आटो लूटकांड के अभियुक्त को खेलारी से गिरफ्तार किया। एसपी को मिली सूचना के बाद पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी मदन कुमार शर्मा के नेतृत्व में चंदवा थाना पुलिस की टीम ने आटो लूटकांड के अभियुक्त जोशील केसरी उर्फ अमृत केसरी (पिता रामवृक्ष केसरी, महावीर नगर, खेलारी) से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अभियुक्त को अग्रेतर कार्रवाई के बाद मंडल कारा भेज दिया गया। चंदवा थाना में कांड संख्या 90/22 के तहत मामला दर्ज था। पुलिस ने बताया किं चाकू के बल पर चंदवा-माल्हन-मैक्लुसकीगंज पथ पर अपराधी अभियुक्त ने चाकू के बल पर एक आटो लूट की घटना को अंजाम दिया थागिरफ्तार अभियुक्त को अग्रेतर कार्रवाई के बाद मंडल कारा भेज दिया गया। चंदवा थाना में कांड संख्या 90/22 के तहत मामला दर्ज था। पुलिस ने बताया किं चाकू के बल पर चंदवा-माल्हन-मैक्लुसकीगंज पथ पर अपराधी अभियुक्त ने चाकू के बल पर एक आटो लूट की घटना को अंजाम दिया था।

ट्रेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल

लातेहार। टोरी-लोहरदगा रेल लाइन पर गरदाग गांव के समीप एक ट्रेन की चपेट में आने से राम गंझू (पिता गंदूरा गंझू, डुमरचुआं, बोदा) गंभीर रूप से घायल हो गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार राम गंझू उक्त स्थल से गुजर रहा था। इसी दौरान एक ट्रेन ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। इस दुर्घटना के बाद वह अचेत हो काफी देर तक वहीं पड़ा।वहां से गुजरते एक ग्रामीण ने जब किसी के कराहने की आवाज सुनी तो वहां पहुंचा। पाया कि एक व्यक्ति गंभीर अवस्था में गिरा पड़ा है। इसके बाद रेल प्रबंधन के साथ स्थानीय प्रशासन को संबंधित सूचना दी गई। स्थानीय लोगों के सहयोग से उसे चंदवा सीएचसी लाया गया। जहां महिला चिकित्सक डा. नीलिमा कुमारी, रमेश राम समेत अन्य स्वास्थयकर्मियों की देखरेख में प्राथमिक इलाज के बाद उसे रिम्स रेफर कर दिया गया। जानकारी के अनुसार उसका दाहिना हाथ और बायां पैर कट गया था।

मनरेगा के तहत संचालित योजनाओं की बीडीओ ने की समीक्षा

पत्थलगड़ा(चतरा)। मंगलवार को पत्थलगड़ा प्रखंड कार्यालय सभागार में बीडीओ मोनी कुमारी की अध्यक्षता में मनरेगा तथा पीएम आवास योजना की समीक्षा बैठक हुई। जिसमें उपस्थित पंचायत सचिव, रोजगार सेवक, स्वयंसेवक तथा जेई से बीडीओ ने पंचायतवार पीएम आवास तथा मनरेगा से संचालित कार्यों की जाननकारी लेते हुए अद्यतन स्थित से अवगत हुई। साथ ही पीएम आवास तथा मनरेगा अंतर्गत संचालित योजनाओं में तेजी लाने का निर्देश बीडीओ ने सभी संबंधितों को दिया। इसके साथ लंबित योजना को पूर्ण करने व जियो टैग को बढ़ाने का निर्देश दिया। प्रत्येक पंचायत में मानव दिवस सृजन में बढ़ोतरी करने का आदेश दिया। बीडीओ ने वर्ष 16-17 एवं 2017-18 के लंबित पीएम आवासों को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया।

पुलिस की आम लोगों से अपील, अफवाह से बचें, ससमय पुलिस को दें सूचना

मयूरहंड/पत्थलगड़ा(चतरा)। पुलिस ने लोगों से बच्चा चोर के अफवाह से बचने की अपील करते हुए, ऐसे भ्रामक जानकारी मिलने पर ससमय संबंधित थाने को सूचना देने की बात कही है। पुलिस निरीक्षक शिव प्रकाश व मयूरहंड थाने में पदस्थापित पुलिस अवर निरीक्षक अनिरुद्ध कुमार सिंह ने थाना क्षेत्र के लोगों से अपील करते हुए कहा है कि बच्चा चोर समझ के किसी व्यक्ति के साथ मारपीट ना करें, तत्काल पुलिस को जानकारी दें। यदी कोई अनजान व्यक्ति पर नजर पड़े तो तुरंत पुलिस को सूचना दें, बच्चा चोर समझकर किसी को भिड तंत्र का शिकार ना बनाएं। ऐसा होने पर संबंधित लोगों पर विधि सम्मत कानूनी कार्रवाई की जाएगी। साथ ही बिना सत्यापन के कोई भ्रामक पोस्ट सोशल मीडिया पर प्रसारित ना करें, ताकि समाज में भ्रम की स्थिति उत्पन्न ना हो। पत्थलगड़ा थाना प्रभारी बमबम कुमार ने भी क्षेत्र के जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, पत्रकारों आदि से ऐसे भ्रमक अफवाहों को रोकने में सहयोग करने की अपील की है।

सोलर जलमीनार के स्टार्टर की चोरी

महुआडांड़। नेतरहाट पठार (बाजार) बिरिजिया टोला मे लगा चापाकल 15वें वित्त से लगाये गए सोलर जलमीनार का स्टार्टर अज्ञात चोरो के द्वारा शनिवार की रात चोरी कर लिया गया है। जिससे पठार के लोगों को पेयजल संकट उत्पन्न हो गई है। ज्ञात हो कि पठार में एकमात्र चापाकल है, जिसमे सोलर चलित जलमीनार लगाया गया था. इसे लेकर नेतरहाट मुखिया रामबिशुन नगेसिया के द्वारा नेतरहाट थाना में आवेदन देकर अज्ञात चोरो पर एफआईआर दर्ज कराया गया है। नेतरहाट के उमेश वर्मा ने बताया कि पठार नेतरहाट का मुख्य बाजार है, लेकिन पेयजल के साधन नही है, एकमात्र चापाकल है, वह गर्मी में सूख जाता है, नेतरहाट पेयजल आपूर्ति विभाग के द्वारा पठार में सप्लाई के लिए नया पानी टंकी बनाया गया है, लेकिन अभी तक पानी सप्लाई सुरू नही कि गई है।

जनता दरबार में उपायुक्त ने सुनी आमजनों की समस्याएं, कहा

लाभुकों को गुमराह कर ठगी करने वाले बिचौलियों को चिन्हित कर कार्रवाई करें

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। मंगलवार को समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त अबु इमरान ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी। एक-एक कर लोग समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त से मिल कर अपनी-अपनी समस्यओं से अवगत कराया। उपायुक्त ने जनता दरबार में पहुंचे लोगों की समस्याओं से अवगत होते हुए जल्द समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया। समस्याओं में मुख्य रूप से राजस्व विभा, उग्रवादी हिंसा से संबंधित, राशन कार्ड, वृद्धा पेंशन, प्रधान मंत्री आवास योजना, भूमि विवाद व पशुपालन विभाग से संबंधित मामले शामिल थे। मौके पर

उपायुक्त ने सभी संबन्धित पदाधिकारियों को शीघ्र समस्याओं का समाधान करने को लेकर निर्देशित किया। वहीं जनतदरबार में पीएम आवास में लाभुकों से पैसे की मांग की शिकायत पर उपायुक्त ने लाभुकों से कहा की बिचौलियों से दूर रहें, अगर आपको किसी भी प्रकार की समस्या है तो सीधा संबंधित पदाधिकारी से संपर्क करें। साथ ही उपायुक्त ने सभी संबंधित पदाधिकारियों को बिचौलियों से मुक्त करने का निर्देश देते हुए कहा कि इस प्रकार की शिकायत बर्दास्त नही की जाएगी। अगर बिचौलियों द्वारा लाभुकों से किसी भी प्रकार की ठगी कर मांग की जाती है तो वैसे बिचौलियों को चिन्हित कर कार्रवाई करें। हमारा उद्देश्य शत प्रतिशत योग्य लाभुकों को लाभान्वित करना है। ज्ञात हो कि सप्ताह के मंगलवार और शनिवार को पूर्वाह्न 11:30 बजे से 01:00 बजे अपराह्न तक उपायुक्त अबु इमरान द्वारा जनता दरबार के माध्यम से आम जनों की समस्याएं सुन निराकरण किया जाता है।

बीडीओ ने बैंक प्रबंधक व पशुधन योजना लाभुकों के संग की बैठक

नवीन मेल संवाददाता

गिद्धौर(चतरा)। मंगलवार को गिद्धौर प्रखंड कार्यालय सभागार में बीडीओ संजीत कुमार सिंह ने बैंक शाखा प्रबंधक व पशुधन योजना लाभुकों के साथ बैठक की। जिसमें बताया गया कि प्रखंड में मुख्यमंत्री पशुधन योजना के तहत वर्ष 2021 में 33 व 2022 में 44 लाभुकों का चयन किया गया था। योजना अंतर्गत 50 प्रतिशत अनुदान राशि में मुर्गी, गाय व सुवर लाभुकों को पशुधन योजना से दिया जाना था। योजना के लाभुकों को उनके बैंक खाते में सरकार के तरफ से राशि भेज दी गयी है। बैठक में उपस्थित लाभुकों को बीडीओ ने लाभुकों को अपना पैसा बैंक में जमा कर योजना का लाभ लेने व बैंक में शेष राशि जमा नहीं करने वाले लाभुकों से अनुदान की राशि वसूल योजना रद करने की बात कही। साथ ही बीडीओ ने कहा कि लाभुकों को संबंधित सेड भी दिया जाएगा। बैठक में बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक विवेक कुजूर, झारखंड ग्रामीण बैंक प्रबंधक बिनोद पासवान, बीपीओ अजय कुमार सिन्हा, सहायक अभियंता मनोज कुमार, प्रखंड कृषि पदाधिकारी चितरंजन शर्मा, महेश मिस्त्री, उजवल सिंह, रोजगार सेवक रोहित कुमार यादव, टेक्नारायण राम, स्वर्णलता कुमारी, गोविंद दांगी सहित पशुधन योजना के लाभुक उपस्थित थे।

गिद्धौर व मयूरहंड की प्रमुख ने डीसी को समस्याओं से कराया अवगत

नवीन मेल संवाददाता

मयूरहंड/गिद्धौर(चतरा)। उपायुक्त अबु इमरान से गिद्धौर प्रखंड प्रमुख अनिता यादव व मयूरहंड प्रमुख मिकी देवी ने मंगलवार को समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में मुलाकात कर क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं से अवगत कराया। गिद्धौर प्रमुख ने गिद्धौर प्रखंड क्षेत्र की समस्याओं से उपायुक्त को अवगत कराते हुए बताया कि गिद्धौर प्रखंड में अधिकतर लोग खेती करते है। लेकिन प्रखंड में बेहतर सिंचाई की व्यवस्था नही है। साथ ही बलबल में मां बागेश्वरी गर्म जलकुंड को विकसित करने सहित अन्य मांग उपायुक्त से की। वहीं मयूरहंड प्रमुख मिकी देवी ने उपायुक्त श्री इमरान से शिष्टाचार मुलाकात कर प्रखंड क्षेत्र के जर्जर सडकों पर ध्यानाकृष्ट कराते हुए मरम्मती करवाने की मांग की। साथ हीं जनवितरण दुकान में हो रहे कालाबजारी व सक्ष्म परिवारों द्वारा राशन उठाव की जानकारी दी। इसके अलावा झारखंड आवासीय बालिका विद्यालय मयूरहंड में छात्राओं के लिए बेड उपलब्ध नहीं रहने के कारण जमीन पर सोने की जानकारी दी। उपायुक्त ने समस्याओं के निदान की बात कही।

अवैध अफीम खेती रोकथाम को लेकर हुई बैठक, बोले वक्ता

अफीम की खेती सभ्य समाज के हित में नहीं

नवीन मेल संवाददाता

कुंदा(चतरा)। मंगलवार को कुंदा प्रखंड कार्यालय सभागार में बीडीओ अवैध अफीम खेती के रोकथाम को लेकर बैठक हुई। जिसका अध्यक्षता बीडीओ खगेश कुमार व संचालक मुखिया मनोज साहू ने किया। बैठक में पंचायत प्रतिनिधियों ने बारी-बारी से अफीम रोकथाम को लेकर सुझाव रखते हुए कहा की अफीम खेती किसी भी दृष्टिकोण से सभ्य समाज हित में नहीं है। यह समाज को मानसिक व शारीरिक रूप से विकलांग बनाता है। बैठक में प्रतिनिधियों ने अपने पंचायत, वार्ड व गांव स्तर पर ग्रामीणों को जागरूक कर अफीम खेती रोकने का संकल्प लिया। वहीं थाना प्रभारी परमानंद मेहरा ने कहा कि आमजन किसी के बहकावे में नहीं आने की अपील की। वहीं उन्होंने कहा कि जनजागरूकता के उपरांत अफीम खेती में सम्मिलिता पाए जाने की सूचना प्राप्त होती है तो संबंधितों के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। बीडीओ ने कहा की अफीम की रासायनिक संरचना व गुण दोनों हानिकारक है। इसकी अवैध कमाई आने पर मन में उन्माद जगाता है, जिससे हमारा समाज अपराध की ओर चला जाता है। इसलिए उन्होंने प्रखंड वासियों से आने वाले पीढ़ी के बेहतर भविष्य के लिए अफीम खेती छोड़ना होगा। बैठक में अखिलेश यादव, बिनोद साहू, बीपीओ राजेश्वर कुमार, जेई विकास यादव, राजद नेता दिलीप प्रसाद यादव, समाजसेवी संजय भुइंया, सुरेंदर ठाकुर, सभी पंचायत सेवक, रोजगार सेवक, बीएफटी आदि उपस्थित थे।

18 बकायेदारों का रूपिन-डढुवा में कटा बिजली कनेक्शन

गिद्धौर (चतरा)। मंगलवार को गिद्धौर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत रूपिन-डढुवा गांव में विद्युत विभाग द्वारा छापेमारी अभियान चलाया गया। कनीय अभियंता तरुण कुमार के निर्देश में चलाए गए छापेमारी अभियान में गांव के 18 बकायेदारों का कनेक्शन काटा गया। बताया गया कि रूपिन-डढुवा गांव के संबंधित बिजली उपभोक्ताओं पर 7 लाख 41 हजार 234 रुपये बकायेदारों पर बिजली बिल बकाया है। बकायेदारों को बगैर बिजली बिल जमा किए विद्युत जलाने पर प्राथमिकी दर्ज करने की भी चेतावनी दी गई। इस अभियान में महावीर दांगी, विकास कुमार,संतोष कुमार निराला आदि कर्मी शामिल थे।

शिक्षा अधिनियम के तहत चला जागरूकता कार्यक्रम, बोले वक्ता

बुनियादी शिक्षा बच्चों का मौलिक अधिकार है

नवीन मेल संवाददाता

बरवाडीह। प्रखंड छिपादोहर पंचायत के जुरूहार ग्राम निलंबर पितांबर विद्या मंदिर मे क्लारेशीयन सोसायटी एवं नीलांबर पीतांबर विकास सोसाइटी के संयुक्त तत्वाधान शिक्षा अधिनियम कानून 2009 के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का अध्यक्षता सोसाइटी के अध्यक्ष शशि भूषण तिवारी ने किया। कार्यक्रम में नीलांबर पीतांबर विद्या मंदिर जमतिया (जुरूहार) स्कूल के बच्चे बच्चियों को शिक्षा के विषय में बताया गया। जिसमे बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवाय शिक्षा अधिनियम कानून 2009 बन जाने के बाद भारत में 6-14 आयु वर्ग के सभी बच्चों को शिक्षा का मौलिक अधिकार मिल चुका है। कार्यक्रम का संचालन कर रहे सोसाइटी के कोषाध्यक्ष देवनाथ सिंह ने कहा की भारत सरकार ने 1 अप्रैल 2010 से 6से 14 आयु वर्ग बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा का मौलिक अधिकार कानून लागू किए है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित कुंदन कुमार ने लड़का लड़की एक समान, शिक्षा से दोनों बने महान, शिक्षा जीवन का अधिकार है। इसके बिना जीवन बेकार, पूरे देश की है अब यही आवाज ,पढ़ा लिखा हो हमरा समाज, शिक्षित राष्ट्र बनाना है,हर घर में शिक्षा को पहुंचाना है आदि नारा दिया। ग्राम शिक्षा कमिटी को शिक्षा कानून के बारे में जानकारी देते हुई उनकी भूमिका पालन हेतु प्रेरित करने पर जोर दिया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित हरीश चंद्र वर्मा, लाल बहादुर प्रसाद, विनोद पहिया, सविता देवी, पूनम देवी, सरोजिनी देवी, सुमति कुमार, रमेश सिंह, बिहारी सिंह, कार्यक्रम में ग्रामीण जनता उपस्थित थे।

मूसलाधार बारिश से गिरा गरीब का मकान, बाल-बाल बचे लोग

नवीन मेल संवाददाता

चंदवा। प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत कामता पंचायत के ग्राम भुषाढ़ निवासी मसोमात लालो देवी का कच्चा मकान सोमवार को हुई मुसलाधार वर्षा से भर भराकर पुरी तरह गिर गया है। गनीमत रही कि जब घर गिरने लगा तो घर में मौजूद लोग सपरिवार घर से दौड़कर बाहर निकले नहीं तो बड़ी घटना घट सकती थी। घटना की सूचना पर जायजा लेने गए माकपा नेता द्वारीका ठाकुर को प्रभावित लालो देवी ने बताया कि जब मिट्टी का घर गिर रहा था उस समय खुट्टा बल्ली के सहारे घर को बचाना चाह रहे थे लेकिन नहीं बचा पाये और घर गिर गया। जब घर गिरने लगा तो हमलोगो ने सपरिवार भागकर जान बचाई नहीं तो जान का नुकसान हो सकता था। पीड़ित महिला ने कहा कि रहने के लिए सिर्फ यही घर था घर गिरने से मै बेघर हो गई हुं अब हम आठ सपरिवार कहां जाएं रहने के लिए कुछ समझ नहीं आ रहा है।परिजनों ने जिले के उपायुक्त भोर सिंह यादव से तत्काल आवास दिलवाने की मांग कि है।

सेविका चयन में सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन नहीं कर रहे सीडीपीओ और सुपरवाइजर

नवीन मेल संवाददाता

गारू। गारू प्रखंड के बारेसांढ़ पंचायत के बारेसांढ़ आंगनबाड़ी-1 के सेविका चयन के लिए आमसभा का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता सीडीपीओ अनिता कुमारी ने किया।

▶ उपप्रमुख रामदास यादव ने सीडीपीओ पर मनमानी का लगाया आरोप

आंगनबाड़ी सेविका का चयन में उपप्रमुख एवं मुखिया के द्वारा आरोप लगाया है कि सीडीपीओ आनित कुमारी एवं सुपरवाइजर इंदुमती के द्वारा मनमानी एवं सरकार द्वारा प्राप्त दिशा-निर्देश का पालन नहीं किया जा रहा है। पर्यवेक्षत के रूप में इनकी उपस्थिति संदेह उत्पन्न कर रही है।ऐसा प्रतीत हो रहा है कि पर्वेक्षक द्वारा किसी विशेष समूह को लाभ देने की कोशिश की जा रही है। चयन परिक्रिया जाती बहुलता के आधार पर किया जाना था जो तीन बार सेविका चयन रदद हो चुकी है। बताते चले कि पोषक क्षेत्र में बारेसांढ़ आंगनबाड़ी 01 में पिछड़ा वर्ग की बहुलता है क्योकि सेविका चयन में सर्वे का आधार वर्ष 2006-12 रखा गया है। सेविका चयन प्रक्रिया में पहला बार रिसर्वे के कारण, दूसरी बार उपस्थिति के कारण एवं तीसरी बार अधिकारी की जनप्रतिनिधि के साथ तालमेल अच्छा नही रहने के कारण चयन को रद्द कर दिया। सीडीपीओ से पूछे जाने पर बताया कि मुखिया आमसभा स्थल पर नही आये इस लिए रद्द किया गया।

वही मुखिया रूपमणि नागेसिया से पूछे जाने पर बताया कि पंचायत सचिवालय में मीटिंग हॉल है। सुबह 10 बजे से मैं यहां काम कर रही हूं बच्चों का जाती आधार समेत कई अन्य काम कर रही हूं पंचायत सचिवालय से 50 मीटर की दूरी पर आम सभा का आयोजन कर 9-9 - 2022 को मुझे 11:30 में ग्रामीण को बुलाने भेजे तो रूपमणि नागेसिया ने कहा कि बारिश का मौसम है। आइये हॉल में ही आमसभा कीजिये तो ना कर्मी माने न अधिकारी इसलिए मैं नही गई। अधिकारी जनप्रतिनिधि की बात नही सुनते है। उपप्रमुख रामदास यादव ने सीडीपीओ पर आरोप लगाया कि मनमानी कर रही है ,और नियम संगत चयन नही कर रही है।इस सम्बंध में जिला समाज कल्याण पदाधिकारी व उपायुक्त लातेहार को आवेदन दिया गया है। इस सम्बंध में ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मांग की है की नियमसंगत सेविका का चयन जाय।

रेलवे क्लब दुर्गा पूजा कमेटी के अध्यक्ष बने जीशान अली, सचिव ऋषि राज

नवीन मेल संवाददाता

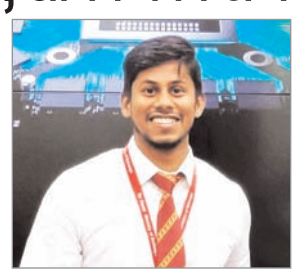

बरवाडीह। प्रखंड मुख्यालय की रेलवे क्लब में प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी दुर्गा पूजा के आयोजन को लेकर पुरानी कमेटी को भंग करते हुए नई कमेटी का गठन किया गया। जहां सर्वसम्मति से नई कमेटी के अध्यक्ष सहायक मंडल यांत्रिक अभियंता जीशान अली को बनाया गया है। वही कमेटी में लोको पायलट ऋषि राज सचिव को बनाया गया है। एमएम किशोर मालाकार उपाध्यक्ष, रंजीत कुमार सिंह स्टेशन मास्टर उपसचिव, रणजीत सिंह राणा लोको पायलट, अजय कुमार यादव लोको पायलट को कोषाध्यक्ष, राजेश कुमार राजू प्रसादवितरण सचिव, बनाने के साथ मुख्य सलाहकार के रूप में अनिल कुमार द्विवेदी स्टेशन प्रबंधक, एच कुमार क्रू कंट्रोलर, जुगनू दास वरीय अनुभाग अभियंता ,अरुण कुमार वरीय अनुभाग अभियंता को बनाया गया है। वही दुर्गा पूजा के आयोजन को लेकर पूजा समिति के द्वारा तैयारियां शुरू कर दी गई है जिसको लेकर पूरे रेलवे क्लब परिसर की साफ सफाई के साथ-साथ सजावट का काम भी शुरू करते हुए धन संग्रह करने का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। रेलवे क्लब के दुर्गा पूजा कमेटी के अध्यक्ष और सहायक मंडल यांत्रिक अभियंता जीशान अली की माने तो रेलवे क्लब दुर्गा पूजा समिति के द्वारा पूर्व से आपसी एकता और भाईचारे के साथ इस पर्व को मनाने का काम किया जाता रहा है

सम्पादक की कलम से...

झामुमो खेमे में हर्ष

झामुमो सुप्रीमो व सांसद शिबू सोरेन के खिलाफ चल रही सुनवाई पर दिल्ली हाईकोर्ट ने 13 दिसम्बर तक रोक लगा दी है। इस सूचना ने झामुमो को बोलने का अवसर दिया है। यही कारण है कि पार्टी के केंद्रीय प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने प्रेस बयान जारी कर कहा कि भाजपा संवैधानिक संस्थाओं का गलत प्रयोग कर रही है। निशिकांत दुबे और भाजपा की ओछी मानसिकता से सभी वाकिफ हैं। एक आदिवासी सीएम द्वारा जनता की सेवा करना इन्हें रास नहीं आ रहा। इसलिये सामंतवादी और मनुवादी सोच वाले इन भाजपाई नेताओं द्वारा येन-केन प्रकारेण कई प्रकार के हथकंडों को अपनाया जा रहा है जिसमें वे बार-बार विफल भी हो रहे हैं। यह सच है कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन के प्रति देश के करोड़ों मूलवासी, आदिवासी, दलित, शोषित लोगों की श्रद्धा है। वे हर वक्त मनुवादी और सामंतवादियों के खिलाफ संघर्षरत रहे हैं। यह बात किसी से छिपी नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं हो सकता कि भारत के संविधान से कोई बड़ा है। अगर कोई कानून से जुड़ा मामला है तो उसकी सुनवाई होगी। ऐसे संकट के समय में सभी को संयम बनाने की जरूरत है। कानून अपना काम करेगा। यह सच है कि आज कोई भी पार्टी सत्ता से ज्यादा दिनों तक दूर रहना नहीं चाहती है। ऐसे में झारखंड में पिछले दो सालों से अधिक समय से भाजपा सत्ता से दूर है। ऐसे में भाजपा के अंदर विचलन होना स्वभाविक है। ऐसे में वे कभी सरकार गिराने की साजिश करते हैं। कभी विधायकों को खरीदने का प्रयास, कभी संवैधानिक संस्थाओं की मदद से झामुमो प्रमुख शिबू सोरेन, सीएम हेमंत सोरेन, सरकार के मंत्रियों और विधायकों के खिलाफ सुनियोजित षडयंत्र करते हैं पर वे चारों खाने चित्त हो जा रहे हैं। ऐसे में यहां यह जानना जरूरी है कि आखिर लोकपाल के समक्ष क्या है मामला। झामुमो के मुताबिक निशिकांत दूबे ने शिबू सोरेन के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला 5 अगस्त 2020 को दर्ज कराया था। 15 सितंबर, 2020 को लोकपाल ने सीबीआई को मामले की प्रारंभिक जांच करने को कहा। लोकपाल में इस निर्देश के विरुद्ध झामुमो अध्यक्ष ने अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत चुनौती याचिका दाखिल की थी। 12 सितंबर, 2022 को दिल्ली हाईकोर्ट ने लोकपाल में चल रही सुनवाई पर 13 दिसंबर 2022 तक रोक लगा दी है। जस्टिस यशवंत वर्मा ने मामले पर रोक लगाते कहा है कि मामले पर विचार करने की जरूरत है। झामुमो अध्यक्ष द्वारा आपत्ति की गयी थी कि तथाकथित घटना के 7 साल से अधिक समय के बाद शिकायत दर्ज की गयी। लोकपाल और लोकायुक्त एक्ट 2013 की धारा 53 के अनुसार उक्त अवधि (7 साल) समाप्त हो जाने के बाद ऐसी कोई जांच नहीं की जा सकती। चुनौती याचिका में यह भी कहा गया था कि लोकपाल के समक्ष 5 अगस्त 2020 को शिकायत दर्ज की गयी थी, सीबीआई ने जुलाई 2021 में शिबू सोरेन और उनके परिवार के खिलाफ प्रारंभिक जांच शुरू की जबकि फरवरी 2022 के अंत तक शिकायत की कोई प्रति याचिकाकर्ता को प्रदान नहीं की गयी। ऐसे में दिल्ली होईकोर्ट ने जो रोक लगायी है,उसे लेकर झामुमो के अंदर खुशी का माहौल है। अब आगे देखना है कि आगे-आगे होता है क्या?

आज का इतिहास

1996 : फिजी व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि की पुष्टि करने वाला प्रथम देश बना।
1997 : अरुंधति राय को उनके उपन्यास 'द गॉड आफ स्माल थिंग्स' के लिए ब्रिटेन के सबसे प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार के लिए चुना गया।
1998 : गरीबी उन्मूलन के लिए भारत की फातिमा बी को संयुक्त राष्ट्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
2006 : संयुक्त राष्ट्र संघ ने उत्तर कोरिया पर प्रतिबंध लगाया।
1882 : शिमला में पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
1884 : प्रसिद्ध क्रांतिकारी और 'गदर पार्टी' के संस्थापक लाला हरदयाल का जन्म।
1933 : जर्मनी ने मित्र राष्ट्रों के समूह से अलग होने की घोषणा की।
1943 : जापान ने फिलीपींस की स्वतंत्रता की घोषणा की।
1946 : हालैंड और इंडोनेशिया ने संघर्ष विराम समझौते पर हस्ताक्षर किए।
1948 : इजरायल और मिस्र के बीच युद्ध की शुरूआत हुई।
1956 : डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने तीन लाख 85 हजार अनुयायियों के साथ कोचांदा में बौद्ध धर्म अपनाया।
1931 : पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का तमिलनाडु के रामेश्वरम में जन्म।
1932 : टाटा कंपनी ने टाटा संस लिमिटेड नामक देश की पहली एयर लाइन की शुरूआत की।
1949 : त्रिपुरा राज्य को भारत में सम्मिलित किया गया।
1961 : लेखक सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का निधन।
1978 : सोवियत संघ ने पूर्वी कजाखस्तान क्षेत्र में परमाणु परीक्षण किया।
1988 : उज्वला पाटिल समुद्र के रास्ते विश्व का चक्कर लगाने वाली पहली एशियाई महिला बनी।
1990 : बॉलीवुड अभिनेता ओम शिवपुरी का निधन।
1990 : सोवियत संघ के राष्ट्रपति मिखाइल गोबार्चोव को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया।

क्या मोदी ने सुधारी ऐतिहासिक भूल

> लालकिले पर तिरंगा फहराने का सपना भी नेताजी और आजाद हिंद फौज का ही था, न कि किसी और नेता का। नेहरूजी ने नेताजी के लिए लालकिले के सामने स्मारक न बनाने के पीछे तर्क दिया कि वह जगह देश के स्वाधीनता-संग्राम के सभी शहीदों के लिए एक स्मारक बनाने के लिए सुरक्षित रखी गई है। वह किसी रायचौधरी का हवाला देते हैं कि उन्होंने उस स्मारक पर काम करना शुरू भी कर दिया है। लालकिले के सामने नेहरूजी की शहीद स्मारक योजना का क्या हुआ, आजतक किसी को उसका कुछ पता नहीं। रायचौधरी कौन-सा शहीद स्मारक लालकिले के सामने बना रहे थे।

बात साल 1960 की है। दूसरी लोकसभा का शीतकालीन सत्र चल रहा था। 2 दिसंबर 1960 को निचले सदन में एक प्रस्ताव रखा गया कि जापान के रेंकोजी मंदिर से नेताजी सुभाषचंद्र बोस की अस्थियों को भारत लाया जाए। नेताजी की अस्थियों के लिए दिल्ली के लालकिले का सामने एक भव्य स्मारक बनाने की भी बात थी उसमें। भारतीय संसद में और संसद के बाहर, पूरे देश में यह मुद्दा गरम था। मांग हो रही थी कि अगर सरकार मानती है कि रेंकोजी मंदिर में जो अस्थि-अवशेष नेताजी सुभाषचंद्र बोस के हैं, तो उन्हें भारत मंगवा लेना चाहिए। संसद के इस प्रस्ताव के संबंध में उसी दिन 2 दिसंबर 1960 को नेहरूजी ने डॉ. बिधान चंद्र रॉय को एक पत्र लिखा। बिधान चंद्र रॉय तब पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री थे। नेहरूजी का वह पत्र गोपनीय था। उसमें नेहरूजी ने लिखा कि नेताजी की अस्थियों को भारत लाने की कोशिश भारत सरकार तभी करेगी, जब नेताजी का परिवार उसके लिए पहल करे। यह बात तो समझ में आती है। लेकिन, इसी पत्र में वह नेताजी के लिए लालकिले के सामने स्मारक का प्रस्ताव ठुकरा देते हैं। नेहरू लिखते हैं, 'मैं नहीं सोचता हूं कि उस तरह की चीज यानी नेताजी का स्मारक लालकिले के सामने बन सकता है'। नेहरूजी को ऐसा क्यों लगता था, यह तो उन्हें ही पता होगा, लेकिन उनका यह कहना कि वैसी चीज (नेताजी का स्मारक) लालकिले के सामने नहीं बन सकती, यह तो समझ से परे है। नेहरूजी बिधान चंद्र रॉय को लिखी अपनी उसी चिट्ठी में लालकिले के सामने स्मारक न बनाने के अपने निर्णय के साथ-साथ एक अजीब सलाह भी देते हैं। सलाह यह कि यदि नेताजी के अस्थि-अवशेष भारत लाये जाते हैं, तो उन्हें कलकत्ते में ही रखना चाहिए। नेहरूजी को शायद यह याद नहीं रहा कि नेताजी का नारा था, 'दिल्ली चलो, न कि कलकत्ते चलो।' उनका यह नारा बांग्ला में नहीं, हिंदुस्तानी में था। लालकिले पर तिरंगा फहराने का सपना भी नेताजी और आजाद हिंद फौज का ही था, न कि किसी और नेता का। नेहरूजी ने नेताजी के लिए लालकिले के सामने स्मारक न बनाने के पीछे तर्क दिया कि वह जगह देश के स्वाधीनता-संग्राम के सभी शहीदों के लिए एक स्मारक बनाने के लिए सुरक्षित रखी गई है। वह किसी रायचौधरी का हवाला देते हैं कि उन्होंने उस स्मारक पर काम करना शुरू भी कर दिया है। लालकिले के सामने नेहरूजी की शहीद स्मारक योजना का क्या हुआ, आजतक किसी को उसका कुछ पता नहीं। रायचौधरी कौन-सा शहीद स्मारक लालकिले के सामने बना रहे थे, उसका कोई सबूत हमें नहीं मिलता। हां, इस बात का सबूत जरूर मिलता है कि नेताजी का स्मारक न बनाने के लिए वह तर्क दिया गया था। देश के लिए शहादत क्या होती है, देश के लिए त्याग क्या होता है, उसका सबसे बड़ा आदर्श नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने पेश किया था। नेताजी ने अपनी शहादत से पहले भारत की आजादी के लिए शहीद हुए आजाद हिंद फौज के वीर सपूतों की स्मृति में सिंगापुर में 8 जुलाई 1945 को आईएनए स्मारक की आधारशिला रखी। एक पराए देश में एक पराधीन देश के स्वाधीनता-सेनानियों के लिए एक भव्य स्मारक की योजना नेताजी की अटूट देशभक्ति और अपने साथी सैनिकों की देशभक्ति के प्रति श्रद्धा का ही सबूत है। उस स्मारक पर जो प्रेरणा-मंत्र था, उसके तीन शब्द थे- इत्तिहाद, ऐतमाद और कुरबानी यानी एकता, विश्वास व बलिदान। कोई भी देश, कोई भी कौम इन्हीं बीज मंत्रों से तरक्की करता है। उस स्मारक को माउंटबेटन ने, जापान पर इंग्लैंड के कब्जे के बाद तुड़वा दिया था। बाद में उसी माउंटबेटन को स्वाधीन भारत को अपना पहला गवर्नर जनरल स्वीकार करना पड़ा। सिंगापुर का आईएनए स्मारक फिर से स्थापित हो गया। लेकिन क्या तब की सरकार को अपने जांबाज सपूत के लिए दिल्ली में मुनासिब जगह पर एक स्मारक नहीं बनवाना चाहिए था? इंडिया गेट पर शहीद स्मारक की नई रूपरेखा और उसके केंद्र में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा निश्चित रूप से उस गलती को देर से ही सही, ठीक करने की कोशिश है। देश की विरासत पर कोई अंतिम फैसला किसी सरकार का नहीं होता, अवाम का होता है। नेताजी इस देश के अवाम की सांसों में जिंदा हैं, जिंदा रहेंगे।

■ अखिलेश झा

धुंध भरा इंतजार

देश में गंगा उल्टी होकर बहती है तो ऐसी धुंध पैदा हो जाती है कि खत्म ही नहीं होती। इस धुंध के आगे-आगे चलते हैं ऊंचे स्वर के कर्कश मसीहा, जो कल आपकी जिंदगी को दूभर कर रहे थे, आज उसे स्वर्ग बना देने की कसमें खाते हैं। या यों कह लें कि कल तक जो आपके घर में दूध में पानी मिला कर बेचते थे, उन्हें अगर आज मिलावट के विरुद्ध और कुपोषण के खिलाफ जंग छेड़ते देखते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं कि आपके इलाके में जल संकट गहरा हो गया है। दूध को गाढ़ा करने वाले पाउडर के दाम बढ़ गये हैं, इसलिए उनके मन में बिना मिलावट दूध बेचने का पुण्य कमाने का जज्बा पैदा हो गया है। आज शायद हींग लगे न फिटकरी रंग भी चोखा आय का नया चलन पैदा हो गया है। अब दूध में पानी मिलाने का झंझट काहे पालना, जब इसके विरुद्ध विशुद्ध संस्कृति का नारा लगाने से ही आपकी पालकी को किराये के कहार उठा लेते हैं। दाम चुकाओ तो आज क्या नहीं मिल जाता। पहले किराये पर रैलियां सजती थीं, भीड़ जुटती थी, मंच सजते थे, मतदान केंद्रों के बाहर जाति और धर्म के नाम पर बिके वोटरों की कतारें सजती थीं, अब तो बड़े पैमाने पर सोशल मीडिया में सेंध लग जाती है। आपका वाट्सऐप बिकने लगा। मोहल्ले में वोट मांगते नेता अब आपकी चिरौरी करते नजर क्यों आएं? वाट्सऐप से आपके मन और रुझान की खाना तलाशी करते हुए मनभावन घोषणाओं से अपने वोटरों का मन जीत लें, और राजनीति में वंशवादी परंपराओं को स्थापित कर लें। परंपरा को जीना और उसकी गरिमा ग्रहण करना जैसे एक व्यावसायिक फार्मूला बन गया और इसके साथ ही उभर आई देश की मिट्टी को माथे पर लगाने की पुकार, चाहे यह मिट्टी लगी उस माथे पर हो जो पहले ही धूल धूसरित थे। इसीलिए समझाया जाता है कि बंधु, जमाना बदल गया है। नेकनीयती के सपने न देखो। नई सदी ने नई समझ दे दी है। अब सदियों से पिछड़े हुए इस देश की गुरुतर आबादी को हर समस्या का हल वृहत परिप्रेक्ष्य में करना सीखना होगा। अब समझ की व्याकरण ही न बदलो, अपने नये शब्दकोशों में शब्दों के अर्थ भी बदल डालो। वर्तमान से असंतुष्ट लोगों को अतीत की गरिमा से सराबोर कर दो। आंकड़े बताते हैं कि मिलावटी दूध के कुपथ्य ने पांच साल की उम्र के आधे से अधिक और बारह साल की उम्र तक आधे से कम बच्चे मौत के हवाले कर दिये, तो लोगों को वर्तमान के प्रति असंतोष की ज्वाला में दहकने न दो, बल्कि उन्हें बताओ कि हमारे यहां तो शुद्ध पवित्र वातावरण में कामधेनु गायों के मिल जाने की परंपरा है। तब आम के आम और गुठलियों के दाम मिलेंगे। मगर बंधुवर, हथेलियों पर सरसों तो नहीं जमाई जा सकती। इस देश में कामधेनु और कल्पवृक्ष का युग भी लौट कर आयेगा। तब यह जीवन, समाज और गलत भौतिकवादी मूल्यों का गंदलापन छंट जायेगा।

■ सुरेश सेठ

इस पदयात्रा से क्या हासिल होगा?

कुछ और हासिल हो या न हो इस 'भारत जोड़ो' पदयात्रा से, इतना तो तय है कि अगले पांच-छह महीनों के लिए राहुल गांधी भारत माता की सरजमीं को छोड़ कर कहीं नहीं जायेंगे। छोटी बात नहीं है यह। याद रखें कि नेहरू-गांधी परिवार के इस वारिस की आदत है हर दूसरे महीने चुपके से खिसक जाना किसी रहस्यमय विदेश यात्रा पर। कुछ दिन गायब रहने के बाद लौट आते हैं, लेकिन तब तक कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं के हौसले कम हो ही जाते हैं। पिछले तीन सालों में देश की इस सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी से कई वरिष्ठ नेता हार मान कर चले गये हैं। आखिरी जाने वाले ऐसे नेता थे गुलाम नबी आजाद, जिन्होंने जाते-जाते राहुल गांधी को कांग्रेस छोड़ने का मुख्य कारण बताया, वो भी उनकी माताजी को पत्र लिख कर। इस पत्र को आजाद साहब ने मीडिया और सोशल मीडिया में खूब प्रचारित किया। खैर, लौट कर आती हूं उस पदयात्रा पर, जो पिछले गुरुवार को चल पड़ी है कन्याकुमारी से और जिसका गंतव्य है कश्मीर। वादा है राहुल गांधी का कि इस यात्रा का नेतृत्व वे खुद करेंगे शुरू से अंत तक। यात्रा शुरू करने से पहले राहुल ने समुद्र किनारे एक आमसभा को संबोधित किया। मैंने उनके भाषण को ध्यान से सुना और इस लेख को लिखने से पहले उसको अखबारों में ध्यान से पढ़ा। ऐसा करने के बाद एक दो बातों का विश्लेषण किया। नई चीज यह पाई कि पहली बार कांग्रेस के इस पूर्व (और शायद भावी) अध्यक्ष ने राष्ट्रवाद और देशभक्ति को वापस कांग्रेस के हाथों में लेने की कोशिश की है। अभी तक उनका ज्यादा ध्यान रहा है मोदी पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने में, उनको गरीबों का दुश्मन और कुछ 'मुट्ठी भर' धनवानों का दोस्त साबित करने में। इतनी बार कह चुके हैं राहुल इस बात को पिछले आठ सालों में कि आरोप अब खोखला लगने लगा है। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मतदाताओं को यह आरोप बेबुनियाद लगा, वरना कांग्रेस का यह हाल न होता कि 2018 के बाद एक भी चुनाव जीती नहीं है। लेकिन अगर राष्ट्रवाद के परचम और उस 'पुराने' इंडिया की सबसे बड़ी शक्ति, जो उसकी विभिन्नता थी, कांग्रेस वापस लेने में सफल होती है, तो 2024 में मोदी को चुनौती देने में भी सफल हो सकती है। अब सुनिये, राहुल ने अपने भाषण में कौन-सी बातें कहीं, जिससे मुझे लगा कि वे समझ गये हैं कि मोदी की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वे इस देश के हर वर्ग को अपने साथ लेकर नहीं चल रहे हैं। हिंदू हृदय सम्राट बेशक बन गये हैं, लेकिन इस देश में और भी कौमें हैं, जिनमें सबसे बड़ी है मुसलमानों की कौम, जिनको पूरी तरह लगने लगा है मोदी के राज में कि उनको हिंदुओं से कम दर्जा देने की कोशिश हुई है। सो, जब राहुल ने तिरंगा उठा कर कहा कि यह हर भारतीय का है, किसी एक वर्ग का नहीं, उनकी यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। इसके बाद राहुल ने कहा, 'भारत का इतिहास, उसकी भाषायें, उसकी सभ्यता हम सबकी है, लेकिन भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रयास है कि यह झंडा, यह देश उनकी निजी जायदाद है। समझते हैं ये लोग कि इस देश का भविष्य सिर्फ वे तय कर सकते हैं। बांटना चाहते हैं देश को धर्म-मजहब और भाषाओं को लेकर दरारें पैदा करके। 'इन बातों का महत्त्व मेरी नजर में यह है कि यही एक मुद्दा है, जिसको लेकर मोदी और उनकी 'न्यू इंडिया' वाली भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस का किसी भी हाल में मुकाबला नहीं कर सकती है। बल्कि यह कहना कि वे इस स्पर्धा में हैं ही नहीं, गलत न होगा। बिल्कुल वैसे जैसे कांग्रेस की सबसे बड़ी कमजोरी है परिवारवाद, उसी तरह मोदी के भाजपा की कमजोरी है उसका उग्र हिंदुत्व, जो खोखला कर चुका है बहुत पहले मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास' वाले नारे को। नफरत का ऐसा माहौल बन गया है देश में कि अर्शदीप सिंह ने भारत-पाकिस्तान वाले क्रिकेट मैच में कैच क्या गिराई कि उसको खालिस्तानी कहने लगे सोशल मीडिया पर, ऐसे लोग जो गर्व से कहते हैं कि वे मोदी भक्त हैं। बाद में भारत सरकार की तरफ से कहा गया कि शरारत शुरू की थी पाकिस्तान में बैठे कुछ लोगों ने। शायद शुरू वहां से हुई है, लेकिन इस गंदे खेल में शामिल हुए हैं ढेर सारे भारतीय, जो मोदी भक्त हैं। पांच महीने पदयात्रा पर रहने से पता नहीं कांग्रेस पार्टी अपना खोया हुआ जनसमर्थन वापस ले पायेगी कि नहीं, लेकिन अगर वह साबित कर देती है कि असली देशभक्ति और राष्ट्रवाद का परचम उसके पास है, तो 2024 वाले आम चुनावों में वह एक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी बन के उतर सकती है युद्धभूमि में। इस देश में करोड़ों लोग ऐसे हैं जो हिंदू हैं, लेकिन हिंदुत्ववादी नहीं हैं, इसलिए कि देख चुके हैं मोदी के राज में कि इस विचारधारा ने न सिर्फ सनातन धर्म को बदनाम किया है, देश को भी बांटने का काम किया है। ढूंढ़ रहे हैं विकल्प, लेकिन इस देश में एक ही राजनीतिक दल है, जो विकल्प बन सकता है और वह है कांग्रेस। इस राजनीतिक दल का पुनर्जीवित होना देश के हित में है, लेकिन अभी तक गांधी परिवार के तीनों सदस्य ऐसे पेश आए हैं जैसे कांग्रेस को बचाने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है गांधी परिवार को बचाना।

■ तवलीन सिंह

धर्म दर्शन

श्री मद्देवी भागवतमाहात्म्यम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

व्यासजी बोले-[हे राजन्!] उन दोनों दैत्योंको मारा गया देखकर मरनेसे बचे सभी सैनिक भागकर राजा शुम्भके पास गये। कुछ सैनिकोंके अंग बाणोंसे छिद गये थे, कुछके हाथ कट गये थे, उनके पूरे शरीरसे रक्त बह रहा था; वे सब रोते हुए नगरमें पहुंचे।।1-2।।

दैत्यराज शुम्भके पास जाकर वे सब बार-बार चीख-पुकार करने लगी-हे महाराजा! हमें बचा लीजये, बचा लीजिये; नहीं तो आज हमें कालिका खा जायगी। उसने देवताओंका मर्दन करनेवाले महावीर चण्ड-मुण्डको मार डाला और वह बहुत-से सैनिकों को खा गयी। अंग-भंग हुए हमलोग इस समय भयसे व्याकुल हैं।।3-4।।

हे प्रभो! मरे पड़े हाथियों, घोड़ों, ऊंटों तथा पैदल सैनिकोंसे उस कालिकाने युद्धभूमिको अत्यन्त डरावना बना दिया है।।5।।

उसने समरभूमिमें रक्तकी नदी बना डाली है, जिसमें मांस कीचड़की भांति, मस्तकके केश सेवारके सदृश और टूटे हुए रथोंके पहिये भंवरके समान, सैनिकोंके कटे हाथ आदि मछली के समान और सिर तुम्बीके फलके तुल्य प्रतीत हो रहे हैं। वह [रुधिर-नदी] कायरोंको भयभीत करनेवाली तथा देवतओंके हर्षको बढ़ानेवाली है।।6-7।।

हे महाराज! अब आप दैत्यकुलकी रक्षा कीजिये और शीघ्र पातालोक चले आइये; अन्यथा क्रोधमें भरी वह देवी आज ही [सभी दानवोंका] विनाश कर डालेगी; इसमें सन्देह नहीं है।।8।।

हे दानवेन्द्र! अम्बिकाका वाहन सिंह भी युद्धभूमिमें दानवोंको खाता जा रहा है और कालिकादेवी अपने बाणोंसे [दैत्य सैनिकोंका] अनेक तहरसे वध कर रही है। अतएव हे राजेन्द्र! आप भी कोपके वशीभूत होकर अपने भाई निशुम्भसहित मरनेका व्यर्थ विचार कर रहे हैं।।9-10।।

हे महाराज! राक्षसकुलका नाश करनेवाली यह क्रूर स्त्री, जिसके लिये आप अपने बन्धुओंको मरवा डालना चाहते हैं, यदि आपको प्राप्त हो ही गयी तो यह आपको क्या सुख प्रदान करेगी?।।11।।

हे महाराज! जगत्में जय तथा पराजय दैवके अधीन होती है। बुद्धिमान्को चाहिये कि अल्प प्रयोजनके लिये भारी कष्ट न उठाये।।12।।

हे प्रभो! जिसके अधीन यह सारा जगत् रहता है, उस विधाताका अद्भुत कर्म देखिये कि इस स्त्रीने अकेले ही सम्पूर्ण राक्षसोंका संहार कर डाला।।13।।

- क्रमशः

संपादक के नाम पाठकों की पाती

सड़क जाम मुक्त हो

शहर में कई क्षेत्रों में रोज दिन कहीं न कहीं नया निर्माण हो रहा है। कई जगहों पर मॉल का निर्माण हो रहा है। ऐसे में शहर नये युग में प्रवेश कर रहा है। पहले हम बड़े शहरों में ही मॉल देखा करते थे। अब हमारे शहर में भी मॉल बन रहे हैं। लेकिन शहर में कई क्षेत्र रोज दिन जाम की चपेट में आते रहते हैं। प्रशासन के द्वारा जाम को लेकर प्रतिदिन वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा। बाजार की सड़को के बीच जो लोग अपने बाइक को लगा रहे है उसे प्रशासन के लोग थाना ले जा रहे है और उन पर जुर्माना लगाया जा रहा है। लोगों का कहना है कि शहर में पार्किंग की व्यवस्था नहीं गाड़ी को लगाये तो कहा लगायें। प्रशासन के द्वारा जाम को लेकर चलाये जा रहे अभियान सही है। लेकिन इसके साथ बाइक के लिए प्रशासन पार्किंग की व्यवस्था करें। ऐसे में शहर में बाइक पार्किंग की बहुत शिद्दत के साथ जरूरत महसूस की जा रही है। शहर में अधिकांश सड़क बाइक व अन्य दो पहिया वाहनों के कारण जाम रहते हैं। अगर इन बाइकों के लिए शहर में एक उचित जगह देखकर उनका पार्किंग स्थल बना दिया जाये तो शहर को जाम से मुक्ति मिल सकती है। ज्ञात हो कि शहर में रोज दिन गांव से सैकड़ों की संख्या में लोग बाइके से आते हैं। मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र राष्ट्रीय नवीन मेल के माध्यम से प्रशासन व निगम से बाइक पार्किंग बनाने का अनुरोध करता हूं।

■ अनुराग तिवारी मेदिनीनगर।

देश की हर सीमा की पुख्ता सुरक्षा जरूरी

पिछले सप्ताह दिल्ली में आहूत एक बैठक में जम्मू-कश्मीर संभाग की सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने साफ कहा कि प्रधानमंत्री एक शांतिपूर्ण और समृद्ध कश्मीर देखना चाहते हैं। चूंकि बैठक जम्मू-कश्मीर के लिए हो रही थी, इसलिए प्रधानमंत्री की मंशा जम्मू-कश्मीर को लेकर क्या है, उसे साझा किया गया। लेकिन, हमारी सीमा तो सात देशों-बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान, नेपाल, म्यांमार, श्रीलंका और अफगानिस्तान से भी लगती है। यदि हम भूटान की सीमा को भी जोड़ दें तो आठ देशों से भारत की सीमा लगती है। निश्चित रूप से अन्य देशों, जिनसे हमारी सीमा जुड़ती है, के लिए भी अलग-अलग बैठकें होती होंगी, लेकिन इनमें से कुछ देश हमारे मित्र हैं। उनसे हमारे अच्छे संबंध हैं, इसलिए उन देशों की सीमाओं के साथ हम उतने आक्रामक नहीं होते हैं। पाकिस्तान चूंकि हमारे लिए महत्वपूर्ण इसलिए हो जाता है, क्योंकि उसका जन्म ही भारत विरोध के लिए हुआ है और वह भारत पर हर समय किसी-न-किसी रूप में हमला करने की ताक में लगा रहता है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि बंटवारे के बाद से अब तक उसके जितने भी शासक हुए, किसी ने संबंधों को सुधारने की दिशा में कोई पहल नहीं की। पाकिस्तान के राजनेताओं की राजनीति चलती ही भारत विरोध पर है, फिर वह इसे सुधारने का प्रयास करें तो क्यों? हमारे देश की सीमा पाकिस्तान से 2,900 किलोमीटर लंबी, यानी 1,800 मील की है, जिसकी सुरक्षा करना टेढ़ी खीर है। विभाजन की घोषणा 3 जून की शाम को आल इंडिया रेडियो पर माउंटबेटन ने की थी। महीनों के व्यस्त और गहन विचार-विमर्श तथा वार्ता, जिसमें लंदन में ब्रिटिश सरकार, भारत सरकार और एक भारतीय राय रखने वाले व्यापक क्षेत्र शामिल थे, और साथ में इस खेल के केंद्र में मौजूद थे कांग्रेस, मुस्लिम लीग और सिख प्रतिनिधि। लंदन में प्रधानमंत्री एटली ने दोपहर 3.30 बजे हाउस ऑफ कॉमन्स में एक बयान दिया। यह भारत के रेडियो पर प्रसारित किया गया था। संबोधित माउंटबेटन ने किया था। वर्ष 2000 में एक बार बाघा बॉर्डर पर सीमा पार के एक पाकिस्तानी नागरिक से पूछा कि इतनी लंबी सीमा सुरक्षा के लिए आपके पाकिस्तान की क्या भूमिका रहती है? उसका उत्तर बहुत ही विचलित करने वाला था। उसका कहना था कि यह फेंसिंग आपने अपने देश की सुरक्षा के लिए लगाई है। ऐसे में पाकिस्तान इसकी सुरक्षा की जहमत क्यों उठाये। इसी का तो परिणाम है कि जब भी देखें, सेंध मारकर वे हमारी सीमा में घुसकर उत्पात मचाते हैं। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो, जब पाकिस्तान द्वारा किसी-न-किसी प्रकार के आतंक की सूचना न मिलती हो। कश्मीर घाटी के निवासी तो इन घटनाओं को सियासतदानों का खेल मानते हैं। उनका कहना है कि पाकिस्तान कंगाल देश है। उसकी यह हैसियत नहीं कि वह हिंदुस्तान में घुसकर यहां के आबोहवा को खराब करे। घुसपैठ और आतंक फैलाना शुद्ध सियासी खेल है और नुकसान आम भारतीय जनता को उठाना पड़ता है। गृहमंत्री ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि इस छद्म युद्ध को जीतने के लिए सीमापर आतंकियों, हथियार व गोला-बारूद की आवाजाही का डर पूरी तरह समाप्त करना जरूरी है। पुलवामा जैसी घटनाओं से अब जनमानस त्रस्त हो गया है। उसकी यह इच्छा कभी नहीं होती कि खामख्वाह उस पर कथित आतंकी हमला हो और वे अशांत रहें। अपनी यात्रा के दौरान कई स्थानीय निवासियों ने कहा कि हम वर्षों से अशांत हैं और यहां के लगभग सभी निवासी इस आतंकी युद्ध में अपने परिवार के किसी-न-किसी को खोया है। इसलिए अब और नहीं। यह खेल बंद होना चाहिए। सरकार को इस पर कड़ाई से निर्णय लेने की जरूरत है। पाकिस्तान तो चोर की तरह घुसकर हमारे यहां बार-बार घुसपैठ करता रहता है, लेकिन वहीं चीन को देखें, तो वह डाकू की तरह हमारी सीमाओं में घुसकर अपना गांव तक बसा लेता है। दादागीरी यह कि इसे मानने के लिए भी वह तैयार भी नहीं होता। देश बड़ा हो तो स्वाभाविक है उसकी सीमाएं भी बड़ी होंगी। चीन अंतरराष्ट्रीय मैक मोहन सीमा-रेखा को नहीं मानता है भारत-चीन की सीमा 4,047 किलोमीटर की है, जो भारत के पांच राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश जैसे दुरूह राज्यों से गुजरता है।

■ निशिकांत ठाकुर

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. की ओर से 502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लि.)प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची, झारखंड में मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 06562-240042/ 222539, फैक्स नंबर : 06562-241176/ 231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-2283384, फैक्स नंबर : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25, निचली मंजिल, तानसेन मार्ग, (बंगाली बाजार), नयी दिल्ली-1, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com, (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)।

अंडरराइटर कैसे बनें व क्या कौशल आवश्यक है इसके लिए?

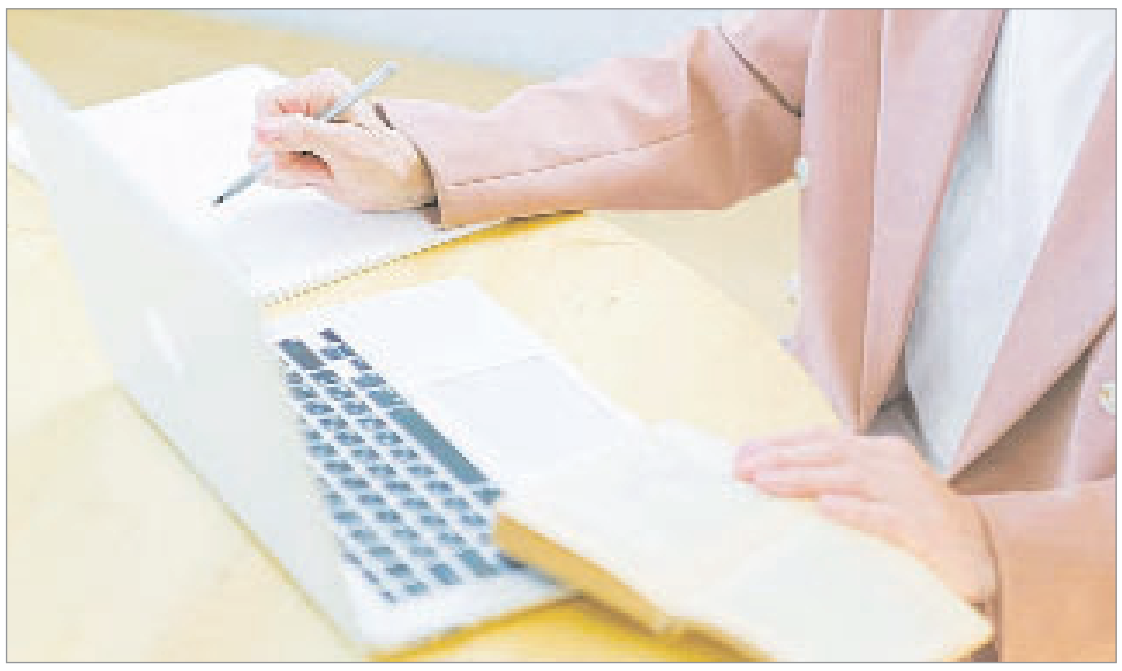

अंडरराइटर अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय लेता है कि अनुबंध जोखिम भरा होगा या यह लेने लायक होगा या नहीं। उदाहरण के लिए एक हामीदार जो स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के साथ काम करता है, आवेदकों के स्वास्थ्य जोखिमों का विश्लेषण करता है।

वित्तीय उद्योग विभिन्न पेशेवरों से भरा हुआ है जो कई अलग-अलग क्षमताओं में सेवा करते हैं। बैंक टेलर, बीमा एजेंट, वित्तीय सलाहकार, पोर्टफोलियो मैनेजर कुछ ऐसे पद हैं जो इस उद्योग को बनाते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि कौन से पेशेवर क्रेडिट और उधार देने के फैसले के पीछे जोखिम का आकलन करते हैं? इन व्यक्तियों को हामीदार या अंडरराइटर कहा जाता है।

अंडरराइटर्स मूल्यांकन करते हैं और मूल्यांकन करते हैं कि वित्तीय जोखिम लेने लायक है या नहीं। आप वित्तीय उद्योग के विभिन्न हिस्सों में अंडरराइटर्स पा सकते हैं, जिसमें उधार, बीमा, इक्विटी बाजार और यहां तक कि सुरक्षा व्यापार भी शामिल है। जब भी आप व्यक्तिगत ऋण, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी, या बंधक के लिए आवेदन करते हैं तो कुछ कंपनियां अपने आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (initial public offerings - IPOs) लॉन्च करती हैं, जबकि अन्य आपके आवेदन की समीक्षा करती हैं।

यदि आपको यह एक रोमांचक करियर पथ की तरह लगता है, तो आप शैक्षिक आवश्यकताओं और पेशेवर योग्यताओं के बारे में सोच सकते हैं जिनकी आपको आवश्यकता होगी।

अंडरराइटर की भूमिका क्या होती है?

अंडरराइटर अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय लेता है कि अनुबंध जोखिम भरा होगा या यह लेने लायक होगा या नहीं। उदाहरण के लिए एक हामीदार जो स्वास्थ्य बीमा कंपनियों के साथ काम करता है, आवेदकों के स्वास्थ्य जोखिमों का विश्लेषण करता है। एक अंडरराइटर के काम में उम्र, वर्तमान स्वास्थ्य स्थिति और चिकित्सा और पारिवारिक इतिहास सहित आवेदक के विवरण की जांच करना शामिल होता है। इस जानकारी का उपयोग करते हुए और अन्य औपचारिकताओं के बाद वह अंडरराइटिंग सॉफ़्टवेयर में जानकारी दर्ज करता है। सॉफ्टवेयर प्रीमियम की राशि और बीमा प्रदाता कंपनी को पॉलिसी पर लागू होने वाली शर्तों का निर्धारण करता है।

एक स्वास्थ्य बीमा कंपनी का हामीदार चिकित्सा जानकारी की समीक्षा करता है, जबकि एक ऋण हामीदार ग्राहक के क्रेडिट इतिहास जैसे कारकों का आकलन करता है। अंडरराइटर का काम जटिल होता है। बीमा हामीदार व्यक्तियों को जोखिम के स्वीकार्य स्तर को निर्धारित करने में सक्षम होना चाहिए। जटिल परिस्थितियों की जांच करते समय एक हामीदार को शोध करने और बहुत सारी जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता हो सकती है। एक हामीदार ऋण और इक्विटी बाजार, गिरवी और बीमा जैसे क्षेत्रों में किसी अन्य पार्टी के जोखिम का आकलन करता है।

अंडरराइटर बनने के लिए आवश्यकताएं

यदि आप एक हामीदार बनना चाहते हैं तो कुछ चीजें हैं जिन्हें आपको ध्यान में रखना होगा। आवश्यकताएं अक्सर उप-क्षेत्र और उस क्षेत्राधिकार के आधार पर भिन्न होती हैं जिसमें आप काम करते हैं।

अंडरराइटर बनने के लिए आपको स्नातक की डिग्री की आवश्यकता हो सकती है जिसमें अर्थशास्त्र, व्यवसाय, लेखा, वित्त, या गणित में शोध शामिल होता है। अंडरराइटिंग के लिए विश्लेषणात्मक, कंप्यूटर, संचार और गणित कौशल सहित विशेष कौशल की एक श्रृंखला की आवश्यकता होती है। नए कर्मचारियों को वरिष्ठ हामीदारों से ऑन-द-जॉब प्रशिक्षण मिलता है और उन्हें अपने करियर में आगे बढ़ने के लिए प्रमुख प्रमाणन कार्यक्रमों को पूरा करना होगा। आप एंट्री-लेवल की नौकरी से लेकर वरिष्ठ पद तक, उच्च वेतन के साथ पाँच से 10 वर्षों के भीतर अपना काम कर सकते हैं।

एक हामीदार बनने के लिए आपको आमतौर पर स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होती है। गणित, बिजनेस, अर्थशास्त्र और वित्त के पाठ्यक्रम इस क्षेत्र में फायदेमंद होते हैं क्योंकि वे निश्चित रूप से आपके द्वारा किए जा रहे किसी भी काम में उपयोगी हो सकते हैं। एक अच्छा हामीदार भी विस्तार-उन्मुख होता है और उसके पास गणित, संचार, समस्या-समाधान और निर्णय लेने में उत्कृष्ट कौशल होता है।

एक बार काम पर रखने के बाद आप आमतौर पर वरिष्ठ हामीदारों की देखरेख में काम पर प्रशिक्षण लेते हैं। एक प्रशिक्षु के रूप में आप सामान्य जोखिम कारकों और हामीदारी में उपयोग किए जाने वाले बुनियादी अनुप्रयोगों के बारे में सीखते हैं। जैसे-जैसे आप अधिक अनुभवी होते जाते हैं आप स्वतंत्र रूप से काम करना शुरू कर सकते हैं और अधिक जिम्मेदारी ले सकते हैं।

शिक्षा ही एकमात्र ऐसी चीज नहीं है जो आपको इस क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद कर सकती है। विशेष कौशल का एक सेट भी है जो आपको अपना करियर बनाने में और आगे बढ़ने में आपकी मदद कर सकता है। यहां कुछ प्रमुख कौशल दिए गए हैं जिनकी आपको आवश्यकता होगीः

- विश्लेषणात्मक कौशल
- संचार कौशल
- कंप्यूटर कौशल
- गणित कौशल

अंडरराइटिंग में कॅरियर शुरू करने का सबसे आसान तरीका अच्छी शिक्षा प्राप्त करना है। गणित, लेखा, अर्थशास्त्र और किसी भी अन्य संबंधित क्षेत्र में स्नातक की डिग्री मदद करती है। सुनिश्चित करें कि आपके पास विश्लेषणात्मक और संचार कौशल सहित सही कौशल हैं और प्रमाणित हों। एक बार जब आपके पास वह सब कुछ हो जाए तो प्रवेश स्तर की नौकरियों की तलाश करें जो आपको वह प्रशिक्षण प्रदान कर सकें जो आपको अपने कॅरियर में आगे बढ़ने के लिए चाहिए।

❖ **जे. पी. शुक्ला**

डीआरडीओ में निकली हैं बंपर नौकरियां दसवीं पास भी कर सकते हैं आवेदन

अधिसूचना के मुताबिक डीआरडीओ ने सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट बी और टेक्निकल ए के लिए नौकरी आवेदन मांगे हैं। इन पदों के लिए 1900 से ज्यादा भर्ती किए जाने की योजना है। इन पदों के लिए दसवीं पास से लेकर ग्रेजुएट व्यक्ति तक आवेदन कर सकते हैं। पदानुसार शैक्षणिक योग्यता निर्धारित की गई हैं। सरकारी नौकरी की चाह तो हर व्यक्ति की होती है और इसके लिए लोग बहुत सी तैयारियां भी करते हैं। अगर आप भी एक सरकारी नौकरी पाने की इच्छा रखते हैं तो अब डीआरडीओ आपके लिए एक सुनहरा मौका लेकर आया है। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन, ने 1900 से अधिक नौकरियो के लिए नोटिफिकेशन जारी किया है, जिसमें दसवीं पास से लेकर ग्रेजुएट व्यक्ति तक आसानी से आवेदन कर सकते हैं।

किन पदों के लिए निकली है नौकरी : अधिसूचना के मुताबिक डीआरडीओ ने सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट बी और टेक्निकल ए के लिए नौकरी आवेदन मांगे हैं। इन पदों के लिए 1900 से ज्यादा भर्ती किए जाने की योजना है।

आवेदन के लिए आवश्यक शैक्षणिक योग्यता : इन पदों के लिए दसवीं पास से लेकर ग्रेजुएट व्यक्ति तक आवेदन कर सकते हैं। पदानुसार शैक्षणिक योग्यता निर्धारित की गई हैं। जहां सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट बी के लिए उम्मीदवार के पास एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थान से साइंस में ग्रेजुएट की डिग्री या इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी या कंप्यूटर विज्ञान में डिप्लोमा होना आवश्यक है। वहीं, टेक्निकल ए पद के लिए उम्मीदवार के पास किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से दसवीं का सर्टिफिकेट व मान्यता प्राप्त संस्थान से आईटीआई का सर्टिफिकेट होना चाहिए। जारी अधिसूचना के अनुसार उम्मीदवार की उम्र 18-28 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

पदों की संख्या की विस्तृत जानकारी : डीआरडीओ ने कुल 1901 पदों के लिए आवेदन मांगे हैं। जिसमें सीनियर टेक्निकल असिस्टेंट बी के लिए 75 पद और टेक्नीशियन ए के लिए 826 पद के लिए नौकरियां निकली हैं।

कैसे कर सकते हैं आवेदनः अगर आप इन पदों के लिए आवेदन करना चाहते हैं तो आप डीआरडीओ की आधिकारिक वेबसाइट https://www.drdo.gov.in/ पर जाकर आवेदन कर सकते है। इन पदों के लिए आवेदन प्रक्रिया 3 सितंबर से शुरू हो चुकी है और आवेदन की अंतिम तिथि 23 सितंबर 2022 तक है।

हिन्दी से मुहब्बत

हिन्दी से है हमें मुहब्बत,
हिंदी से ही प्यार है।
हिंदी भाषा जन जन की,
तन मन से स्वीकार है।
हिन्दी से पाया अपनापन, हिंदी से पहचान है।
हिंदी दिलों में भर देता हुंकार है,
हिंदी ज्ञान का फैलाता विस्तार है।
प्यार अगर मेहबूबा से हो तो हिंदी में इजहार है।
देशभक्ति हो या फिर दुश्मन को लगानी फटकार है।
झट से हिंदी आती जुबां पर सबको यह स्वीकार है।
हिंदी से है हमें मुहब्बत,
हिंदी से ही प्यार है।
हिंदी ऐसा है सब्जेक्ट,
जिसका नहीं कोई साइड इफेक्ट।
हिंदी में इसलिए सब है परफेक्ट।
हिंदी ने हमें दिया रिस्पेक्ट और कई उपहार है,
हिंदी से ही है रौनक, हिंदी से ही विश्व पटल पर
भारतीयों की छवि दमदार है।
लाख मुश्किलें आये फिर भी हिंदी ही गुलजार है।
हिंदी की फैली है जग में खुशबू,
हिंदी से ही बागों में बहार है।
हिंदी से हमें मिली शोहरत,
हिंदी से ही संस्कार है।
हिंदी से ही नभ और बाह्मांड,
हिंदी से ही मिला भरा पूरा परिवार है।
हिंदी से है हमें मुहब्बत,
हिंदी से ही प्यार है।
हिंदी में करो बातें,
हिंदी में ही रखो मोबाइल और लैपटाप
हिंदी में ही टाइप करों जज्बातें
हिंदी में लिखो बायोडाटा और किताबें।
हिंदी में कविता व कहानियां की भरमार है।
हिंदी से है हमें मुहब्बत,
हिंदी से ही प्यार है।
इंग्लिश विंग्लिश सुनने,बोलने में होती दिक्कत,
फिर क्यों इंग्लिश पीपुल्स की भारत में भरमार है।
फिरंगियों को भी हमने हिंदी में लगायी फटकार है।
हिंदी का हम मान करें, हिंदी का सम्मान करें हिंदी है हमारी राष्ट्रभाषा,
हिन्दी से पूरी कर पाता हरकोई अपनी अभिलाषा।
हिंदी से है हमें मुहब्बत, हिंदी से ही प्यार है।

❖ **ऋतुराज वर्षा**

गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर की स्वदेशी वैक्सीन तैयार

डॉ सिंह ने कहा कि बड़े पैमाने पर रोके जाने योग्य होने के बावजूद गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर दुनियाभर में कैंसर से होने वाली लगभग एक-चौथाई मौतों के लिए जिम्मेदार है। वर्तमान अनुमान बताते हैं कि हर साल लगभग 1.25 लाख महिलाओं में गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर के मामले सामने आते हैं। केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) विज्ञान और प्रौद्योगिकी; राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान; पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री, डॉ जितेंद्र सिंह ने गुरुवार को गर्भाशय-ग्रीवा (डी१५्रू') कैंसर की रोकथाम के लिए भारत की पहली स्वदेशी रूप से विकसित वैक्सीन के विकास की घोषणा की है।

चतुष्कोणीय मानव पैपिलोमा वायरस (क्यूएचपीवी) वैक्सीन पर पिछले लगभग 10 वर्षों के दौरान किये गए वैज्ञानिक अनुसंधान के सभी चरणों की समाप्ति की घोषणा करते हुए, केंद्रीय मंत्री ने इस उपलब्धि को हासिल करने में वैज्ञानिकों एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), और इसके सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम- जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक) के प्रयासों की सराहना की। डॉ सिंह ने कहा, 'यह भारत को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के करीब ले जाता है। यह घोषणा की गई है कि वैक्सीन की खुराक के पर्याप्त मात्रा में उत्पादन और वितरण की तैयारी होने के बाद वैक्सीन को लॉन्च किया जाएगा। यह वैक्सीन 9-14 वर्ष की आयु वर्ग की लड़कियों को दो खुराक, और 15-26 आयु वर्ग की लड़कियों एवं महिलाओं को तीन-खुराक के रूप में दी जाएगी। डॉ सिंह ने कहा कि बड़े पैमाने पर रोके जाने योग्य होने के बावजूद गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर दुनियाभर में कैंसर से होने वाली लगभग एक-चौथाई मौतों के लिए जिम्मेदार है। वर्तमान अनुमान बताते हैं कि हर साल लगभग 1.25 लाख महिलाओं में गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर के मामले सामने आते हैं। भारत में इस बीमारी से हर वर्ष 75 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है।

भारत में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारकों के कारण निवारक चिकित्सा के बारे में कम जागरूकता की बात को रेखांकित करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 'आयुष्मान भारत' जैसी योजनाओं की बदौलत गरीब और कमजोर आबादी को अब 05 लाख रुपये तक का बीमा कवरेज प्राप्त है, जिससे निवारक दवाओं और स्वास्थ्य सेवाओं तक उनकी पहुँच आसान हुई है। कोविड-19 के लिए वैक्सीन विकास और निर्माण प्रक्रिया के दौरान नवंबर 2020 में; जाइडस बायोटेक पार्क अहमदाबाद, भारत बायोटेक हैदराबाद, और सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया पुणे में प्रधानमंत्री द्वारा की गयी समीक्षा यात्राओं का उल्लेख करते हुए, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री ने उस समय रेखांकित किया था कि 'भारत टीकों को न केवल अच्छे स्वास्थ्य, बल्कि वैश्विक बेहतरी के रूप में देखता है, और यह भारत का कर्तव्य है कि हम अपने पड़ोसी राष्ट्रों सहित अन्य देशों को वायरस के खिलाफ सामूहिक लड़ाई में सहायता करें।' उन्होंने यह भी बताया कि कार्यान्वयन के एक वर्ष के भीतर 'मिशन कोविड सुरक्षा' ने कैडिला हेल्थकेयर द्वारा कोविड-19 के लिए दुनिया की पहली डीएनए वैक्सीन के विकास से लेकर भारत की पहली `फ्ठअ वैक्सीन और इंट्रानैसल वैक्सीन उम्मीदवार के विकास के लिए समर्थन जैसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर के खिलाफ नया टीका, जिसे 'सवावैंक' नाम दिया गया है, बिल ऐंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के साथ डीबीटी और बाइरैक की साझेदारी में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विकसित किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने ऐसे परिणाम-उन्मुख उत्पादों के लिए एकीकृत दृष्टिकोण की भावना के साथ अकादमिक, अनुसंधान और उद्योगों की समान भागीदारी की आवश्यकता पर बल दिया है। डॉ राजेश गोखले, सचिव, डीबीटी; डॉ एन. कलाइसेल्वी, डीजी, सीएसआईआर; और अदार सी. पूनावाला, सीईओ, सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, पुणे ने आशा व्यक्त की कि नये टीके का सफल विकास देश में शोधकताओं और उद्योग के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा।

डिम्बग्रंथि के कैंसर के खिलाफ बहादुरी से लड़ने और जीत हासिल करने वाली फिल्म स्टार मनीषा कोइराला वर्चुअल रूप से समारोह में शामिल हुईं और वैक्सीन लाने के लिए सभी हितधारकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, 'यह भारत और दुनियाभर की महिलाओं के लिए एक खास दिन है।'

डॉ अलका शर्मा, वरिष्ठ सलाहकार, डीबीटी और एमडी, बाइरैक ने सभा का स्वागत किया। जबकि, डॉ शिर्शेंदु मुखर्जी, प्रभारी, मिशन कोविड सुरक्षा, बाइरैक ने प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिंदी सच्चा रंग

सुनते जो बोले वही,
हिंदी सच्चा रंग।
अपनी भाषा जानिए,
जीतेंगे हर जंग।।
अंग्रेजी बंधन सदा,
बंधे हैं हम लोग-
हिंदी अपना लो सभी,
जीवन भरे उमंग।।

माँ हिंदी संस्कार की,
अंग्रेजी का राज।
निज भाषा की दुर्दशा,
करते हैं हम आज।।
हिंदी को सम्मान दें,
करें नहीं अपमान -
चकाचौंध सब खो गए,
आरत सकल समाज।।

❖ **खुशबू बरनवाल 'सीपी'**

इन फलों को एक साथ खायेंगे तो हो जायेंगे बीमार

हम सभी ने ऐसा कभी ना कभी किया ही है। पपीता काटकर उस पर नींबू निचोड़कर चाट का स्वाद लिया है। लेकिन इस संयोजन से बचना बेहतर है। इससे आपको एनीमिया या हीमोग्लोबिन असंतुलन की समस्या हो सकती है। इसके अलावा, बच्चों को तो कभी भी पपीता व नींबू साथ में खाने के लिए ना दें। फलों को सेहत का साथी माना गया है। हर व्यक्ति को यह सलाह दी जाती है कि वह अपनी डेली डाइट में तरह-तरह के फलों को अवश्य शामिल करें। कई तरह के विटामिन्स और मिनरल्स से भरपूर यह फल आपकी सेहत का ख्याल रखने में मदद करते हैं। लेकिन यह देखा जाता है कि अक्सर लोग अपने टेस्ट बड को शांत करने के लिए कई तरह के फलों को एक साथ काटकर व चाट बनाकर इनका सेवन करते हैं। हालांकि, कई फल ऐसे होत हैं, जिन्हें एक साथ खाने की सलाह नहीं दी जाती है।

खरबूजे के साथ मिलाएं अन्य फल

अगर आपको तरबूज या खरबूजा खाना बेहद अच्छा लगता है तो कोशिश करें कि आप इनके साथ किसी अन्य फल के साथ मिक्स करके ना खाएं। हालांकि, तरबूज व खरबूजे का सेवन एक साथ किया जा सकता है। दरसअल, यह अन्य फलों की तुलना में अधिक तेजी से पचते हैं। खरबूजे में पानी की मात्रा अधिक होती है, इसलिए फलों के साथ मिलाने पर वे ठीक से पच नहीं पाते हैं।

खट्टे फलों और मीठे फलों को ना खाएं एक साथ

अगर आप अंगूर, स्ट्रॉबेरी, सेब, अनार और आड़ू जैसे एसिडिक या सब-एसिडिक फल का स्वाद ले रहे हैं तो उन्हें केले और किशमिश जैसे मीठे फलों के साथ नहीं मिलाना चाहिए। जब आप ऐसा करते हैं तो इससे ना केवल पाचन संबंधी समस्याएं होती हैं, बल्कि मतली और सिरदर्द भी हो सकता है।

पपीते की चाट में ना मिलाएं नींबू

हम सभी ने ऐसा कभी ना कभी किया ही है। पपीता काटकर उस पर नींबू निचोड़कर चाट का स्वाद लिया है। लेकिन इस संयोजन से बचना बेहतर है। इससे आपको एनीमिया या हीमोग्लोबिन असंतुलन की समस्या हो सकती है। इसके अलावा, बच्चों को तो कभी भी पपीता व नींबू साथ में खाने के लिए ना दें।

सब्जियों के साथ ना खाएं फल

कुछ लोग अपने सलाद के बाउल में बहुत सारे फल और सब्जियों को शामिल करते हैं। लेकिन वास्तव में आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। फल और सब्जियां अलग तरह से पचती हैं। पोषण विशेषज्ञों के अनुसार, वे आंत तक पहुंचने तक आंशिक रूप से पचते हैं। उदाहरण के लिए, गाजर और संतरे को एक साथ खाने की सलाह नहीं दी जाती है क्योंकि इस संयोजन से पित्त की अधिकता हो सकती है और यहां तक कि हार्ट बर्न भी हो सकता है।

आज का राशिफल

मेष राशि : बातचीत में भी सन्तुलित रहें। सन्तान की ओर से सुखद समाचार मिल सकते हैं। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मानसिक शान्ति रहेगी। कारोबार के विस्तार में किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है।

वृष राशि : धैर्यशीलता में कमी रहेगी। परिवार का साथ रहेगा। बौद्धिक कार्यों में सफल रहेंगे। आय में वृद्धि होगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। आत्मसंयत रहें।

मिथुन राशि : कार्यक्षेत्र में परिश्रम अधिक रहेगा। परिवार का साथ मिलेगा। आय की स्थिति में सुधार होगा। बातचीत में सन्तुलित रहें। वस्त्रों के प्रति रुझान बढ़ेगा।

कर्क राशि : मानसिक शान्ति बनाये रखने के लिए प्रयास करें। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। कारोबार में वृद्धि होगी।

सिंह राशि : घर-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। कारोबार में वृद्धि होगी। वस्त्रों पर खर्च बढ़ेंगे। मानसिक शांति रहेगी। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा।

कन्या राशि : आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे। नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। कार्यभार और आय में वृद्धि हो सकती है, परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

तुला राशि : कारोबार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। कुटुम्ब के किसी बुजुर्ग से धन की प्राप्ति हो सकती है। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ सकती है।

वृश्चिक राशि : शैक्षिक एवं बौद्धिक कार्यों में मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। धैर्यशीलता बनाये रखें।

धनु राशि : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ सकती है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी, परन्तु स्वास्थ्य का ध्यान रखें। संयत रहें। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

मकर राशि : आलस्य भी अधिक हो सकता है। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकते हैं। सचेत रहें। वाणी में सौम्यता रहेगी।

कुंभ राशि : मन परेशान रहेगा। अपनी भावनाओं को वश में रखें। परिवार का साथ मिलेगा। नौकरी में स्थान परिवर्तन की सम्भावना बन रही है। बातचीत में संयत रहें।

मीन राशि : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। आय में वृद्धि होगी। वस्त्रों एवं वाहन के रखरखाव पर खर्च बढ़ेंगे।

न्यूज गैलरी

लंबी कूद खिलाड़ी जेस्विन एल्ड्रिन ने 'गोल्डन फ्राई सीरीज मीट' में जीता गोल्ड

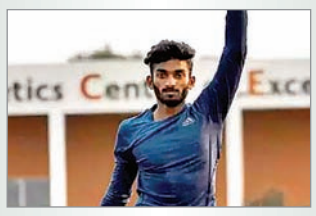

नयी दिल्ली (एजेंसी)। लंबी कूद में भारत के शीर्ष खिलाड़ी जेसविन एल्ड्रिन ने 8.12 मीटर के प्रभावशाली प्रयास के साथ लिकटेंस्टीन में आयोजित तीसरी 'गोल्डन फ्राई सीरीज एथलेटिक्स मीट' में स्वर्ण पदक जीता। एल्ड्रिन ने पहली बार भारत के बाहर आठ मीटर की बाधा पार की है। वह पिछले मुकाबलों में आठ मीटर की दूरी छूने में नाकाम रहे थे। एल्ड्रिन ने ट्वीट किया, लिकटेंस्टीन में 'गोल्डन फ्लाई सीरीज' में 8.12 मीटर के प्रयास के साथ वास्तव में खुश हूं। यह लंबा सत्र रहा, जिसमें अभी एक और स्पर्धा है। रविवार को इसमें चेक गणराज्य के राडेक जुस्का 7.70 मीटर के साथ दूसरे जबकि नॉर्वे के हेनरिक फ्लैटनेस 7.66 मीटर के साथ तीसरे स्थान पर थे। लंबी कूद में प्रतिस्पर्धा कर रहे त्रिकूद खिलाड़ी प्रवीण चित्रावल 7.58 मीटर के साथ चौथे स्थान पर रहे।

तरनदीप और रोहित रहे गढ़वाल के हीरो

नयी दिल्ली (एजेंसी)। गढ़वाल एफसी ने को रोहित गोसाई के शानदार गोल और गोली तरणजीत के जानदार बचाव से दिल्ली प्रीमियर लीग के एक महत्वपूर्ण मैच में सुदेवा दिल्ली एफसी को हराकर न सिर्फ पूरे अंक पाये बल्कि पराजित टीम की खिताबी उम्मीदों को भी आहत किया। आज यहां नेहरू स्टेडियम पर खेले गए रोमांचक मुकाबले में दो पेनल्टी गंवाने वाली सुदेवा अपनी हार के लिए खुद जिम्मेदार रही। गढ़वाल की जीत के हीरो गोलकीपर तरणजीत रहे, जिसने दो स्पॉट किक बचा कर वाहवाही लूटी। गढ़वाल ने भी मौके गंवाए लेकिन अंतिम मिनटों में रोहित गोसाई ने दर्शनीय हेडर से विजयी गोल जमाया। आज के नतीजे से सुदेवा 16 मैचों में 28 और गढ़वाल 29 आकों पर है, जबकि दिल्ली एफसी 33 अंक लेकर शीर्ष पर चल रही है। खेलों इंडिया महिला प्रीमियर लीग में सिग्नेचर और हंस क्लब ने ग्रोइंग और रॉयल रेंजर्स को क्रमशः दो-दो गोलों से हराकर पूरे अंक अर्जित किये। सिग्नेचर के लिए प्लेयर ऑफ द मैच आशा और अनुष्का शमूएल ने गोल किए। हंस क्लब के दोनों गोल अनीता ने जमाये। प्रेरणा को श्रेष्ठ खिलाड़ी आंका गया।

कप्तानी पर आजीवन बैन को बदलने पर चर्चा करेंगे वॉर्नर व क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया

सिडनी (एजेंसी)। डेविड वॉर्नर आगामी हफ्तों में खुद की कप्तानी पर लगे आजीवन प्रतिबंध को समाप्त करने के लिए क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) से चर्चा करेंगे क्योंकि बोर्ड पूर्व वनडे कप्तान आरोन फिंच की जगह यह जिम्मेदारी किसी अन्य खिलाड़ी को सौंपना चाहता है। फिंच ने खराब फॉर्म के कारण रविवार को वनडे क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की जबकि अगले साल भारत में होने वाले 50 ओवर के विश्व कप के लिये महज 12 महीने का समय बचा है। टेस्ट कप्तान पैट कमिंस इस जिम्मेदारी को संभालने के लिए प्रबल दावेदार हैं, लेकिन यह निर्भर करेगा कि वह अपना कार्यभार संभाल सकेंगे या नहीं। लेकिन वॉर्नर भी इस दौड़ में शामिल हो सकते हैं क्योंकि कई पूर्व और मौजूदा खिलाड़ियों ने उनके आजीवन प्रतिबंध को समाप्त करने की बात कही है। वॉर्नर ने कहा, मैंने निक हॉकले से बात की है, हम मिलने की कोशिश करेंगे।'

कोई उपलब्धि व्यक्तिगत नहीं है, बल्कि टीम के प्रयासों का परिणाम है : सविता

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारतीय महिला हॉकी टीम की गोलकीपर सविता ने एफआईएच महिला गोलकीपर ऑफ द ईयर अवार्ड 2021-22 के लिए नामित होने पर आभार व्यक्त किया और कहा कि उन्हें लगता है कि वह सही दिशा में आगे बढ़ रही हैं। पिछले संस्करण में इसी श्रेणी में पुरस्कार जीतने वाली सविता ने कहा कि उनके साथियों और कोचिंग स्टाफ का समर्थन मददगार साबित हुआ है। सविता ने कहा, लगातार वर्षों में नामांकित होने के बारे में मुझे काफी अच्छा लग रहा है। हमने पूरे साल टोक्यो 2020 ओलंपिक के बाद कड़ी मेहनत की। नामांकन प्राप्त करने से मुझे लगता है कि मैं प्रशिक्षण में सही दिशा में आगे बढ़ रही हूं।

32 वर्षीय सविता ने कहा, कोचिंग स्टाफ और खिलाड़ियों ने काफी सहयोग किया है। हमने हमेशा हर प्रतियोगिता में एक साथ काम किया है। हम में से किसी के लिए कोई उपलब्धि व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि टीम के प्रयासों का परिणाम है। एक गोलकीपर के रूप में, मेरा काम यह सुनिश्चित करना है टीम मेरे प्रदर्शन से खुश है और हम सभी परिणाम प्राप्त करने में एक-दूसरे की मदद करने का प्रयास करते हैं। यदि हम में से एक को नामांकित किया जाता है, तो टीम के प्रत्येक सदस्य को प्रशंसा मिलती है और यही मुझे खुश करता है।

सविता ने एफईएच प्रो लीग 2021/22 के डेब्यू सीजन में कप्तान के रूप में भारतीय महिला हॉकी टीम का नेतृत्व किया, जहाँ टीम तीसरे स्थान पर रही। उन्होंने बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में कप्तान के रूप में टीम का नेतृत्व किया, जहां भारत ने न्यूजीलैंड को 1-1 (शूट आउट में 2-1) से हराकर प्रतिष्ठित कांस्य पदक जीता।

दोहरी जिम्मेदारियों पर बोलते हुए, सविता ने कहा, गोलकीपर की स्थिति एक अलग जिम्मेदारी है। एक अनुभवी गोलकीपर के रूप में, मैं हमेशा इस मानसिकता के साथ प्रशिक्षण लेती हूं कि मुझे टीम की मदद करनी है। एक कप्तान के रूप में, आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है क्योंकि आपको अपने खेल का ध्यान भी रखना पड़ता है और अपनी टीम के प्रदर्शन को भी संभालें रखना होता है। उन्होंने कहा, यह संभव है कि किसी दिन आपकी टीम अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रही हो, इसलिए आपको उन्हें एक कप्तान के रूप में प्रेरित करना होगा। लेकिन मुख्य कोच जेनेके शोपमैन के अंडर में काम करते हुए, हम जिम्मेदारियों को आपस में बांटने में सक्षम हैं, इसलिए मुझे लगता है कि इससे मुझे मदद मिली है और हम बिना दबाव महसूस किए खुलकर खेल रहे हैं।

भारतीय महिला हॉकी टीम 29 अगस्त से प्रशिक्षण शिविर में है, क्योंकि वे दिसंबर में खेले जाने वाले आगामी एफआईएच हॉकी महिला राष्ट्र कप की तैयारी कर रही हैं। टीम अगले साल होने वाले आगामी एशियाई खेलों के लिए भी उत्सुक है।

सविता ने बताया कि कैसे बर्मिंघम 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने से शिविर में सकारात्मक माहौल बना है। उन्होंने कहा, राष्ट्रमंडल खेलों में पदक जीतने के बाद, हम सभी काफी प्रेरित महसूस कर रहे थे और हम सभी शिविर शुरू होने के लिए उत्सुक थे ताकि हम उन क्षेत्रों पर काम करना शुरू कर सकें जहां हम सुधार कर सकते हैं। सभी खिलाड़ी शिविर में वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहे हैं, और यह शिविर में काफी सकारात्मक माहौल है।

उन्होंने कहा, अगले साल हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण टूर्नामेंट एशियाई खेल है हम दिसंबर में एफआईएच नेशंस कप में भी भाग लेंगे, लेकिन हमारा मुख्य लक्ष्य अगले साल एशियाई खेलों के लिए तैयार होना है।

एशिया कप : कोहली की ओपनिंग निश्चित तौर पर भारतीय टीम के लिए बड़ा विकल्प : गावस्कर

नयी दिल्ली (एजेंसी)। भारत भले ही एशिया कप 2022 नहीं जीत पाया लेकिन धमाकेदार बल्लेबाज विराट कोहली की फॉर्म में वापसी से भारतीय प्रशंसकों को काफी खुशी हुई। पाकिस्तान के खिलाफ अपने 100वें टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 35 रन बनाते हुए वह बेहद खराब थे। लेकिन जैसे-जैसे टूर्नामेंट आगे बढ़ा, उनका प्रवाह बढ़ता गया। दो अर्धशतक और एक शून्य के बाद कोहली ने अफगानिस्तान के खिलाफ करियर की सर्वश्रेष्ठ 122 रनों की पारी खेली जिसमें 1020 दिनों के प्रारूप में अपने शतक का सूखा समाप्त हुआ। अब, भारत के पूर्व क्रिकेटर रोहन गावस्कर को लगता है कि कोहली अगले महीने ऑस्ट्रेलिया में पुरुष टी 20 विश्व कप से पहले बल्लेबाजी की शुरूआत करना एक बड़ा विकल्प बन सकते हैं।

रोहन ने कहा, देखो, विराट को ओपनिंग करनी चाहिए, मुझे लगता है कि यह एक बढ़िया विकल्प है। आप उनके टी 20 नंबरों को देखें, वे उत्कृष्ट हैं। उनका औसत लगभग 55-57 है और उनका स्ट्राइक रेट लगभग 160 है। वे अभूतपूर्व संख्याएं हैं। उनकी आखिरी पारी, फिर से 122 रनों की नाबाद पारी आपको बताती है कि उन्हें शायद ओपनिंग भी पसंद है। उन्होंने कोहली की एक पुरानी बात को याद करते हुए कहा कि वह आईपीएल में ओपनिंग करना चाहते थे। उन्होंने कहा था कि यही वह स्थान है जहां मैं बनना चाहता हूं। इसलिए, यह स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो वह करना चाहते हैं। इसलिए, यह निश्चित रूप से भारतीय टीम के लिए एक बड़ा विकल्प है। कोहली के फिर से अपने दबदबे वाले पुराने स्वर के लक्षण दिखाने के साथ उनके साथ बल्लेबाजी की शुरूआत करने का मतलब होगा कि केएल राहुल को ग्यारह से बाहर होना होगा। सूर्यकुमार यादव को तीन पर धकेल दिया जाएगा। कुछ ऐसा जो गावस्कर के अनुसार एक संभावना हो सकती है।

जाफर ने सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले खिलाड़ियों को चुना, कोई भारतीय शामिल नहीं

पूर्व भारतीय बल्लेबाज वसीम जाफर ने अफगानिस्तान के बल्लेबाज रहमानुल्ला गुरबाज को एशिया कप 2022 में सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले खिलाड़ियों में से एक के रूप में चुना। इस लिस्ट में तेज गेंदबाज फजलहक फारूकी और ऑलराउंडर मोहम्मद नवाज भी शामिल हैं। गुरबाज ने पांच मैचों में 163.44 के स्ट्राइक रेट और 84 के शीर्ष स्कोर से 152 रन बनाकर टूर्नामेंट का समापन किया। एक शो में एशिया कप में उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाले खिलाड़ियों के बारे में पूछे जाने पर जाफर ने कहा, सामान्य नामों के अलावा, मैं बिना किसी संदेह के साथ रहमानुल्ला गुरबाज का नाम लूंगा। उनके अलावा, मैं फजलहक फारूकी के साथ जाउंगा, भले ही उनके एशिया कप का मुख्य आकर्षण वे दो गेंदें (पाकिस्तान के खिलाफ) होंगी। लेकिन उनके पास बहुत कौशल है, जिस तरह से उन्होंने नई गेंद से गेंदबाजी की, खासकर दुबई की परिस्थितियों में, उनके बारे में बहुत कुछ पसंद है। जाफर ने पाकिस्तान के ऑलराउंडर मोहम्मद नवाज की भी तारीफ करते हुए कहा कि गेंद से उनका प्रदर्शन और भारत के खिलाफ बल्ले से कैमियो अच्छा था। मुंबई के पूर्व सलामी बल्लेबाज को भी लगता है कि पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने उन्हें पर्याप्त गेंदबाजी नहीं करके फाइनल में एक चाल चली। मैं कहूंगा कि बाबर आजम ने आज (फाइनल) पर्याप्त गेंदबाजी नहीं करके एक चाल से चूक गए। लेकिन गेंदबाजी के लिहाज से वह काफी अच्छी फॉर्म में हैं। उन्होंने बाएं हाथ के बल्लेबाजों को भी रन लेने नहीं दिया। उनके पास बहुत अच्छा टूर्नामेंट भी था।

मीडिया कप फुटबॉल : गंगा, दामोदर और मयूराक्षी भी सेमीफाइनल में

15 सितंबर को खेले जायेंगे सेमीफाइनल मुकाबले

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मेगा स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स में खेले जा रहे मीडिया कप फुटबॉल के तीसरे दिन टीम गंगा ने टीम भैरवी को 3-0 से रौंदकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। वहीं टीम दामोदर ने टीम स्वर्णरेखा के साथ और टीम मयूराक्षी ने टीम अजय के खिलाफ मुकाबला 1-1 की बराबरी पर रोक सेमीफाइनल में अपनी जगह सुरक्षित की। मंगलवार को मुख्य स्टेडियम में खेले गए पहले मुकाबले में टीम गंगा ने मैन ऑफ द मैच भुवनेश्वर महतो के शानदार मैदानी गोल की बदौलत टीम भैरवी के खिलाफ पहले ही मिनट में 1-0 की बढ़त बना ली। इसके बाद राजेश सिंह ने 21वें और प्रमोद सिंह ने 29वें मिनट में गोल दाग टीम को 3-0 से जीत दिलाई। इस जीत के साथ ही गंगा ग्रुप। का विजेता बना। एथलेटिक्स प्रैक्टिस ग्राउंड में मयूराक्षी और अजय के बीच खेला गया पहला मुकाबला 1-1 की बराबरी पर छूटा। मयूराक्षी के कुमार सौरव ने मैच के 6ठे मिनट में गोल दाग बढ़त दिलाई लेकिन अजय के मनोज ने 15वें मिनट में गोल दाग मुकाबला बराबरी पर ला दिया। मैच का अंत इसी स्कोर पर हुआ और मयूराक्षी ग्रुप ठ से उपविजेता बनते हुए सेमीफाइनल में पहुंच गई। मुख्य स्टेडियम में दूसरा मुकाबला वॉक ओवर के साथ खत्म हुआ। निर्धारित समय तक अमानत के खिलाफ मैच के लिए शंख के मात्र 5 खिलाड़ी ही मैदान पहुंचे। इसके बाद रेफरी ने टीम पूरा करने के लिए शंख को 20 मिनट का वक्त दिया। इसके बाद टीम अमानत के पक्ष में फैसला सुनाया गया। एथलेटिक्स प्रैक्टिस ग्राउंड के दूसरे मुकाबले में टीम दामोदर ने टीम स्वर्णरेखा को 1-1 की बराबरी पर रोक सेमीफाइनल में जगह बनाई। मैच के 21वें मिनट में नदीम जफर ने स्वर्णरेखा के लिए गोल किया। दामोदर को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए एक गोल की दरकार थी और दामोदर के शंकर ठाकुर ने 30वें मिनट में गोल दाग सेमीफाइनल का टिकट कन्फर्म करा दिया। पहले सेमीफाइनल में टीम गंगा और टीम मयूराक्षी के बीच होगा जबकि दूसरे सेमीफाइनल में टीम अजय और टीम दामोदर के बीच खेला जाएगा। मंगलवार के मैच में गंगा बनाम भैरवी में भुनेश्वर महतो, मयूराक्षी बनाम अजय में मनोज कुमार और स्वर्णरेखा बनाम दामोदर में रंजीत को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। मैन ऑफ द मैच क्लब के अध्यक्ष संजय मिश्रा व पूर्व अध्यक्ष राजेश सिंह ने मैच के बाद ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। मैन ऑफ द मैच का चयन रेफरी और लाइंस मैन की टीम ने किया।

रेणुका सिंह गेंदबाजों की टी-20 रैंकिंग में 13वें स्थान पर पहुंची, दीप्ति सातवें स्थान पर बरकरार

दुबई (एजेंसी)। भारतीय तेज गेंदबाज रेणुका सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की मंगलवार को जारी नवीनतम महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में गेंदबाजों की सूची में पांच पायदान की छलांग से 13वें स्थान पर पहुंच गई हैं जबकि स्पिनर दीप्ति शर्मा सातवें स्थान पर बरकरार हैं। पिछले हफ्ते चेस्टर ली स्ट्रीट में पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय में इंग्लैंड के खिलाफ भारत की नौ विकेट की हार के दौरान चार ओवर में सिर्फ 23 रन देकर किफायती गेंदबाजी करने वाली रेणुका के 612 रेटिंग अंक हैं। दीप्ति शीर्ष 10

में एकमात्र भारतीय गेंदबाज बनी हुई हैं जबकि आलराउंडर की सूची में भी वह चौथे स्थान पर बरकरार हैं। बल्लेबाजों की सूची में वह तीन पायदान ऊपर 33वें और विकेटकीपर बल्लेबाज रिचा घोष चार पायदान ऊपर 75वें स्थान पर पहुंच गईं। बल्लेबाजी रैंकिंग में स्मृति मंधाना (710 अंक) चौथे स्थान के साथ सर्वोच्च रैंकिंग वाली भारतीय खिलाड़ी हैं जबकि शेफाली वर्मा (686) और जेमिमा रोड्रिग्स (624) क्रमशः छठे और 10 वें स्थान पर हैं। इंग्लैंड की ऑलराउंडर सारा ग्लेन भारत के खिलाफ तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला के पहले मैच में शानदार प्रदर्शन के बाद हमवतन सोफी एक्लेस्टोन के करीब पहुंच गई हैं। सारा करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग की बराबरी करते हुए दूसरे स्थान पर हैं और बाएं हाथ की स्पिनर सोफी से सिर्फ 13 रेटिंग अंक पीछे हैं।

टी-20 विश्व कप : भारतीय टीम में ऋषभ पंत के चयन से फैंस नाखुश

नयी दिल्ली। बीसीसीआई ने इस साल ऑस्ट्रेलिया में खेले जाने वाले 2022 टी20 विश्व कप के लिए 15 सदस्यीय टीम का चयन किया है। इस बीच चयनकर्ताओं ने आगामी टूर्नामेंट के लिए दिनेश कार्तिक और ऋषभ पंत को विकेटकीपर-बल्लेबाज के रूप में चुना है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पंत का हाल ही में समाप्त हुए 2022 टी20 एशिया कप में बहुत खराब प्रदर्शन था। बाएं हाथ के बल्लेबाज को कुछ मौके दिए गए लेकिन वह बल्ले से प्रभाव डालने में नाकाम रहे और क्रिकेट विशेषज्ञों ने उनकी आलोचना की।

उर्वशी रौतेला ने पंत से हाथ जोड़कर मांगी माफी, वीडियो आया सामने

एक समय रिलेशनशिप में रहे भारतीय क्रिकेटर ऋषभ पंत और अभिनेत्री उर्वशी रौतेला के बीच कुछ दिनों पहले कहा सुनी हुई। जिसे के लेकर सोशल मीडिया पर भी दोनों सुर्खियों में रहे। लेकिन लगता है कि उर्वशी इस कॉंट्रोवर्सी को आगे ना बढ़ाते हुए यही पर इसका अंत करना चाहती हैं और हाल ही में हुए एक इंटरव्यू में उन्होंने पंत से माफी मांगी है। उर्वशी से पूछा गया कि आरपी (ऋषभ पंत) के लिए कोई मैसेज हैं, आप थोड़ा सा घुमा रहे इसलिए मैं आपसे सीधे पूछता हूं? इस पर उर्वशी ने कहा, सीधी बात नो बकवास, इसलिए मैं कोई बकवास नहीं करूंगी। उर्वशी ने आगे कहा कि कुछ भी कहने को नहीं है, सॉरी, मुझे माफ कर दो। इसी के साथ ही वह कैमरे पर दोनों हाथ जोड़ते हुए भी नजर आई। गौर हो कि बीते दिनों ऊर्वशी ने एक इंटरव्यू में दावा किया था कि मिस्टर आर.पी. उनसे मिलने दिल्ली के होटल में आए थे। उन्होंने उनका 10 घंटे इंतजार किया और 17 बार कॉल भी की। ऊर्वशी ने इस दौरान पंत और उनके बीच हुए विवाद के लिए मीडिया को भी जिम्मेदार ठहराया था। पंत ने इसके बाद इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा था- यह हास्यास्पद है कि कैसे लोग सिर्फ पॉपुलेरिटी और सुर्खियों में बने रहने के लिए इंटरव्यू में झूठ बोल लेते हैं। दुखद है कि कुछ लोग कैसे नाम और प्रसिद्धि के कितने प्यासे होते हैं। भगवान उनका भला करे। पंत ने पोस्ट में हैशटैग के साथ लिखा- मेरा पीछा छोड़ दो बहन, झूठ की भी लिमिट होती है। इसके बाद उर्वशी ने इंस्टाग्राम पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा, 'छोटू भैया को बैट बॉल खेलना चाहिए। मैं कोई मुन्नी नहीं हूं बदनाम होने के लिए यंग किडो डार्लिंग्स तेरे लिए, रक्षाबंधन मुबारक हो, आरपी, छोटू भैया। इसी के साथ ही उन्होंने साइलेंट गर्ल का एडवांटेज ना ले वाला हैशटैग भी इस्तेमाल किया। हालांकि इसके बाद पंत ने कोई जवाब नहीं दिया।

ईस्ट इंडिया कराटे चैंपियनशिप में लोहरदगा के खिलाड़ियों का जलवा, कुडू पहुंचने पर जोरदार स्वागत

45 स्वर्ण, 41 रजत और 26 कांस्य सहित कुल 112 मेडल हासिल कर जिले को किया गौरवान्वित

नवीन मेल संवाददाता

कुडू-लोहरदगा। राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने वाली लोहरदगा की कराटे की टीम ने एक बार फिर 112 मेडल हासिल कर जिले का मान बढ़ाया है। क्रीड़ा भारती पलामू के तत्वाधान में आयोजित 10 से 11 सितंबर तक डाल्टेनगंज के गुरु तेग बहादुर मेमोरियल हॉल में आयोजित ईस्ट इंडिया कराटे चैंपियनशिप 2022 में 45 स्वर्ण, 41 रजत और 26 कांस्य सहित कुल 112 मेडल झटक कर जिले को गौरवान्वित किया है। मेडल जीत जिला लौटी कराटे टीम का प्रखंड मुख्यालय परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में सीओ प्रवीण सिंह, बीस सूत्री अध्यक्ष सदरुल अंसारी, उप प्रमुख ऐनुल अंसारी आदि ने माला पहनाकर स्वागत किया

और उज्ज्वल भविष्य का कामना करते हुए पुरी टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। टीम के कोच सह कराटे संघ लोहरदगा के अध्यक्ष अमित सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में बिहार के बक्सर और महाराष्ट्र के नासिक की टीम के अलावा झारखंड से पलामू, लोहरदगा, गढ़वा, बोकारो, धनबाद, हजारीबाग, चाईबासा और रामगढ़ की टीमों ने हिस्सा लिया था। जिसमे 125 मेडल प्राप्त कर पलामू पहले, 112 मेडल के साथ लोहरदगा दूसरे और 77 मेडल प्राप्त कर गढ़वा की टीम तीसरे स्थान पर रही। लोहारदगा की टीम 'झांसी' में 70 सदस्य थे। इनमें से 61 लड़कियां जबकि मात्र 9 लड़के ही थे। सम्मान समारोह में संघ के चंद्रगुप्त महली, बिस सूत्री सदस्य रमेश उरांव, पसस मन्नान अंसारी सहित कई अभीभावक उपस्थित थे।

चार बेस्ट अवॉर्ड में तीन लोहरदगा के नाम

प्रतियोगिता में कुल चार बेस्ट अवार्ड में तीन लोहरदगा की झोली में आये। कुमितो में अभिषेक उरांव, काता में मरियम परवीन और अंजलि कुमारी को हासील हुए। सभी खिलाड़ियों को क्रीड़ा भारती के मुख्य संरक्षक, पलामू सांसद सह पूर्व डीजीपी बीड़ी राम, जिला अध्यक्ष सोनू नामधारी, पलामू ओलंपिक एशोसिएशन के अविनाश वर्मा, प्रान्त मंत्री राजीव कुमार, विभाग प्रमुख श्याम बाबू, उपाध्यक्ष सनत चटर्जी, आईएसेसकेएफ के संस्थापक अध्यक्ष राशिद अनवर अंसारी सहित अन्य अतिथितियों द्वारा ट्रॉफी और ट्रेक शूट देकर पुरष्कृत किया।

न्यूज गैलरी

2020 से आठ प्रमुख शहरों में 16 नए शॉपिंग मॉल परिचालन में आए

नई दिल्ली। देश के आठ प्रमुख शहरों में पिछले 30 माह में 1.55 करोड़ वर्ग फुट के पट्टे पर दिए जाने योग्य क्षेत्र के 16 नए शॉपिंग मॉल परिचालन में आए हैं। संपत्ति सलाहकार नाइट फ्रैंक की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। नाइट फ्रैंक ने मंगलवार को एक वेबिनार में रिपोर्ट थिंक इंडिया, थिंक रिटेल 2022-रिइन्वेंटिंग इंडियन शॉपिंग मॉल्स' जारी की। रिपोर्ट में कहा गया है कि दिसंबर, 2019 (कोविड-पूर्व) के समय देश के आठ प्रमुख शहरों...अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, एनसीआर और पुणे में कुल 255 शॉपिंग मॉल में 7.74 करोड़ वर्ग फुट पट्टा योग्य क्षेत्र था। नाइट फ्रैंक ने कहा कि 2022 के कैलेंडर साल के पहले छह माह में आठ प्रमुख शहरों में 9.29 करोड़ वर्ग फुट पट्टा योग्य क्षेत्र के 271 मॉल परिचालन में थे। रिपोर्ट में कहा गया है कि 30 माह में करीब 1.55 करोड़ वर्ग फुट क्षेत्र और जोड़ा गया है। नाइट फ्रैंक के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक शिशिर बैजल ने कहा, खुदरा रियल एस्टेट एक नए स्तर की परिपक्वता में पहुंच गया है जहां छोटे और निचले ग्रेड के स्थल ग्रेए ए के मॉल के लिए रास्ता दे रहे हैं।

निर्यात शुल्क नहीं देना चाहते खरीदार बंदरगाहों पर फंसे 10 लाख टन चावल

नई दिल्ली। सरकार द्वारा चावल निर्यात पर रोक लगाने के फैसले से निर्यातकों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। विदेशी चावल खरीदारों ने अतिरिक्त शुल्क चुकाने से मना कर दिया है। इससे बंदरगाहों पर 10 लाख टन चावल फंस गए?हैं।?पिछले दिनों सरकार ने घरेलू बाजार में चावल की कीमतें बढ़ने से रोकने के लिए निर्यात पर प्रतिबंध के साथ ही 20 फीसदी अतिरिक्त शुल्क चुकाने का भी नियम लगा दिया था। भारतीय चावल निर्यातक संगठन के अध्यक्ष बीवी कृष्ण राव ने कहा, सरकार ने तत्काल प्रभाव से शुल्क लगा दिया लेकिन खरीदार इसके लिए तैयार नहीं थे। फिलहाल हमने चावल का लदान रोक दिया है। दुनिया के सबसे बड़े चावल निर्यातक भारत के रोक लगाने के बाद अब पड़ोसी देशों सहित दुनिया के चावल आयातक देशों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। भारत हर महीने करीब 20 लाख टन चावल का निर्यात करता है। इसमें सबसे ज्यादा लोडिंग आंध्र प्रदेश के कनिकड़ा और विशाखापट्टन बंदरगाह से होती है। बंदरगाहों पर फंसे चावल का निर्यात चीन, सेनेगल, संयुक्त अरब अमीरात और तुर्की को होना था। इसमें सबसे ज्यादा शिपमेंट टूटे चावल का था।

भारत में 64 प्रतिशत कंपनियां अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाएंगी : सर्वे

नई दिल्ली। देश में नई नियुक्तियों का परिदृश्य काफी मजबूत नजर आ रहा है। भू-राजनीतिक तनाव के बीच विकासशील देशों के लिए वृद्धि के अवसरों की संभावनाओं के मद्देनजर करीब 54 प्रतिशत कंपनियों ने अगले तीन माह में नई नियुक्तियों की योजना बनाई है। मैनपावरग्रुप के मंगलवार को जारी रोजगार परिदृश्य सर्वे के अनुसार, अक्टूबर-दिसंबर, 2022 के लिए श्रम बाजार की धारणा मजबूत दिखाई दे रही है। इस सर्वे में 41 देशों और क्षेत्रों के सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के 40,600 नियोक्ताओं की राय ली गई। सर्वे के अनुसार, भारत में 64 प्रतिशत कंपनियां अपने कर्मचारियों की संख्या बढ़ाएंगी। वहीं 10 प्रतिशत ने कर्मचारियों की संख्या कम करने की बात कही। 24 प्रतिशत का कहना था कि उनकी कर्मचारियों की संख्या में किसी तरह का बदलाव करने की योजना नहीं है। इस तरह मौसमी रूप से समायोजित शुद्ध रोजगार परिदृश्य 54 प्रतिशत बैठता है। नियुक्तियों की संख्या के मामले में ब्राजील के बाद भारत दूसरे स्थान पर है। ब्राजील में 56 प्रतिशत नियोक्ताओं ने नई नियुक्तियों की बात कही। सर्वे में कहा गया है कि पिछले साल की समान अवधि से तुलना की जाए, तो नियुक्तियों की धारणा में 10 प्रतिशत अंक का सुधार हुआ है। वहीं पिछली तिमाही की तुलना में इसमें तीन प्रतिशत का सुधार है। मैनपावरग्रुप इंडिया के प्रबंध निदेशक संदीप गुलाटी ने कहा, ह्यह्यभारत की बुनियाद मजबूत है।

लघु अवधि के झटकों के बावजूद वृद्धि को प्रोत्साहन देने वाली नीतियों, बुनियादी ढांचा क्षेत्र में निवेश में बढ़ोतरी और बढ़ता निर्यात मध्यम से दीर्घावधि में इन झटकों के असर को कम करेगा।"

भारत में बहुत जल्द टेलीकॉम कंपनियां 5जी सेवा लांच करने की तैयारी में

नवीनमेलसंवाददाता

नई दिल्ली। भारत में बहुत जल्द टेलीकॉम कंपनियां 5जी सेवा लांच करने की तैयारी में है। देश में 5जी मोबाइल सर्विस का ट्रायल हो गया है जिसके बाद अब देश भर में 5जी नेटवर्क को रोल आउट करने के लिए तैयार है। भारत में आबादी और क्षेत्रफल के हिसाब से पूरे देश में 5जी नेटवर्क पहुंचाना काफी कठिन प्रोजेक्ट है, जिसके लिए कंपनियों की योजना बिजली के खंभे, ट्रैफिक लाइट, बस टर्मिनल और बस शेल्टर के साथ केंद्र/राज्य सरकार की कंपनी या सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम पर भी टावर लगाने का प्लान तैयार है। बता दें कि इसके लिए उत्तर प्रदेश और गुजरात में प्रक्रिया को लगभग पूरा कर लिया है, जबकि केंद्र कई अन्य राज्यों को फिनिशिंग लाइन पर जाने के लिए कह रहा है। इस मामले से

जुड़े अधिकारियों ने यह जानकारी दी है। भारत सरकार की टीम गति शक्ति इस योजना पर अमल करने की कोशिश कर रही है. टीम गति शक्ति उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के रसद विभाग की टीम गति शक्ति ने हाल ही में सभी राज्यों को एक कार्यालय ज्ञापन जारी किया है, जिसमें उनसे कहा गया है कि वह आम लोगों को 5जी नेटवर्क उपलब्ध कराने के वैकल्पिक उपाय के बारे में जानकारी दें। इसमें बिजली के खंभे, ट्रैफिक लाइट, बस टर्मिनल/शेल्टर, सरकारी बिल्डिंग आदि की जानकारी भी शामिल है। भारत का 5जी रोलआउट के लिए स्मॉल सेल्स टेक्नोलॉजी पर पूरा फोकस है। छोटे सेल पोर्टेबल, कम शक्ति वाले रेडियो एक्सेस नोड या बेस स्टेशन होते हैं जिनकी कवरेज कुछ मीटर से लेकर कुछ 100 मीटर तक होती है। बता दें कि स्मॉल सेल कहीं भी ले जाए जा सकते हैं, कम पावर का रेडियो स्टेशन होता है जो आसपास के इलाकों में नेटवर्क का अच्छा कवरेज दे सकता है।

> वह आम लोगों को 5जी नेटवर्क उपलब्ध कराने के वैकल्पिक उपाय के बारे में जानकारी दें। इसमें बिजली के खंभे, ट्रैफिक लाइट, बस टर्मिनल/शेल्टर, सरकारी बिल्डिंग आदि की जानकारी भी शामिल है।

शेयर बाजार में दूसरे दिन भी उछाल जारी, 18000 के ऊपर खुला निफ्टी

नई दिल्ली। कारोबारी सप्ताह के दूसरे दिन भी शेयर बाजार में उत्साह दिखाई दिया। बेहतर वैश्विक संकेतों के बीच सेंसेक्स और निफ्टी हरे निशान पर कारोबार करते दिखाई दिए। बाजार खुलते ही निफ्टी में करीब 99 अंकों की तेजी देखी गई। यह 18 हजार अंकों के ऊपर कारोबार कर रहा है तो वहीं सेंसेक्स में करीब 300 अंकों का उछाल आया। शेयर बाजार 60,400 अंकों के ऊपर कारोबार करता दिखाई दिया। बाजार के एक्सपर्ट्स का कहना है कि घरेलू बाजार में यह तेजी अमेरिकी शेयर मार्केट में आए उछाल की वजह से है। मंगलवार को बजाज फिनसर्व के शेयर में पांच प्रतिशत से ज्यादा तेजी दिखाई दी। वहीं एचसीएल के बाजार में गिरावट दिखी। इसके अलावा निफ्टी के टॉप गेनर्स में, HDFC LIFE, BAJAJ FINSV, SBI LIFE, BRITANNIA और COAL INDIA शामिल रहे।

7 साल बाद दवाओं की आवश्यक सूची जारी

384 मेडिसिन की लिस्ट, 26 दवाएं बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से आम लोगों को वाजिब और सुलभ रूप में आवश्यक दवाओं को उपलब्ध कराने पर लगातार बल दिया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने अब आवश्यक दवाओं की नई राष्ट्रीय सूची जारी की है, जिसमें 384 मेडिसिन को शामिल किया गया। इससे संबंधित लिस्ट केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया की ओर से जारी की गई है। जानकारी के मुताबिक स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया की ओर से जो 384 दवाओं की सूची जारी की है उसमें 34 नई दवाओं को आवश्यक दवाओं की लिस्ट में शामिल किया गया है। वहीं केंद्र सरकार ने निवर्तमान दवाओं की लिस्ट से 26 दवाओं को हटाने का काम भी किया है। अहम बात यह है कि केंद्र सरकार की ओर से इससे पहले 2015 में आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची जारी की गई थी। बताते चलें कि स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से समय-समय पर आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची में संशोधन और बदलाव करने का काम किया जाता रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए गहन चर्चा और विचार विमर्श के बाद ही दवाओं की सूची में से पुरानी को हटाकर नई दवाओं को शामिल किया जाता है। इस मामले पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया का कहना है कि 2015 के बाद अब 2022 में आवश्यक दवाओं की राष्ट्रीय सूची में बदलाव किया गया है। इस प्रक्रिया में कई चरण शामिल हैं। इस सभी के बाद ही अंतिम फैसला लिया जाता है।

गुजरात में वेदांता-फॉक्सकॉन का सेमीकंडक्टर संयंत्र देगा एक लाख लोगों को नौकरियां

नयी दिल्ली (एजेंसी)। वेदांता-फॉक्सकॉन का गुजरात में स्थापित होने वाला सेमीकंडक्टर संयंत्र इलेक्ट्रोनिक समानों के आयात को कम करते हुए सीधे तौर पर एक लाख नौकरियां उपलब्ध कराएगा। कंपनी इस परियोजना पर 1.54 लाख करोड़ रुपये खर्च करेगी। यह जानकारी वेदांता के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने मंगलवार को दी। वेदांता ने अपने विशाल चिप-निर्माण संयंत्र के लिए गुजरात को चुना है। श्री अग्रवाल ने एक ट्वीट में कहा, यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि वेदांता-फॉक्सकॉन का सेमीकंडक्टर संयंत्र गुजरात में स्थापित होगा। वेदांता का 1.54 लाख करोड़ रुपये का एतिहासिक निवेश भारत के आत्मनिर्भर सिलिकॉन वैली को वास्तविकता देगा। उद्योगपति ने कहा कि प्रस्तावित परियोजना भारत में एक मजबूत विनिर्माण आधार बनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण को पूरा करने में मदद करेगी। उन्होंने कहा, यह हमारे इलेक्ट्रोनिक समानों के आयात को कम करेगा और सीधे तौर पर एक लाख कौशल से जुड़ी नौकरियां प्रदान करेगा।ह्व उन्होंने कहा कि भारत अपनी सिलिकॉन वैली की राह पर एक कदम अग्रसर है। श्री अग्रवाल ने कहा, भारत सिर्फ अपने देश के लोगों की डिजिटल जरूरतों को ही नहीं पूरा करेगा बल्कि दूसरे देशों को भी सेवा प्रदान करेगा। चिप लेने से आगे बढ़ते हुए चिप बनाने की यात्रा आधिकारिक रूप से शुरू हो गयी है।'

भगवंत मान ने जर्मनी की कंपनी को टिकाऊ कृषि समाधान के लिए दिया न्योता

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार को जर्मनी की अग्रणी कंपनी बेवा को राज्य में कृषि क्षेत्र के मशीनीकरण में मदद के लिए टिकाऊ कृषि व्यवसाय समाधान मुहैया कराने का न्योता दिया। फिलहाल जर्मनी के दौरे पर गए मान ने ज्यूरिख में बेवा के मनोनीत मुख्य कार्यपालक अधिकारी मार्कस पोलिंगर के साथ मुलाकात के दौरान उन्हें पंजाब में निवेश के लिए आमंत्रित किया। राज्य सरकार की तरफ से यहां जारी आधिकारिक विज्ञप्ति के मुताबिक, मुख्यमंत्री ने जर्मन कंपनी के शीर्ष अधिकारियों को पंजाब के कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था होने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पंजाब अब कृषि गतिविधियों को उन्नत करना चाहता है ताकि उसके किसान नवीनतम प्रौद्योगिकी से लाभान्वित हो सकें।

पेट्रोल, डीजल की कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं

नयी दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों के 90 डॉलर प्रति बैरल के आसपास बने रहने और इसके लगातार गिरने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई कमी नहीं की जा रही है। जिससे इसके दाम मंगलवार को भी स्थिर रहे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आज लंदन ब्रेंट क्रूड 0.13 प्रतिशत गिरकर 93.88 डॉलर प्रति बैरल पर और अमेरिकी क्रूड 0.03 प्रतिशत के दबाव के साथ 87.75 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। घरेलू स्तर पर तेल विपणन करने वाली कंपनी भारत पेट्रोलियम के अनुसार, घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर यथावत है। लंबे समय से तेल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। मुंबई में पेट्रोल और डीजल के दाम क्रमशः 106.31 रुपये प्रति लीटर और 94.27 रुपये प्रति लीटर हैं। देश में पेट्रोल और डीजल की कीमतें मूल्य वर्धित कर (वैट) और माल ढुलाई शुल्क के आधार पर सभी राज्यों में अलग-अलग हैं। पेट्रोल-डीजल के मूल्यों की प्रतिदिन समीक्षा की जाती है।

देश के चार बड़े महानगरों में आज पेट्रोल और डीजल के दाम इस प्रकार रहे

महानगर	पेट्रोल	डीजल	(रुपए प्रति लीटर)
दिल्ली	96.72	89.62	,,
मुंबई	106.31	94.27	,,
कोलकाता	106.03	92.76	,,
चेन्नई	102.63	94.24	,,

लगातार हड़ताल के बाद लुफ्थांसा एयरलाइंस के पायलटों की वेतन वृद्धि पर बनी सहमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। जर्मनी में पायलटों की लगातार हड़ताल के बाद लुफ्थांसा एयरलाइंस बैकफुट पर आ गई है। उसने पायलट यूनियन की मांगो को मानते हुए लुफ्थांसा और लुफ्थांसा कार्गो में अपने पायलटों को इस साल 5.5 प्रतिशत वेतन वृद्धि देने की घोषणा की है। पायलट यूनियन ने इस पर सहमति व्यक्त की है। इसके बाद पायलटों को दो चरणों में 490 यूरो के अपने मूल मासिक वेतन में यह बढ़ी हुई वृद्धि मिलेगी। अधिकारियों ने बताया, यह वेतन वृद्धि एक अगस्त 2022 से 1 अप्रैल 2023 तक प्रभावी होगी। समझौते के तहत पायलट 30 जून, 2023 तक हड़ताल पर नहीं जा सकेंगे, जिससे कि उड़ानें बाधित हों। बता दें, बीते दिनों लुफ्थांसा एयरलाइंस के पायलट हड़ताल पर चले गए थे, जिससे एयरलाइंस को काफी नुकसान उठाना पड़ा था। लुफ्तांसा एयरलाइंस के पायलटों द्वारा दो सितंबर को हड़ताल की गई थी। इससे जर्मनी के साथ-साथ कई देशों की उड़ानों पर फर्क पड़ा था। दिल्ली एयरपोर्ट पर भी करीब 900 यात्री इससे प्रभावित हुए थे और जबरदस्त हंगामा किया था।

सरकार द्वारा उठाये गये कदमों का असर अगले कुछ महीने में: वित्त मंत्रालय

नयी दिल्ली (एजेंसी)। इस वर्ष अगस्त महीने में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित खुदरा महंगाई के बढ़कर सात फीसदी पर पहुंचने पर वित्त मंत्रालय ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये आज कहा कि कीमतों को नियंत्रित करने और आपूर्ति बढ़ाने के लिए उठाये गये कदमों का असर अगले कुछ महीने में दिखेगा। वित्त मंत्रालय ने इसको लेकर सात ट्विट कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा कि गेंहू का आटा, चावल, मैदा जैसे खाद्य पदार्थों की आपूर्ति बढ़ाने के लिए और इसकी कीमतों में बढोतरी को नियंत्रित करने के उद्देश्य से निर्यात को प्रतिबंधित किया गया है। इन उपयों का असर अगले कुछ महीने में दिखने लगेगा। उसने कहा कि खाद्य तेलों और दालों की कीमतों में नरमी आने के साथ ही आयातित वस्तुओं की कीमतों को नियमित अवधि पर तर्कसंगत बनाया जा रहा है। खाद्य तेलों के भंडार को नियंत्रित किया गया ताकि कोई जमाखोरी नहीं कर सके। इसके कारण तेल और वसा तथा दालों की कीमतों में 5.62 प्रतिशत और 2.52 प्रतिशत की नरमी दर्ज की गयी है। वैश्विक महंगाई के दबाव और मुद्रास्फीतिक अनुमान में स्थिरता आयी है। वैश्विक बाजार में लौह अयस्क और स्टील जैसे उत्पादों की कीमतों में तेजी आयी है लेकिन घरेलू स्तर पर इनकी कीमतों को तर्कसंगत बनाने के उपायों और आपूर्ति में किये गये सुधारों से इनकी उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों को काबू में रखने में मदद मिली है।

अमेरिकन एक्सप्रेस बैंकिंग कॉर्प ने संजय खन्ना को दी भारत के सीईओ की जिम्मेदारी

नयी दिल्ली (एजेंसी)। वैश्विक एकीकृत भुगतान कंपनी अमेरिकन एक्सप्रेस बैंकिंग कॉर्प (एईबीसी) ने संजय खन्ना को भारत का मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और कंट्री मैनेजर नियुक्त किया है। कंपनी ने सोमवार को एक बयान में कहा कि श्री खन्ना कंट्री एक्जीक्यूटिव टीम का नेतृत्व करेंगे जो इस संगठन के कंज्यूमर एवं कॉमर्शियल बिजनेस में वृद्धि को गति प्रदान करेंगे। भारत में कंपनी के रणनीतिक निर्णयों को आगे बढ़ाने और उन्हें मजबूती से लागू करने के लिए उनका पद महत्वपूर्ण होगा। अमेरिकन एक्सप्रेस के कार्यकारी उपाध्यक्ष (इंटरनेशनल कार्ड सर्विसेज) रॉब मैकलीन ने कहा कि उन्हें इस नयी भूमिका में श्री खन्ना का स्वागत करते हुए खुशी है। इस उद्योग में 30 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ उनके भीतर आगे रहकर मोर्चा संभालने की स्वभाविक समझ के साथ मजबूत परिणाम देने की असाधारण विश्वसनीयता है। उन्हें पूरा भरोसा है कि हर चीज में उत्कृष्टता लाने की उनकी प्रतिबद्धता, उनके दृढ़ मूल्य और कार्य की नैतिकता से भारतीय बाजार में इस ब्रांड की स्थिति और अग्रणी होगी। श्री खन्ना ने कहा, भारत निःसंदेह विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है जिसके पीछे इसका तेजी से बढ़ता उपभोक्ता आधार, उभरती जीवनशैली और खर्च की जरूरतें हैं।

पेज एक के शेष

खिलाड़ियों को मिलेगी ....

को छात्रवृत्ति, इंश्योरेंस व पूर्व खिलाड़ियों को पेंशन योजना का लाभ देने के लिए प्रावधान किया गया है। खिलाड़ियों को राज्य में सरकारी नौकरी और शिक्षण संस्थान में आरक्षण देने के साथ ही द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ श्रेणी में सीधी भर्ती के लिए भी प्रावधान किया गया है। राज्य में खेल विश्वविद्यालय की स्थापना करने के लिए भी नीति में व्यवस्था की गयी है। जबकि पीटी शिक्षक और कोच के लिए पुरस्कार नयी खेल नीति में सर्वश्रेष्ठ पीएचइ, पीटी शिक्षक एवं जमीनी स्तर के कोच के लिए पुरस्कार का प्रावधान किया गया है। पीटी शिक्षक व जमीनी स्तर के प्रशिक्षकों के लिए राज्य प्रतिभा पूल निर्माण, खेल गतिविधियों व कम्युनिकेशन कौशल के संबंधित पीपीपी और प्रायोजकों को आकर्षित करने के लिए भी नियम निर्धारित किया गया है। झारखंड फुटबॉल व हॉकी प्रीमियर लीग फुटबॉल, हॉकी जैसे खेलों को बढ़ावा देने के लिए झारखंड प्रीमियर लीग का आयोजन किया जाएगा। खेल नीति में ग्रामीण स्तरीय खेल, पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देना, डोपिंग मुक्त खेल के लिए नेशनल स्पोर्ट्स डेवलपमेंट कोड ऑफ इंडिया की तर्ज पर कानून का प्रावधान किया गया है।

खिलाड़ियों को सहायता राशि न्यूनतम 50 हजार रुपये : मुख्यमंत्री ने कहा कि जरूरत के हिसाब से पॉलिसी में समय-समय पर बदलाव की जाएगी। मैंने पर्यटन, कला-संस्कृति, खेल-कूद एवं युवा कार्य विभाग को इस संबंध में निर्देश भी दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले समय में खेल पॉलिसी में बदलाव लाकर खिलाड़ियों को सहायता राशि के रूप में न्यूनतम 50 हजार रुपये दिए जाने का प्रावधान किया जाएगा।

ठेकेदारों व कारोबारियों ....

सिंह के कहने पर ही अमन सिंह और रोहित ने बोकारो के बाली डी रेलवे साइडिंग पर रंगदारी मांगने के लिए फायरिंग करने के बाद बम भी फेंका था. गिरफ्तार अपराधियों के अनुसार सनी सिंह के कहने पर ही तबारक अंसारी ने रोहित वर्मा और अमन सिंह को हथियार और चार बम उपलब्ध करवाए थे. चार बम में से तीन का प्रयोग अपराधियों ने बालीडीह रेलवे साइडिंग पर किया था ,जो एक बम बचा था उसे ही पिंटू वर्मा ने अपने घर में रखा था जिसे सुखदेव नगर पुलिस ने बरामद किया था।

दर्जनों कांडों का आरोपी है सनी सिंह : इस गिरोह का सरगना सनी सिंह है ,सनी सिंह के अलावा इस गिरोह के दो और प्रमुख सदस्य बिट्टू नेपाली एवं बिट्टू सिंह बेहद सक्रिय हैं। पकड़े गए पांचों अपराधी सनी के कहने पर ही रंगदारी मांगते थे रंगदारी नहीं देने पर कंस्ट्रक्शन साइट्स पर हमला किया जाता था। गौरतलब है कि सनी सिंह बिट्टू नेपाली और बिट्टू सी पुलिस के गिरफ्त से फरार चल रहे हैं इन तीनों की तलाश पश्चिम बंगाल पुलिस को भी है। इस गिरोह के द्वारा पश्चिम बंगाल में भी रंगदारी के लिए कई वारदातों को अंजाम दिया गया है। पकड़े गए सभी अपराधियों का पुराना आपराधिक इतिहास रहा है।

कारो पुलिस भी करेगी पूछताछ : गिरफ्तार अपराधियों से बोकारो पुलिस भी बालीडीह रेलवे साइडिंग पर हमले को लेकर पूछताछ करेगी। बोकारो पुलिस की एक टीम रांची के लिए निकल चुकी है जो गिरफ्तार अपराधियों से पूछताछ करेगी।

गिरोह के बाकी सदस्यों की तलाश जारी : रांची के सिटी एसपी अंशुमान कुमार ने बताया कि कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए और सुखदेव नगर थाना प्रभारी ममता कुमारी के नेतृत्व में गठित टीम ने यह सफलता हासिल की है। सिटी एसपी के अनुसार गिरोह के फरार चल रहे हैं बाकी सदस्यों के बारे में पुलिस को कई जानकारियां हाथ लगी है, मिली जानकारियों के आधार पर उनकी गिरफ्तारी का प्रयास किया जा रहा है।

नेताओं के बच्चे ....

लोगों की नजरों से दूर अपने निजी समय के लिए बहुत कम मौका मिल पाता है। यह एक बड़ा कारण है कि दुनिया के बहुत से देश के राजनेता अपने बच्चों को पढ़ने के लिए दूसरे देशों में भेज देते हैं। राजनेताओं के संस्मरण, मीडिया कवरेज या इंटरव्यू में उनके किशोरवय बच्चों का जिक्र आने से कई बार बच्चों के मन पर बहुत गहरा नकारात्मक असर पड़ता है। प्रोफेसर हुरेन अपनी रिपोर्ट में कहती हैं कि ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर की बेटी कैरल को हमेशा यह लगता था कि वह अपनी जिंदगी में कुछ भी अच्छा नहीं कर सकेगी, और हमेशा मार्गरेट की बेटी के तौर पर ही जानी जाएगी। इस रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि ब्रिटेन की प्रधानमंत्री ट्रस और उनकी कैबिनेट के मंत्रियों के कुल 47 बच्चे हैं। ये नेता अपनी पब्लिक लाइफ का असर बच्चों पर न पड़ने दें। उन्हें लोगों की नजरों में आने से बचाएं, जिससे वे मीडिया-सोशल मीडिया में निशाना बनने से बच सकें। विशेषकर किसी विवादित मुद्दों पर नीति बनाने के दौरान।

किशोरों को वयस्कों के....

प्रणालीगत बाधाओं में फंस गए हैं। याचिका में कहा गया है कि विनोद कटारा ने 10 सितंबर 1982 को हत्या की तारीख को किशोर होने का दावा किया था, जिसके लिए वह उम्रकैद की सजा काट रहा था। उनकी दोषसिद्धि और सजा को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के साथ-साथ उच्चतम न्यायालय ने भी बरकरार रखा था। किशोरावस्था की दलील किसी भी स्तर पर उठाई जा सकती है, इस वजह से उसने वर्ष 2021 में एक मेडिकल बोर्ड की जांच पर भरोसा किया, जिसमें कहा गया था कि 1982 में घटना के समय उनकी उम्र लगभग 15 वर्ष थी।

टेलिफोन कंपनियों को ....

वजह से उपभोक्ताओं को एक साल में 13 बार मासिक रिचार्ज कराना होता है। ट्राई के इस फैसले के बाद माना जा रहा है कि ग्राहकों की ओर से एक साल में कराए गए रिचार्ज की संख्या में कमी आएगी। ऐसा होने से ग्राहकों के एक महीने के अधिक रिचार्ज के पैसे बचेंगे।

ट्राई ने शेयर किए सर्विस प्रोवाइडर्स के प्लान : मोबाइल टैरिफ में दो कैटेगरी हैं। पहली कैटेगरी वैलिडिटी पीरियड बेस्ड है। दूसरी कैटिगरी रिन्यूअल ऑन सेम डेट पर बेस्ड है। इसे एक महीने वाला प्लान भी कहते हैं। ट्राई की तरफ से अलग-अलग कैटेगरी को लेकर टेलीकॉम सर्विस प्रोवाइडर्स की 30 दिनों की वैलिडिटी वाले प्लान की कंप्लीट जानकारी शेयर की गई है। एअरटेल की 30 दिनों की वैलिडिटी वाला प्लान 128 रुपए का है, जबकि उसी तारीख को अगले महीने रिन्यूअल वाले प्लान का टैरिफ 131 रुपए का है। रिलायंस जियो की 30 दिनों की वैलिडिटी वाला प्लान 296 रुपए का है, जबकि अगले महीने उसी तारीख को रिन्यूअल वाले प्लान का टैरिफ 259 रुपए है।

वहीं वोडाफोन-आइडिया की 30 दिनों की वैलिडिटी वाला प्लान 137 रुपए का है, जबकि अगले महीने उसी तारीख को रिन्यू होने वाला प्लान 141 रुपए का है। इसके अलावा बीएसएनएल का 30 दिनों का प्लान 199 रुपए का है, जबकि एक महीने की वैलिडिटी वाला प्लान 229 रुपए का है। एमटीएनएल का 30 दिनों वाला प्लान 151 रुपए का है, जबकि एक महीने यानी अगले महीने सेम डेट रिन्यूअल वाला प्लान 97 रुपए का है।ट्राई ने यह भी बताया है कि बीते वर्ष नवंबर 2021 के अंत तक मोबाइल कस्टमर्स की संख्या बढ़कर 119 करोड़ हो गई है।

फर्जी पैन कार्ड...

कर आपके ही नाम पर बैंक खाते खोल कर ठगी की वारदातों को अंजाम दिया जा रहा है।रांची पुलिस ने एक ऐसे ही गिरोह का खुलासा किया है जो आम लोगो के आधार - पैन का डेटा चोरी कर फर्जी आधार और पैन बनाने का गोरख धंधा कर रहे थे। इस मामले में रांची की लालपुर पुलिस ने बिहार के जहानाबाद के रहने वाले नितिन मौर्य और आदर्श कुमार को गिरफ्तार किया है। दोनों के पास से विभिन्न नामों पर बनाए गए 11 आधार कार्ड , पैन कार्ड, छह मोबाइल , लैपटॉप कई सिम कार्ड और फर्जी दस्तावेजों के आधार पर खोले गए बैंकों के पास बुक बरामद किए गए हैं।

कैसे आए गिरफ्त में जालसाज : रांची के सिटी डीएसपी दीपक कुमार ने बताया कि लालपुर थाना क्षेत्र के हरिओम टावर स्थित एयरटेल कंपनी से लालपुर पुलिस को सूचना दी गई कि उनके स्टोर पर दो लोग आए हुए हैं और फर्जी आधार कार्ड देकर सिम लेने की कोशिश कर रहे हैं। मामले की जानकारी मिलते ही लालपुर पुलिस की टीम ने तुरंत एयरटेल स्टोर पहुंचकर नितिन और आदर्श को धर दबोचा।

फर्जी आधार कार्ड देकर लिया कमरा : पूछताछ में दोनों ने बताया कि वे लोग लालपुर इलाके में एक लॉज में कमरा लेकर पिछले दो महीनों से रांची में रह रहे थे। लॉज में ठहरने के लिए भी दोनों जालसाजों ने फर्जी आधार कार्ड का प्रयोग किया था। लॉज में रहकर ही वे लोगों का डाटा चुरा कर आधार और पैन कार्ड तैयार किया करते थे। आधार और पैन कार्ड में नाम और पता बिल्कुल ओरिजिनल रहता था केवल तस्वीर बदल दी जाती थी।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

" Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट

Facilities

- आरसीटी
- पायरिया का ईलाज
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- स्माईल डिजाइन
- इनविजिवल क्लिप
- दंत रोपण
- फिक्स दाँत लगाना
- अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER

SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

न्यूज गैलरी

दुबई में भव्य हिंदू मंदिर का निर्माण, देखने को उमड़े लोग

दुबई (एजेंसी)। दुबई के जेबेल अली के वर्शिप विलेज में भव्य हिंदू मंदिर का निर्माण कराया गया है। इसकी पहली झलक पाने के लिए रोजाना हजारों लोग पहुंच रहे हैं। इसी महीने की शुरूआत में इसे आगंतुकों के लिए खोला गया है। अधिकृत रूप से इस मंदिर को पांच अक्टूबर को खोला जाएगा। यहां सभी धर्मों के लोगों को आने की अनुमति होगी। गल्फ न्यूज के अनुसार यहां हिंदू पूजा कर सकेंगे। अन्य धर्मों के दूसरे आगंतुकों को 16 देव प्रतिमाओं एवं भीतरी सज्जा देखने की अनुमति होगी। मंदिर प्रबंधन ने एक सितंबर को अपनी वेबसाइट के माध्यम से क्यूआर कोड आधारित प्रवेश का समय बुक कराने वाली प्रणाली सक्रिय की है। सप्ताहांत के दिनों में यहां तिल रखने की जगह नहीं होती। भीड़ प्रबंधन के लिए क्यूआर कोड से प्रवेश नियंत्रित रखने और शारीरिक दूरी का पालन करना सुनिश्चित किया गया है। मंदिर सुबह 6:30 बजे से रात आठ बजे तक खुला रहता है। खास बात है कि अक्टूबर के अंत तक सप्ताहांत का कोई भी दिन खाली नहीं हैं। अक्टूबर के अंत तक बुकिंग प्रणाली काम करेगी। इसके बाद लोग मंदिर खुले रहने के दौरान आने-जाने के लिए स्वतंत्र रहेंगे। इस समय भारत से पहुंचे 14 पंडितों का समूह यहां वेद पाठ कर रहा है।

शोपियां में ग्रेनेड विस्फोट तीन स्थानीय लोग घायल

शोपियां (एजेंसी)। शोपियां जिले के हेफ शीरमाल इलाके में मंगलवार को हुए एक ग्रेनेड विस्फोट में तीन स्थानीय लोग घायल हो गए हैं। घायलों की पहचान किशोर यावर अहमद, बिलाल अहमद कुमार और किफायत अहमद के रूप में की गई है। यह विस्फोट हेफ शीरमाल इलाके में उस जगह पर हुआ, जहां सोमवार को सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई थी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ स्थल पर आतंकियों द्वारा फेंका गया एक ग्रेनेड बिना फटे रह गया था। मंगलवार को तीन स्थानीय लोगों ने इस बिना फटे ग्रेनेड के साथ छेड़खानी की, जिससे उसमें विस्फोट हो गया। इस विस्फोट में उपरोक्त तीनों लोग घायल हो गए। तीनों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां पर इनका उपचार जारी है।

जेपी नड्डा 18 सितंबर से हिमाचल प्रदेश के दौरे पर

शिमला (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा 18 सितंबर से हिमाचल प्रदेश दौरे पर आयेंगे। उन्होंने कहा कि श्री नड्डा के दौरे का कार्यक्रम को भी अंतिम रूप दे दिया है। यह जानकारी भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने आज यहां दी। उन्होंने कहा कि 18 सितंबर को शिमला जिला में, 19 हमीरपुर जिला में, 20 को मंडी जिला और 21 सितंबर को कांगड़ा जिला जायेंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने की बड़ी टिप्पणी, कहा-

चुनाव लड़ने का हक मौलिक अधिकार नहीं

नयी दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव लड़ने के अधिकार पर एक बड़ी टिप्पणी की है। सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने कहा कि चुनाव लड़ने का अधिकार न तो मौलिक अधिकार है और ना ही सामान्य कानून बल्कि यह कानून द्वारा दिया गया अधिकार है। इस टिप्पणी के साथ ही सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस हेमंत गुप्ता और जस्टिस सुधांशु धूलिया की पीठ ने विश्वनाथ प्रताप सिंह द्वारा दायर की गई विशेष अनुमति याचिका को खारिज कर दिया। इस दौरान पीठ ने कहा कि कोई व्यक्ति यह दावा नहीं कर सकता है कि उसे चुनाव लड़ने का अधिकार है। जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 के साथ चुनाव आचरण नियम, 1961 में भी नामांकन फॉर्म भरते समय उम्मीदवार के नाम को प्रस्तावित करने की व्यवस्था है। अदालत ने कहा कि कोई व्यक्ति

इस शर्त को अपने मौलिक अधिकारों का उल्लंघन नहीं बता सकता।

दरअसल, याचिकाकर्ता विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनी याचिका में कहा कि 21 जून 2022 से 1 अगस्त 2022 तक सेवानिवृत्त होने वाले सदस्यों की सीटों को भरने के लिए 12 मई, 2022 को राज्यसभा के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी की गई थी और नामांकन जमा करने की अंतिम तिथि 31 मई थी। याचिकाकर्ता ने कहा कि इस चुनाव के लिए उन्होंने नामांकन पत्र दाखिल किया था, हालांकि उनके नाम का प्रस्ताव करने वाले उचित प्रस्तावक के बिना नामांकन दाखिल करने की अनुमति उन्हें नहीं मिली थी। इस मामले में उन्होंने भारतीय चुनाव आयोग की अधिसूचना के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की थी, जिसमें प्रस्तावक होने की अनिवार्यता दी गई थी। मामले में उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट में कहा था कि उनके भाषण और अभिव्यक्ति के मौलिक अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के उनके अधिकार का उल्लंघन किया गया था। हालांकि हाई कोर्ट ने उनके इस तर्क को खारिज कर दिया था। इसके बाद विश्वनाथ प्रताप सिंह ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। सुप्रीम कोर्ट में उन्होंने दिल्ली उच्च न्यायालय के 10 जून के आदेश को चुनौती देते हुए एक याचिका दाखिल की। इसी याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता और न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया की पीठ इसे खारिज कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने शीर्ष अपने आदेश में कहा कि दिल्ली उच्च न्यायालय के समक्ष दाखिल रिट याचिका पूरी तरह से गलत थी और वर्तमान विशेष अनुमति याचिका भी गलत है। चुनाव लड़ने का अधिकार न तो मौलिक अधिकार है और न ही सामान्य कानून। यह एक कानून द्वारा प्रदत्त अधिकार है। इस दौरान पीठ ने सुप्रीम कोर्ट के पिछले फैसलों का भी हवाला देते हुए कहा कि याचिकाकर्ता को संसद द्वारा बनाए गए कानून के अनुसार राज्यसभा के लिए चुनाव लड़ने का कोई अधिकार नहीं है।

अगले साल 9-10 सितंबर को नयी दिल्ली में आयोजित होगा जी-20 शिखर सम्मेलन

नयी दिल्ली (एजेंसी)। भारत इस साल 1 दिसंबर से एक वर्ष के लिए जी-20 का अध्यक्ष बनने जा रहा है। इस दौरान भारत देशभर में 200 से अधिक जी-20 बैठकों की मेजबानी करेगा। इसमें सबसे महत्वपूर्ण राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों के स्तर पर होने वाला जी-20 नेताओं का शिखर सम्मेलन है। इसे अगले साल 9 और 10 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। विदेश मंत्रालय ने इसकी जानकारी देते हुए कहा कि देश जी-20 प्राथमिकताओं को मजबूत करने की प्रक्रिया में हैं। जी-20 या ग्रुप ऑफ ट्वेंटी दुनिया की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का एक अंतर-सरकारी मंच है। इसके सदस्य 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूके, यूएसए) और यूरोपीय संघ (ईयू) हैं। भारत वर्तमान में जी-20 ट्रोइका (वर्तमान, पिछला और आने वाले जी-20 के अध्यक्ष देश) का हिस्सा है जिसके अन्य दो देश इंडोनेशिया और इटली हैं। भारत की अध्यक्षता के दौरान इंडोनेशिया और ब्राजील इस तिकड़ी का निर्माण करेंगे। यह पहली बार होगा जब ट्रोइका में तीन विकासशील देश और उभरती अर्थव्यवस्थाएं शामिल होंगी।

सिकंदराबाद में होटल में आग लगने से आठ की मौत, 13 घायल

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के सिकंदराबाद में रूबी रतन होटल में कल देररात आग लगने से आठ लोगों के मौत हो गई और अन्य 13 घायल हो गए। मृतकों की संख्या बढ़ने की पुलिस ने आशंका जताई है। पुलिस का कहना है कि अग्निकांड की जांच की जा रही है। पुलिस आयुक्त सीवी आनंद ने अनुमान जताया है कि आग होटल के बेसमेंट में रूबी इलेक्ट्रिक व्हीकल के शोरूम में एक बाइक की बैटरी के फटने से लगी। इसके बाद आग पूरी बिल्डिंग में फैल गई। पुलिस के अनुसार जब आ लगी तब वहां करीब 25 पर्यटक थे। आग की लपटों में घिरने और धुआं के कारण आठ लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक महिला भी है। करीब 13 लोग घायल हो गए हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक कुछ लोगों ने होटल की खिड़की से नीचे कूदकर जान बचाने की कोशिश में घायल हो गए। आसपास के लोगों ने सबसे पहले मौके पर पहुंचकर कई लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। इस होटल में 25 कमरे हैं। 12 से अधिक कमरों में पर्यटक ठहरे थे। दमकल विभाग की गाड़ियों ने आग बुझाते हुए करीब 15 लोगों को बचाया। तीन मृतकों की पहचान हो गई है। उनमें चेन्नई के सीतारमण, बिहार के वीरेंद्र कुमार और विजयवाड़ा के हरीश कुमार हैं। घायलों को हैदराबाद के सरकारी गांधी अस्पताल, यशोदा अस्पताल और अन्य अस्पतालों में भर्ती कराया गया है।

गया में एक ही परिवार के छह लोगों पर हमला, दो की मौत, चार घायल

गया (एजेंसी)। बिहार में गया शहर के रामपुर थाना क्षेत्र में मंगलवार की सुबह एक व्यक्ति ने अपने ससुराल पक्ष के छह लोगों पर लोहे के रॉड से हमला कर दिया, जिसमें दो लोगों की मौत हो गयी तथा चार अन्य घायल हो गये। रामपुर थानाध्यक्ष रवि कुमार ने यहां बताया कि जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के मानपुर पोखरा मुहल्ला निवासी प्रभु मांझी कई महीनों से अपने ससुराल भुई टोली में रह रहा था। प्रभु मांझी ने आज सुबह ससुराल पक्ष के छह लोगों पर लोहे के रॉड से हमला कर दिया। इस घटना में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गयी, जबकि चार अन्य घायल हो गये। मृतकों में 40 वर्षीय कांति देवी एवं 08 वर्षीय चिंटू कुमार शामिल है। घायलों को अनुग्रह नारायण अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद दो लोगों को बेहतर इलाज के लिये पटना रेफर कर दिया गया है। श्री कुमार ने बताया कि इस मामले में आरोपी प्रभु मांझी को गिरफ्तार कर लिया गया है। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिये भेज दिया गया है। घटना के कारणों का तत्काल पता नहीं चल सका है। मामले की छानबीन की जा रही है।

शाह ने गुजरात में 519 विकास परियोजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

नयी दिल्ली (एजेंसी)। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने मंगलवार को गुजरात में 519 विकास योजनाओं और परियोजनाओं का उद्घाटन और लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह गुजरात के विकास की कभी ना रुकने वाली यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। शाह ने गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल के कार्यकाल का सफलतापूर्ण एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 1180 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास योजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। उन्होंने कहा कि मंगलवार को नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विगत 20 वर्षों में गुजरात की जनता के विश्वास और सरकार द्वारा किए गए विकास को गति देने का भी दिन है। गुजरात में पिछले 20 साल में शिक्षा, स्वास्थ्य, जल, उर्जा, कृषि, उधोग, समाज कल्याण और पर्यटन समेत हर क्षेत्र के अंदर एक आदर्श व्यवस्था बनाने का काम हुआ है। उन्होंने कहा कि मोदी ने ने जिस परंपरा की स्थापना कि

मौजूदा मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार ने उसे चरितार्थ कर दोगुनी गति से आगे बढ़ाया है और आज जमीन पर उसके परिणाम दिखाई दे रहे हैं। शाह ने कहा कि गत 10 वर्षों में गुजरात की अर्थव्यवस्था ने 8.2 फीसदी की विकास दर हासिल की है और कोरोना काल के बावजूद श्री भूपेन्द्र पटेल ने उस विकास दर को बनाए रखा है, जो एक बहुत बड़ी सिद्धि है। पिछले आठ साल में भारत में कुल 31.3 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया, उसमें से 57 फीसदी यानि लगभग 17.7 लाख करोड़ रुपये का निवेश सिर्फ गुजरात में आया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात ने इस साल भी इस रिकॉर्ड को बरकरार रखा है।

केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा कि भूपेन्द्र पटेल ने आज वेदांता के साथ 01 लाख 40 हजार करोड़ रुपये का एक एग्रीमेन्ट किया है जो समग्र गुजरात को आत्मनिर्भर बनाने में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

शाह का केजरीवाल पर पलटवार, बोले- सपनों का व्यापार करने वालों को नहीं मिलेगी सफलता

केंद्रीय गृह मंत्री ने मंगलवार को अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी (आप) पर परोक्ष रूप से निशाना साधते हुए कहा कि जो लोग 'सपने बेचते' हैं वे गुजरात में कभी नहीं जीतेंगे। गुजरात में इस साल दिसंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं। डिजिटल तरीके से एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शाह ने मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) दो-तिहाई बहुमत के साथ गुजरात में एक बार फिर सरकार बनाएगी। शाह ने भूपेंद्र पटेल के मुख्यमंत्री पद पर एक वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में गांधीनगर में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा, सपने बेचने वालों को गुजरात में कभी चुनावी सफलता नहीं मिलेगी। मैं गुजरात के लोगों को जानता हूं। सपने बेचने वालों को गुजरात में कभी सफलता नहीं मिल सकती क्योंकि जनता उन्हीं का समर्थन करती है जो काम करने में विश्वास रखते हैं। इसलिए लोग भाजपा के साथ हैं। भाजपा शानदार जीत हासिल करेगी।" शाह ने कहा, मैं भूपेंद्रभाई से कहना चाहता हूं कि गुजरात की जनता भाजपा के साथ है। मैं बहुत स्पष्ट रूप से देख सकता हूं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आपके नेतृत्व में भाजपा आगामी चुनावों में एक बार फिर दो-तिहाई बहुमत के साथ सरकार बनाएगी।"

देश को अगले तीन वर्षों में 25 लाख प्रशिक्षकों को तैयार करने की जरूरत: धर्मेन्द्र

नयी दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय शिक्षा एवं कौशल विकास मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि अगले तीन वर्षों में 25 लाख प्रशिक्षकों को तैयार करने की जरूरत है। कुशल प्रशिक्षकों को तैयार करने के हमारे समस्त प्रयास एमएसडीई के तहत प्रशिक्षण संस्थानों में केंद्रित होंगे जिसमें ये प्रशिक्षक अगली पीढ़ी की श्रमशक्ति के विकास में अहम भूमिका निभायेंगे। श्री प्रधान ने मंगलवार को कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) के तहत 'री-इमेजिनेशन ऑफ ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स' (प्रशिक्षण संस्थानों की पुनर्कल्पना) पर आयोजित गहन विचार-सत्र में हिस्सा लिया। इस अवसर पर कौशल विकास एवं उद्यमशीलता राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर, एमएसडीई के सचिव राजेश अग्रवाल तथा कैपेसिटी बिल्डिंग कमीशन,

प्रशिक्षण महानिदेशालय (डीजीटी), राष्ट्रीय कौशल प्रशिक्षण संस्थान (एनएसटीआई), राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (एनआईईएसबीयूडी) तथा कौशल मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। श्री प्रधान ने कहा कि प्रौद्योगिकी तेजी से हमारी दुनिया को बदल रही है। शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक, कृषि से वित्त तक, हर सेक्टर प्रौद्योगिकी द्वारा प्रेरित अभूतपूर्व विकास का गवाह बन रहा है। इससे नये अवसर और नये कौशल परिदृश्य की आवश्यकता पैदा हो रही है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी में एक जीवन्त श्रमशक्ति के विकास के लिये प्रशिक्षकों की क्षमतायें बढ़ाना बहुत महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षण संस्थानों को कौशल इको-सिस्टम को मजबूत बनाने के उद्देश्य से समग्र और भावी रणनीति के लिये खुद को दोबारा चाक-चौबंद तथा दुरुस्त करने पर ध्यान देना होगा। श्री प्रधान ने देश को दुनिया की कौशल राजधानी बनाने तथा कौशल इको-सिस्टम को चाक-चौबंद करने की दिशा में नयी सोच के साथ अधिक नवोन्मेष, संस्थागत सुधारों, नये विचारों, अंतरराष्ट्रीय सहयोगों और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल का आह्वान किया।

क्या उप्र. के फूलपुर या प्रयागराज लोस सीट से चुनाव लड़ सकते हैं नीतीश?

- कृष्णमोहन सिंह

नयी दिल्ली। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार यदि उप्र. के फूलपुर या प्रयागराज (इलाहाबाद) संसदीय सीट से 2024 में लोकसभा चुनाव मैदान में उतर जायें तो? इस बारे में जदयू के एक नेता का कहना है कि नीतीश कुमार न केवल बिहार बल्कि देश के भी बड़े नेता हैं। उत्तर प्रदेश में भी उनकी साख व धाक बढ़ी है। वहां की जनता चाहती है कि नीतीश कुमार यहां से चुनाव लड़ें। क्योंकि इसका संदेश देश भर में जायेगा। हाल -हाल तक जदयू का भाजपा से गठबंधन होने की वजह जदयू उप्र. में अपने फैलाव के बारे में गंभीरता से नहीं सोचती थी। अब चूंकि नीतीश ने कदम बढ़ा दिया है तो उप्र. की जनता को भी उनसे उम्मीद बढ़ गई है। उप्र. के लोग कहने लगे हैं कि नीतीश उप्र. जरूर आवें। इससे पूरा राजनीतिक माहौल बदल जाएगा। जिसका संदेश देशभर में जाएगा। इस सबके चलते जदयू ने उप्र. में संभावनाओं व रणनीतिक पोजिशनिंग के मद्देनजर विचार करना शुरू कर दिया है। एक पूर्व केन्द्रीय मंत्री का

कहना है कि बिहार में लोकसभा की 40 सीटें हैं, जबकि उप्र. में 80 सीटें हैं। इसलिए उप्र. पर फोकस करना ज्यादा माहौल बनाने वाला व लाभ वाला रहेगा। उप्र. में जिसकी सीटें ज्यादा आएंगी उसका पलड़ा भारी रहेगा। इस बारे में एक अन्य नेता कहा कहना है कि यूँ ही नहीं साहब गुजरात से उप्र. आये और वाराणसी से चुनाव लड़े। गुजरात में तो लोकसभा की 26 सीटें ही हैं। उससे बात नहीं बनती, भाव व धमक नहीं बनता। इसलिए देश के सबसे ज्यादा लोकसभा सीटों वाले राज्य उप्र. को चुना गया, और उसमें भी वाराणसी को चुनाव लड़ने के लिए हर तरह से बेहतर पाया गया। जबकि वाराणसी में साहब की जाति के मतदाता मामूली हैं। राज्य में लगभग साढ़े तीन प्रतिशत हैं। जबकि जिस कुर्मी जाति के नीतीश कुमार हैं, उसकी उप्र. में जनसंख्या लगभग 7.5 प्रतिशत है। फूलपुर व प्रयाग राज में कुर्मी मतदाताओं की संख्या ज्यादा है। वहां यादव व कोइरी व अन्य पिछड़ी जाति वाले भी अच्छी संख्या में हैं। इलाहाबाद से सटे फूलपुर से देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू चुनाव लड़ते थे। यदि इस सीट से नीतीश कुमार लोकसभा चुनाव लड़ेंगे, तो उनको हराने के लिए भाजपा सब कुछ झोंक देगी। फिर भी तब तक न केवल बिहार व उप्र. में बल्कि देश में कुर्मी के सबसे बड़े नेता होने का माहौल बन जाने के चलते नीतीश को हराना मुश्किल होगा। उनको सपा ,कांग्रेस व कुछ अन्य दलों का भी समर्थन मिलेगा। ऐसे में उनके जीत की संभावना ज्यादा रहेगी। यहाँ से लड़ने से बिहार उप्र. सहित अन्य राज्यों में भी जदयू, सपा, कांग्रेस व अन्य कुछ दलों के गठबंधन का माहौल बन जायेगा। इसके चलते इस गठबंधन को अच्छी संख्या में सीटें मिल सकती हैं।

सरकार सस्ती, गुणवत्ता युक्त दवा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध : मांडविया

नयी दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मांडविया ने सभी को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवा उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए मंगलवार को कहा कि किसी भी दवा के दाम अनाप-शनाप बढ़ने से रोकने की व्यवस्था की जा रही है। श्री मांडविया ने यहां 'राष्ट्रीय आवश्यक औषधि सूची' जारी करते हुए कहा कि इस सूची में शामिल किसी भी दवा की कीमत संबंधित कंपनी अपने आप या मनमर्जी से नहीं बढ़ा सकती। सूची में शामिल सभी दवाओं की कीमत राष्ट्रीय औषधि मूल्य निर्धारण प्राधिकरण करेगा। सूची में शामिल सभी दवाओं की कीमतें थोक मूल्य सूचकांक के आधार पर तय होंगी। प्राधिकरण इन दवाओं का अधिकतम मूल्य तय करेगा।

सूची में शामिल सभी दवाओं की कीमतें जल्द संशोधित होंगी। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री डॉ भारती प्रवीण पवार और मंत्रालय में सचिव राजेश भूषण तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। राष्ट्रीय आवश्यक दवा सूची में 384 मूल दवा शामिल की गई है जिनके आधार पर 1,000 से अधिक दवाइयां बनाए जा सकती हैं। पिछली सूची वर्ष 2015 में जारी की गई थी। मौजूदा सूची को तैयार करने में 350 से ज्यादा विशेषज्ञों के साथ 140 से अधिक बैठकर की गई हैं। श्री मांडविया ने कहा, सरकार देश में सभी को और जब, जहां जरूरत हो, उसी समय सस्ती और गुणवत्ता युक्त दवा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सरकार देश में स्वास्थ्य का मजबूत ढांचा तैयार कर रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र और प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि 15 लाख की आबादी पर आरोग्य केंद्र बनाए जा रहे हैं।

एक लाख टीबी मरीजों को गोद लेगा फिक्की

उद्योग संगठन भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ- (फिक्की) 'टीबी मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत एक लाख टीबी मरीजों को गोद लेगा और उनके इलाज की व्यवस्था करेगा। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मांडविया के साथ फिक्की के एक प्रतिनिधिमंडल ने कल एक बैठक के दौरान यह आश्वासन दिया। फिक्की से जुड़े उद्योगपति और उद्योग संस्थान निःक्षय मित्र बनेंगे और टीबी रोगी की देखभाल करेंगे। सरकार ने भारत को टीबी मुक्त करने के लिए वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त भारत अभियान शुरू किया है। इस अभियान में शामिल होने के लिए एक पोर्टल निःक्षय शुरू किया गया है। इसमें टीबी मुक्त भारत अभियान में सहयोग करने वाले व्यक्ति और संस्थान जुड़ सकते हैं।